स्मार्ट कौन?

मंगल आशीर्वाद
समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण
सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य
108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

रचयित्री
परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

-: प्रकाशक :-
श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि॰)
Website : www.jainswastisandesh.com
Link to Facebook : swastibhushanmataji

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव, गणिनी आर्यिका रत्न 105
श्री स्वस्ति भूषण माता जी संसघ का 27 वाँ पावन वर्षायोग 2022 अतिशय क्षेत्र
पद्मपुरा (बाड़ा) के अन्तर्गत श्रावक संस्कार शिविर के पावन प्रसंग पर प्रकाशित

कृति : स्मार्ट कौन?
प्रथम संस्करण : 2100 प्रतियाँ
प्रकाशन वर्ष : 2022
न्यौछावर राशि : 50.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)

प्रकाशक
श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

पुर्ण्याजक परिवार :
श्री ओम प्रकाश जी जैन एवं श्रीमती मिनाक्षी जैन
श्री अर्पित जैन, श्री रोहित जैन, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

प्राप्ति स्थान :

1. **स्वराज कुमार जैन, अध्यक्ष श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**
   दूरभाष : 0129-4144329, 9868345768
2. **राहुल जैन, सचिव श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**
   दूरभाष : 07906062500, 09212515167
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री आदिनाथ सेवा संस्थान**
   श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य-प्रदेश)
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 9784853787

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली)
मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज 'छाणी' (उत्तर)

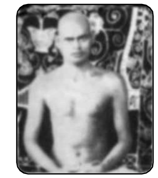

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

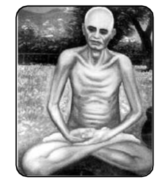

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

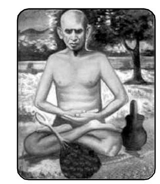

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

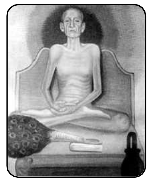

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

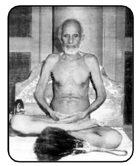

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

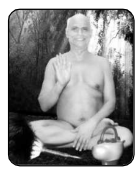

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर
समाधिमरण – फाल्गुन सुदी तृतीया वि.सं. 2069 (14.03.2013)

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी) वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत
दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

नई दिशा, नई प्रेरणा देने वाली गुरुमाँ

आज कि इस भौतिकता की चकाचोंध में हर व्यक्ति अंधा सा प्रतीत होता जा रहा है, वह अपने बचपन, जवानी और बुढ़ापे को सार्थक नहीं कर पा रहा, उसने जैसे अपने जीवन जीने की कला को ही नष्ट सा कर दिया है। जीवन जीने का एक बहुत अच्छा उदाहरण हर व्यक्ति के जीवन में अवश्य होना चाहिए। ऐसे ही बहुत से उदाहरण पूज्य माता जी ने आपके हाथों में इस पुस्तक मे दिये है। पूज्य माता जी ने कहा है कि सूर्य उगता है, चढ़ता है, ढल जाता है। फूल कली बनती है, खिलती है, मुरझती है और गिर जाती है। ठीक मनुष्य इसी तरह जन्म लेता है, जवान होता है, बूढ़ा होता है और मर जाता है। ये प्रकृति का नियम है, इस पर चिंतन और मनन करना चाहिए। जी हां पूज्या माता जी ने ठीक ही तो कहा है, अगर हम इस कृति में दिये सभी ही नहीं बल्कि कुछ उदाहरण को भी अपनायेंगे, तो निश्चित ही हम अपने इस क्षण भंगुर जीवन को बहतर बना पायेगे। पूज्य माता जी द्वारा लिखी गई एक-एक लाइन हमें एक नई सीख, एक नई प्रेरणा को एक नई दिशा प्रदान करती है।

माता श्री ने अपने मन मे उत्पन्न होने वाले अच्छे-अच्छे भावों को इस कृति में संजोया है। जैसे प्रकृति ने सबको एक सा नहीं बनाया, मृत्यु नहीं होती तो क्या होता, मन की कीमत, सांसारिक सुख में दुखः साथ है, आत्मा पावर हाऊस है, परिवार ने क्या नहीं दिया आपको, पाप पुण्य बन जाता है और पुण्य पाप आदि ऐसे बहुत से प्रवचन जो की बहुचर्चित बने हुए हैं, आप भी उन प्रवचन को पढ़कर अपने जीवन में एक नया आयाम स्थापित कर सकेंगे, जब आप इस पुस्तक को एक बार पढ़ेगे तो मैं कहती हूँ निश्चित

ही आप उसे अपने जीवन की यथार्थता समझेगे, ऐसा महसूस करेगे मानों यह मेरे स्वयं के जीवन की ही घटना हो। पूज्य माता जी द्वारा लिखित 85 कृतियों में से एक यह कृति जो आपको अवश्य ही पढ़कर अपने जीवन में उतारनी चाहिए।

सूरज के दर्शन से जलज खिलता है।
पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है॥
स्मरण गुरू का बड़ा आलौकिक है।
बिना प्रयत्न सब मिलता है।।

ऐसी भावना भाते हुए पूज्या गुरू मां को त्रयबार वंदामि, वंदामि, वंदामि।

शालू दीदी
(संघस्थ)

प्रस्तावना

संसार में न्याय और नीति के पथ पर चलने के लिये साहित्य का अध्ययन अत्यावश्यक है। उन साहित्यों में भी वे साहित्य, जो पाठक को सीधे प्रभावित करते हैं, उनकी उपयोगिता समाज में अधिक होती है। ऐसे साहित्य की श्रेणी में कथा साहित्य पाठकों को अतिप्रिय रहा है। कथा साहित्य के माध्यम से पाठकगण सिद्धान्तों को सरलता से अवगाहित कर लेते है तथा जब-जब वह कथा स्मरण में आती है, तब-तब कथा से प्रतिपादित सिद्धान्त भी स्मरण आता रहता है।

पाठकों की दृष्टि से तीन प्रकार के पाठक समाज में विद्यमान है, जिनमें मंदबुद्धि मध्यमबुद्धि तीव्रबुद्धि इन तीनों प्रकार के पाठकों के लिये कथा साहित्य आधार है। कथा के आधार पर सिद्धान्त तक पहुँच सकते हैं सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने के लिये तीर्थंकरों से लेकर वर्तमान प्रवचनकार भी कथा के माध्यम से अपने प्रवचनों की प्रस्तुति करते हैं। ऐसी ही रोचक कथाएँ प्रवचनों में प्रभाव डालती हैं, उन प्रवचनों से प्रभावित होकर श्रोतागणों का जीवन भी प्रभावित होता है। वे प्रवचनों से शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन में उन शिक्षाओं को चरितार्थ करते हैं। प्राचीन समय के ऐसे कई उदाहरण हैं, जिनमें गुरुओं के प्रवचन से प्रभावित होकर लाखों लोगों ने अपना कल्याण किया। आचार्य लोहाचार्य महाराज अपने प्रवचनों के माध्यम से प्रतिदिन 1000 लोगों को जिनमार्ग में लगाते थे। इसी परम्परा से वर्तमान तक हजारों-लाखों साधुओं ने लाखों लोगों को आत्मकल्याण के मार्ग में अग्रेषित किया है। वर्तमान में आचार्य शान्ति सागर जी महाराज की छाणी परम्परा में लाखों लोगों ने आत्मकल्याण किया। यह आत्मकल्याण का मार्ग गुरुओं का प्रवचन और चारित्र रहा है।

इसी श्रृंखला में आचार्य सन्मति सागर जी महाराज एवं आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज की सुयोग्य शिष्या गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माता जी के प्रवचनों से लाखों लोग जैनधर्म की प्रभावना में आग बढ़ रहे हैं। लाखों

लोगों के समक्ष पूज्य माता जी के प्रवचन सदैव रहें, इसके लिये माता जी के प्रवचनों को लिपिबद्ध करके पुस्तकाकार रूप दिया जा रहा है, जो प्रशंसनीय एवं श्लांघनीय है।

प्रस्तुत पुस्तक के आद्योपान्त अध्ययन से मन आह्लादित हुआ कि यह प्रवचनांश भक्तों के जीवन को पथप्रदर्शित करने के लिये अत्यन्त लाभदायक हैं। इस कृति की विषय वस्तु उन सभी लोगों के लिये लाभदायक है, जो इस प्रकार से विचार करते हैं कि मनुष्य जीवन प्राप्त करने के पश्चात् क्या करें अथवा क्या न करें? कैसे जीवन जिये की हिंसा कम हो और पुण्य अधिक प्राप्त हो? मनुष्य की यह सोच स्वाभाविक है, क्योंकि मन सुबह से रात्रि तक केवल पाप की क्रियाएँ करता है, उसके लिये पुण्य के अवसर कैसे प्राप्त हो सकते हैं? अथवा जो क्रियाएँ वह करता है, क्या उसे पुण्य में भी परिवर्तित किया जा सकता है? रसोई के भोजन का भी पुण्य की क्रिया में परिवर्तित करना संभव है? इस प्रकार की क्रियाओं के लिये पूज्य माता जी के प्रवचन अत्यन्त उपयोगी हैं, उन्होंने इसके उत्तर के लिये " रसोई में शुद्धि कैसे? " शीर्षक से पाठकों के मन को परिवर्तित किया है इसी प्रकार के अन्य विषय जो मानसिक, वाचनिक, कायिक शांति प्रदान कर सकते हैं। भौतिक संसाधनों से सुख-दुःख कैसे प्राप्त होता है? मन की स्थिति परिवर्तित करने से परिस्थितियाँ परिवर्तित कैसे की जा सकती है। इसे समझाने के लिये "परिस्थिति नहीं मनःस्थिति बदलो" विषय से प्रस्तुत किया है। इस प्रकार से पाठकों के मनःस्थिति पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है जिन कारणों से व्यक्ति का मन सदा व्यथित रहता था, वहीं कारण मन को कैसे प्रसन्न कर सकते है। यह यदि व्यक्ति सीख गया, तो उसका जीवन सदैव के लिये धार्मिक हो जाएगा।

मनुष्य के जीवन में ऐसे कई कारण उत्पन्न होते हैं, जिनके कारण वह क्रोध
ा, मान, माया, लोभ स्वभाविक रूप से कर लेता है, यदि ऐसी परिस्थिति में थोडा धार्मिक रूप से विचार किया जाए, तो जल्द ही उस परिस्थिति से बाहर निकल सकते हैं और संभावित पाप से बचाव भी हो सकता है इस कृति को पढ़ने के पश्चात् पाठकों के जीवन में परिवर्तन, तो होगा ही, साथ ही चारित्र के प्रति उनका लगाव तथा देव-शास्त्र-गुरु के प्रति श्रद्धाभाव में वृद्धि होगी, ऐसी आशा करता हूँ।

डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन, जयपुर

अनुक्रम

स्मार्ट कौन?	12
ज्योतिष भगवान महावीर की वाणी है	17
कोरोना में दशलक्षण कैसे मनायें	18
प्रकृति से शिक्षा लें	21
वर्तमान में किये कार्य का प्रभाव भूत और भविष्य दोनों पर पड़ता है	23
तुम्हारा शत्रु नहीं फिर भी दुःख देता है तुम्हारा मित्र नहीं फिर भी सुख देता है	25
मन की चंचलता वरदान है, इसे अभिशाप न बनायें	28
मन वचन काय का आत्मा पर प्रभाव	30
मृत्यु से ज्यादा कष्ट अपमान	32
आत्मा की चिंता क्यों करें?	36
प्रभाव	38
दुःख और चुनौती सोई शक्ति जाग्रत करता है	40
संसार को दर्शक बनकर नहीं दृष्टा बनकर देखो	42
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मुक्ति का साधन	44
ज्ञान-अभ्यास	48
संपूर्ण ज्ञान को, शब्दों की आवश्यकता नहीं	50
मंजिल सवार की है, घोड़े की नहीं	53
मन दो मुहा है	55
भगवान आदेश नहीं, उपदेश देते हैं	58
ध्यान	60
परिस्थिति नहीं, मनःस्थिति बदलो	63
अर्थी के पीछे भीड़ क्यों?	70

देश में शान्तिधारा की प्रथम प्रभावना जहाजपुर से	75
बुढ़ापा वरदान है, अभिशाप नहीं	82
सोने की चैन अनेकों के पास होगी, पर चैन के साथ सोना सबके नसीब में नहीं है	89
यथा राजा तथा प्रजा	105
सुख का रास्ता अलग है, शान्ति का रास्ता अलग है	108
वर्तमान की शिक्षा सप्त व्यसन सिखाती है	111
सावन में बने पावन, भादों में बने भद्र	113
बंधन से मिलेगी स्वतंत्रता	114
शरीर को सुखी, मशीन कर सकती है, पर आत्मा को सुखी करने की कोई मशीन नहीं है	116
पक्षियों से हम क्या सीखें	119
बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया पर कोरोना ने डुबायी पैसे की नैया	123
भगवान के माता पिता कैसे हों?	125
एक बाल का अंतर मिटाने...	126
परिवार की सरकार	128
ऐसी शोभा यात्रा आज तक कहीं और कभी नहीं निकली	130
परिवार का सुख, गृहस्थ के जीवन में	133
अतिशयकारी भक्तामर	134
णमोकार मंत्र में शक्ति क्यों होती है?	138
अध्यात्म की आवश्यकता	140
जन्म दिन, जन्म जयंति, जन्म कल्याणक में अंतर	142
प्रवचन दवाई है	143
दीपक की लौ से शिक्षा	147
खाने की दवाई, लगाने की दवाई	149
दर्पण जैसे बनना है	151
सुख दुख पैदा कौन करता है	153
जिसका पेट खराब, उसका दिमाग खराब मशीन को मशीन नहीं, मेहनत चाहिये	156

स्मार्ट कौन

स्मार्ट शब्द का अर्थ है, बुद्धिमान, चतुर, होशियार। पर वर्तमान समय में भारतीयों ने इसका अर्थ अलग कर दिया है। जब कोई अच्छे कपड़े पहन के, अच्छा मोबाइल हाथ में लेकर, श्रृंगार करके, अच्छी घड़ी पहन के, बढ़िया इंग्लिश बोलता है तो लोग कहते हैं, क्या स्मार्ट है। थोड़ा और आगे बढ़े अच्छे कपड़े पहनने के बाद ही स्मार्ट होने का लेबल लगा देते हैं। आज मोबाइल का नाम स्मार्ट फोन रख दिया है। स्मार्ट फोन यानी बुद्धिमान, होशियार, चतुर फोन। और लोग सोचते हैं इस फोन को लेकर हम भी स्मार्ट हो जायेंगे।

यदि अच्छे कपड़े पहनने से स्मार्ट बनते तो, कपड़े की दुकान में खड़ी डमी सबसे अच्छे कपड़े पहनती है, तो वो स्मार्ट होना चाहिये। घड़ी स्मार्ट बनाती है, वो घड़ी की दुकान स्मार्ट होगी। ये सारी चीजें स्मार्ट होने का लेबल नहीं हैं। खुद को कुछ करना न पड़े और स्मार्ट बन जायें। लोगों की सोच ने मोबाइल, कपड़े और घड़ी की कीमत बढ़ा दी। अब लोग अपनी पर्सनल क्वालिटी बढ़ाने की बजाय, वस्तुओं की क्वालिटी के द्वारा अपनी कीमत करवाना चाहते हैं। जबकि ऐसा हो ही नहीं सकता।

कुछ लोग पतले होकर स्मार्ट दिखना चाहते हैं। जिसके लिये उन्हें काफी मेहनत करनी पड़ती है। कोई जिम जा रहा है, कोई सुबह से 2 घंटे एक्सरसाइज करता है, और डाइटिंग तो हर लड़के-लड़की कर रहे हैं, भूखे घूमते रहते हैं, क्योंकि मोटे होने पर उनकी स्मार्टनेस दिखने पर फर्क पड़ता। कौन सी किताब में लिखा है कि पतले स्मार्ट होते हैं, मोटे नहीं! छोटे-छोटे बच्चों में डाइटिंग की बीमारी लग गई। छोटी सी बच्ची कहती है ''मैं दूध नहीं पिऊंगी, मैं मोटी हो जाऊंगी।'' जैसा मां करेगी, बच्ची भी करेगी। वे व्रत उपवास नहीं करतीं पर डाइटिंग कर लेती हैं। जिससे उनका शरीर सूखता जाता है। दिमाग तो तेज काम करता है पर शरीर काम करने

से मना कर देता है। फिर वे इसी बात से परेशान रहते हैं। अनेक तरह की शरीर में बीमारी हो जाती हे, चक्कर पे चक्कर आने लगते हैं। अपने हाथ से अपने पैर पर कुल्हाड़ी पटक लेते हैं।

स्मार्ट का मतलब ऐसा व्यक्तित्व जिसकी लोग प्रशंसा करें। प्रशंसा इसलिये करें कि उसके अंदर विशेष गुण है। जिसको देखकर अन्य लोगों के मन में उसके जैसे कार्य करने की भावना होती है। उसके जैसे बनने की भावना होती है। उसको कहते हैं स्मार्ट। सामने वाले के कपड़े देखकर वैसे कपड़े पहनने की भावना स्मार्ट नहीं है। ज्वैलरी और घड़ी स्मार्ट नहीं बनायेगी। दो क्षेत्र हैं लौकिक क्षेत्र और अलौकिक क्षेत्र। लौकिक क्षेत्र में किसी ने स्कूल में अच्छे अंक प्राप्त किये, तो उसे देखकर अन्य बच्चों को लगता है, मुझे भी अच्छी पढ़ाई करनी है। आईएस को देखकर आईएस बनने के भाव आना। डॉक्टर को देखकर डॉक्टर बनने का भाव आना। अच्छे नेता को देखकर नेता बनने की भावना आना। किसी को बांसुरी बजाते देखकर बांसुरी बजाने की भावना आना। गीत-संगीत की भावना करना। नृत्य करते देखकर नृत्य की भावना करना। ये कार्य लौकिक स्मार्ट बनाते हैं। बुद्धिमान बनाते हैं इंसान की कीमत बढ़ाते हैं।

अलौकिक अध्यात्मिक क्षेत्र में यदि देखा जाये तो जिन साधु संत को देखकर उनके जैसे बनने की भावना आना अर्थात् साधु संतों के ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, ध्यान को देखकर वैसा करने की भावना आती है तो साधु भी स्मार्ट है, भले ही वे सफेद कपड़े पहनते हों या आपके मुनिराज हों, जो कपड़े भी नहीं पहनते हैं। पर यदि उनका प्रभाव आप पर पड़ रहा है तो स्मार्ट हैं। यदि कपड़े पहनने से ही स्मार्ट बनते, ज्वैलरी और घड़ी पहनने से स्मार्ट बनते तो हमारे भगवान तो न कपड़े पहनते हैं, न ज्वैलरी, न घड़ी पहनते हैं। फिर अनंत काल से बुद्धिमान, ज्ञानी जीव उनके जैसे बनने का प्रयास करते हैं। और अनंत जीव उनके जैसे बनकर सुखी भी हुए हैं।

संसार में कहीं ऐसा नियम हो कि अच्छे कपड़े पहन कर सुखी होते हैं, फैशन के कपड़े पहन कर सुखी होते हैं, तो अन्य कार्यों का महत्व खतम हो जाता। कपड़े सुखी नहीं करते, दुखी करते हैं। इसलिये भगवान ने कपड़े छोड़ दिये। वर्तमान समय में ब्यूटी पार्लर में जाकर तरह-तरह के बाल बना कर स्मार्ट बनते हैं। करोड़ों का बिजनिस, बालों के द्वारा चल रहा है। और स्मार्ट दिखने का प्रयास कर रहे हैं। यदि स्मार्ट बालों से बनते तो जिनके सिर पर बाल नहीं हैं वे तो कभी स्मार्ट बन ही

नहीं पाते। और हमारे साधु तो केश नोंच करके निकाल कर फेंक देते हैं। फिर भी लोग उन्हें पूजते हैं। फिर भी उनका अनुशरण करते हैं। लोगों को स्मार्ट बनने में अपनी सोच को बदलना होगा। वरना ये संसार गलत रास्ते पर चला जायेगा।

स्मार्ट व्यक्ति सुखी व्यक्ति की श्रेणी में आयेगा दुखी व्यक्ति की श्रेणी में नहीं। क्योंकि स्मार्ट यानी बुद्धिमान होशियार है वो अपने ज्ञान और होशियारी से अपने जीवन को उत्कृष्ट बनायेगा। अपने जीवन में गुणों का बाग लगाकर जीवन को महका देगा, स्वयं सुखी होगा, औरों को भी सुखी कर देगा। स्मार्ट होकर दुखी रहे औरों को दुखी करे, वो ऐसा नहीं हो सकता। वर्तमान समय में युवा बच्चे स्मार्ट बनने के लिये अच्छे कपड़े, अच्छा मोबाइल लेते हैं और न मिलने पर माता-पिता को परेशान करते हैं। उनके कारण माता-पिता दुखी रहते हैं कि हम अपने बच्चों की इच्छा पूरी नहीं कर रहे हैं। अथवा माता-पिता बच्चों को समझाते हैं कि बेटे, इन सबसे कुछ नहीं होता, तो बच्चे उल्टा माता-पिता को दोस्तों का नाम लेकर, उल्टा बहस करते हैं जिससे घर में कलेश का वातावरण बन जाता है।

अथवा वर्तमान समय में युवा पीढ़ी स्मार्ट बनने के लिये अच्छे कपड़े के लिये, घूमने-फिरने और मौज मस्ती के लिये चोरी करते हैं, चैन काटते हैं। बैंक लूटते हैं और लड़कियां कभी-कभी कॉल गर्ल का भी काम करने लगती हैं। पर स्मार्ट दिखने में कमी नहीं आनी चाहिए। आत्मा को चाहे कितना दुखी कर ले पर ऊपर से सुंदर दिखने में कमी नहीं होनी चाहिए। युवा, जब पुलिस द्वारा पकड़े जाते हैं तो पिटाई होती है। बदनामी होती है।

सही को गलत समझना कलयुग की निशानी। आज युवा पीढ़ी में, अमीर घराने के लोगों को स्मार्ट बनने के लिये शराब, सिगरेट जैसे व्यसन भी जरूरी हो गये हैं वरना लोग उन्हें बैकवर्ड मानते हैं। शराब जैसे बुरे व्यसन को जिस काल में अच्छा मानने लगे तब समझना कि दुखमा काल का प्रभाव अब तीव्रता से बढ़ रहा है। अर्थात् दुख बढ़ेगा। ये मिथ्या दृष्टि की सोच है कि बुरी चीजों में सुख का अनुभव करता है। शरीर भले स्वीकार न करे पर दिखाने के लिये पीते हैं। कुछ लोग समझते हैं कि इससे स्टैण्डर्ड कम हो जायेगा। इसी का नाम कलयुग यानी पाप का युग। गलत रास्ते पर चलने के बाद अपने आपको सही समझना। सही रास्ते पर चलने वालों की हंसी उड़ाना।

वर्तमान समय की पीढ़ी की स्मार्ट बनने की परिभाषा में गांधी तो स्मार्ट नहीं है। जिन्होंने देश को आजाद करवाया। जिन्होंने अनेक किताबें लिखीं। जिन्होंने गरीब जनता को ध्यान रखके स्वयं भी कम कपड़े पहने, देश को नई सोच दी। देश के युवाओं की ऐसी सोच, देश को फिर पराधीन बना देगी। झूठा दिखावा के चक्कर में अंदर से खोखले होते जा रहे हैं। अंदर की जड़ कमजोर हो, और पेड़ हरा भरा रहे, ऐसा ज्यादा समय तक नहीं टिकने वाला। जरा सी आंधी-तूफान में वह गिर जायेगा।

गुलदस्ते के फूल

वर्तमान पीढ़ी गुलदस्ते के फूल के समान है। जैसे गुलदस्ते के फूल की मुस्कुराहट ज्यादा समय की नहीं है, क्योंकि वह जड़ से अलग हो चुका है। गुलदस्ते के फूल दिखते सुंदर हैं पर ज्यादा समय तक उनकी सुंदरता नहीं रहेगी जल्दी मुरझा जायेंगे। ठीक ऐसे वर्तमान पीढ़ी जल्दी खुश हो जाती है और जल्दी मुरझा जाती है। धैर्य, धीरज, सहनशीलता पेशेन्स जैसे गुण उनमे से कम होते जा रहे हैं। जल्दी क्रोध से गरम हो जाना, जल्दी ही नाराज होकर बर्फ से ठंडे पड़ जाना। शरीर में दम नहीं इसलिये जल्दी बीमार हो जाना। किसी भी व्यर्थ विषयों को दिमाग में रखकर टेंशन में आ जाना। जल्दी ही सारी बातों को व्यक्त करना, जिसकी आवश्कता नहीं। व्यर्थ में दोस्तों से रिश्ता निभाना, होटल और पार्टी में सुख मानना। धर्म को दकियानूसी मानना धर्म और धर्मात्मा को पुराने विचारों का मानना। गुरुओं का सम्मान नहीं करना। ये सारे कार्य इंसान के चरित्र का पतन कर रहे हैं।

स्मार्ट कुत्ते

वर्तमान में एक फैशन ने और जोर पकड़ रखा है। कुत्ता पालने का। सभी पशु पक्षी जैसे कुत्ता भी एक जानवर है। जानवर, जानवर के बीच रह कर अच्छा महसूस करता है। पर इंसान को कुत्ता बहुत पसंद आया इसलिये उसने कुत्ता पालना शुरू कर दिया। कुत्ते में एक गुण है मालिक को देखकर पूंछ हिलाता है, और एक दोष है कि अपनी जाति भाई को देखकर भौंकता है। पूंछ हिलाने वाले गुण को देखकर मनुष्य ने इसे अपने घर में पाल लिया। पूंछ हिलाने का मतलब सम्मान देना। घर में कोई सम्मान दे या न दे, कुत्ता तो दे ही रहा। सम्मान का भूखा मनुष्य, मनुष्य से सम्मान न मिलने पर कुत्ते से सम्मान प्राप्त कर रहा है। वर्तमान में कुत्ते से इतना प्यार किया जा रहा है कि उसका खाना, नहाना और पालने का खर्चा, एक मनुष्य से भी ज्यादा है। और सीमा तब पार हो जाती है जब मनुष्य कुत्ते का पट्टा हाथ में लेकर अपने

आपको स्मार्ट घोषित करता है। कुत्तों में कई नस्ल के कुत्ते बना लिये।

पहले गाय, भैंस के बाजार होते थे पर अब तो कुत्तों का भी बाजार हो गया है। पूरे विश्व में कुत्तों का व्यापार बड़ी जोरों पर है। किसी-किसी घर में मनुष्य कम मिलेंगे पर कुत्ते ज्यादा मिलेंगे। उनसे प्यार मनुष्यों से ज्यादा किया जा रहा है। कोठी पर कुत्ता न हो तो कोठी सूनी लगती है। सबसे बड़ी बात स्टेन्डर्ड कुत्तों से बनता है। जितना समय कुत्ते के लिए दिया जा रहा है, उतना समय आत्मा और परमात्मा के लिये दिया जाये तो वास्तविक सुख प्राप्त हो जाये। पहले समय में जब बच्चे आपस में लड़ते थे तो गुस्से में एक दूसरे को कुत्ता नाम की गाली देते थे, पर अब तो इस गाली का स्वरूप भी चेंज हो गया।

अब लोग कपड़े, घड़ी, बाल, कोठी गाड़ी के साथ कुत्ते के साथ स्मार्ट, अपने आपको स्मार्ट की पूर्णता मानते हैं। भगवान महावीर कहते हैं कि जिससे ज्यादा प्यार करोगे, अगले जनम में उसी पर्याय में जाओगे। मकान से करोगे तो छिपकली बनोगे। नोटों से नोट में कीड़ा बनोगे, धन से करोगे तो सांप बनोगे, और कुत्तों से करोगे तो...। यदि प्रेम ही करना है तो अपनी आत्मा से करो, अपने शरीर से भी नहीं। निज आत्मा का प्रेम आपको पापों से बचायेगा और परमात्मा बनायेगा।

मनुष्यों में आर्ट का
डाइट के चार्ट का
बनने में स्मार्ट का
बड़ा ही महत्व है

पेड़ में पत्ते का
मधुमक्खी के छत्ते का
फूलों के गुलदस्ते का
बड़ा ही महत्व है

नौकरी में वेतन का
वस्तुओं में अचेतन का
हमारे हमने चेतन का
बड़ा ही महत्व है

यात्रियों के जत्थे का
झुकाने में मत्थे का
नहीं पालने में कुत्ते का
बड़ा ही महत्व है

छोड़ने में व्यर्थ का
प्राप्त करने में परमार्थ का
स्मार्ट के सही अर्थ का
बड़ा ही महत्व है

ज्योतिष भगवान महावीर की वाणी है

ज्योतिष की ज्योति (प्रकाश) में बहुत कुछ नजर आना चाहिये, पर इसके लिये ज्योतिष ज्ञान का चश्मा लगाना आवश्यक है। ग्रह, नक्षत्र बहुत कुछ बोलते हैं, सुनने वाला चाहिए ज्योतिष भगवान महावीर की वाणी है। उसमें उन्होंने 88 ग्रह बताये हैं।

ज्योतिष के 12 घर मात्र स्वयं के जीवन के विषय में ही नहीं बताते अपितु मन, आत्मा, शरीर, व्यापार, त्याग, धर्म, माता-पिता, पत्नी, बच्चे, सुख साधन उन सबके विषय की जानकारी देना (ग्रहों का काम) है। लापरवाही और सावधानी हमारे हाथ में है।

जैसे मौसम विभाग मौसम की जानकारी देता है, बचना हमारा काम है। टीचर ज्ञान देता है पढ़ना हमारा काम है। इसी तरह ग्रह नक्षत्र मात्र जानकारी देते हैं।

इनमें 9 ग्रहों की विशेष जानकारी है। सूर्य पिता, माँ चंद्रमा, भाई मंगल, बुध बुआ, बहन, गुरु गुरु, शुक्र पत्नी, शनि दास दासी का प्रतीक है। ग्रह अच्छा है और आपने यदि ग्रह से संबंधित व्यक्ति के साथ गलत व्यवहार किया तो ग्रह भी उल्टा फल देने लगते हैं। अतः माता, पिता, बच्चों के लिये सब कुछ होते हैं। तब बच्चा माता-पिता के महत्व को नहीं समझता, माता-पिता उससे अपेक्षा करते हैं, वह उपेक्षा करता है, जब स्वयं माता-पिता बनते हैं, तब लगता है कि हमने गलती की है पर तब भी सुधार लें तो अच्छा, पर तब भी नहीं सुधार पाते हैं। इसलिये माता-पिता और बच्चों के बीच एक दीवार खड़ी हो जाती है।

वर्तमान समय में क्रांतिकारी परिवर्तन चल रहा है। इस समय बुजुर्गों का जीवन अलग तरह के संस्कारों से बीतता है। जवान का जीवन अलग तरह के संस्कार और बच्चा अलग तरह के संस्कार में है। इसलिये तीनों को एक होना बड़ा मुश्किल हो रहा है। अलग हो नहीं सकते, एक साथ रह नहीं सकते तब क्या करें कैसे सामंजस्य बिठायें। घर स्वर्ग की जगह नरक बन जाता है। तब ज्योतिष संदेश देता है। रिश्तों में किसका सम्मान कितना करना है? किसके साथ कैसे जीना है?

कोरोना में दशलक्षण कैसे मनायें

कहा जाता है, जैनधर्म भावप्रधान धर्म है। अर्थात् भावों की मुख्यता के साथ जो किया जाये, वह धर्म है। धर्म, भाव परिवर्तन के साथ, जीवन परिवर्तन करता है। जैनधर्म की हर क्रिया भावों की प्रधानता के साथ की जाती है। यदि पूजा कर रहे हैं, तो पूजा भाव के साथ होनी चाहिये। यदि माला फेर रहे हैं, तो भावों में भगवान होना चाहिये, तो माला फेरने की पूर्णता है। भावों की शुद्धि से आत्मा परमात्मा बन सकती है। यह जैनधर्म में भगवान महावीर ने बताया है।

संस्कार मंदिर के

जीवन भर मंदिर में जाकर पूजा की, मंदिर में जाकर माला फेरी, मंदिर में जाकर भक्तामर आदि के पाठ किये। महामारी के कारण ताला लग गया। लोगों का घर में मन नहीं लग रहा। जीवन भर के संस्कार क्या करें, भोजन का ग्रास मुँह में नहीं जा रहा। प्रभु दर्शन के बिना परेशानी अधिक हो रही है। विनय पाठ के वे लाइनें—

''तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन''

पहले लाइनें केवल पढ़ी थीं, पर अब ये लाइन जीवन में चरितार्थ हो रही हैं। भगवान मैं तुम्हारे बिना इतना व्याकुल हूँ, जैसे जल के बिना मछली रहती है। श्रावक के षट् आवश्यक कैसे पूर्ण हों, क्योंकि देव पूजा पहला आवश्यक नहीं हो पा रहा। धर्मात्मा धर्मात्मा से नहीं मिल पा रहा। स्वाध्याय के लिये एकत्रित नहीं हो पा रहे। वास्तव में धर्मात्मा के लिये इससे बड़ा उपसर्ग नहीं हो सकता।

पारस जिनवाणी चैनल

जब एक रास्ता बंद होता है, तो कोई न कोई रास्ता खुलता है। अर्थात् लॉकडाउन के समय में पारस चैनल की अहम् भूमिका रही। सभी भक्त नहा धोकर टीवी के

सामने बैठकर अभिषेक देखते थे। शायद इतने भावों से पहले नहीं देखा होगा, जितने भावों से इस समय में देखा।

कोरोना ने सिखाया

इस समय कोरोना की स्थिति को देखते हुये लग रहा है कि सरकार, मंदिर में सामूहिक पूजा की इजाजत नहीं देगी। इसमें हमारी भी भलाई है। क्योंकि इतना फैल चुका है कि कुछ लोगों ने घर से निकलना बंद कर दिया है। पहले जैसा होटल का खाना, घूमने के लिये जाना, बाजार की कचौड़ी, मिठाई, पकवान खाना। सब बंद कर दिया है। यूं कहें तो जैनी वाला भोजन चल रहा है। एक दूसरे से हाथ मिलाना छोड़कर लोग हाथ जोड़कर 'जय जिनेन्द्र' कर रहे हैं। हाथ धोकर भोजन कर रहे हैं, पैर धोकर घर में प्रवेश करते हैं। सब्जी को अच्छे से धोकर प्रयोग कर रहे हैं। साफ-सफाई का भी ध्यान रखते हैं। कुछ छूटा है, तो कुछ सीखा है। जो करते थे, वो छूट गया, जो भूल गये थे, वो सिखा दिया।

कोरोना में दशलक्षण कैसे मनायें

प्रतिवर्ष की भांति दशलक्षण पर्व में उत्साह कम न करें। घर की साफ-सफाई, रसोई की शुद्धि अवश्य करें। दशलक्षण में शुद्ध भोजन अवश्य करें। रात्रिभोजन त्याग करें। हो सके तो हरी का त्याग करें। प्रतिदिन एक-एक रस त्याग करके भोजन करें अर्थात् घी, तेल, मीठा, नमक, हरी, दूध में से एक-एक दिन एक-एक का त्याग करें। एक बार या दो बार से ज्यादा भोजन न करें परिणामों में शुद्धि रखें। इन दिनों में कषाय और पापों से बचने का प्रयास करें।

घर में पूजा कैसे करें?

कुछ दिनों के लिये घर को ही मंदिर बना लें। जिनवाणी सामने रखकर, यदि यंत्र हो तो सामने रखकर, स्मरण के लिये फोटो आदि सामने रखकर, सारा परिवार एक साथ सुबह 6 बजे बैठ जाये। जितनी पूजा दशलक्षण में करते थे, वे सारी पूजायें सभी साथ मिलकर बोलें बच्चों के हाथ में भी जिनवाणी होनी चाहिये और बच्चों को, पुरुषों को बोलने का विशेष मौका दें, कुछ घर के साज सामान निकाल लें, अर्थात् प्लेट और चम्मच को ही साज बना लें। प्रभु के गीत और हाथ की ताली के संगीत से पूजा सब मिलकर करेंगे तो फिर देखिये, कितना आनंद आता है।

जो परिवार के लोग पूजा ही नहीं करते थे, वे भी पूजा करना सीख जायेंगे। और घर में वातावरण धर्ममय हो जायेगा। दोपहर भोजन के बाद साथ में बैठकर तत्वार्थ सूत्र का पाठ करें एवं स्वाध्याय करें। रात्रि में आरती करें पश्चात् मेरी भावना, विनती, भजन आदि सब लोग बोलें। इन 10 दिनों में जो सबसे ज्यादा करें उसे पुरस्कार भी दें। फिर देखिये घर ही मंदिर बन जायेगा। मंदिर में जाकर दर्शन करें, और प्रार्थना करें कि प्रभु आपकी भक्ति में जो बाधा आ रही है, उसे शीघ्र दूर करें।

शिखर जी में मॉलिस का
बर्तनों पर पॉलिश का
भविष्य बताने में ज्योतिष का
बड़ा ही महत्व है

देवों में पारस देवा का
फलों में मेवा का
माता पिता की सेवा का
बड़ा ही महत्व है

भारत में त्यौहार का
राजस्थान में मनुहार का
भाई बहन के साथ अच्छे व्यवहार का
बड़ा ही महत्व है

पानी भरने में नल का
किसान में हल का
कोरोना में पारस चैनल का
बड़ा ही महत्व है

जीने में आयु का
होने में चिरायु का
श्वांस लेने में वायु का
बड़ा ही महत्व है

लिखने में पत्र का
पूजा में अत्र-अत्र का
पढ़ने में तत्वार्थ सूत्र का
बड़ा ही महत्व है

प्रभु की शरण का
जीवन से समाधिमरण का
धर्ममय वातावरण का
बड़ा ही महत्व है

तिथियों में परमा का
बढ़ई के यहां वरमा का
रात्रि में चंद्रमा का
बड़ा ही महत्व है

प्रकृति से शिक्षा लें

सूरज–इंसान के जीवन का जागरण सूर्य से संबंध रखता है। अर्थात् सूर्य निकलता है तो लोग आलस छोड़कर उठ जाते हैं। तुम उठने में लेट हो सकते हो, पर सूरज निकलने में कभी लेट नहीं होता। सूरज से सीखें कि हमें सभी काम समय पर करना चाहिये। सूरज सारी दुनिया को प्रकाश देता है, पर आपके घर में कभी बिल नहीं भेजता। उसका प्रकाश संपूर्ण धरती के लिये बराबर होता है। सूरज से सीखें कुछ कार्य जीवन में ऐसे हों, जिनमें बदले की भावना न हो। सूरज अग्नि है, जिसके बिना हमारा जीवन संभव नहीं है।

चंद्रमा–सूरज के जाने के बाद धरती पर अंधेरा हो जाता है। तब चंद्रमा अपनी चांदनी के द्वारा सारी धरती पर हल्की शीतल रोशनी करता है। अधिक उजाला जहाँ होता है, वहाँ के लोग सो नहीं पाते हैं। सूरज का आना भी जरूरी है और जाना भी जरूरी है। रात्रि विश्राम के लिये आती है। चंद्रमा की शीतल किरण दिन की गर्मी को शांत कर देती है और ऊर्जा से भरा प्राणी पुनः अगले दिन कार्य करने को तैयार हो जाता है। सूरज सा तेजवान बनना है, पर चंद्रमा सी शीतलता होनी चाहिये।

मेघ (बादल)–जगत प्रसिद्ध मेघ गर्मी से संतप्त जीवों को जल बरसा कर शीतल कर देते हैं। मेघ कभी ये नहीं देखते कि गरीब के आंगन में न बरसूं, अमीर के खेत में बरसूं। बिना किसी भेदभाव के सबको समान रूप से जल प्रदान करता है। ऐसे ही जब इंसान को कुछ देने का मन हो, तो अमीर, गरीब न देखकर समान रूप से देना चाहिये। बादल सागर से पानी भरकर लाते हैं और सारी धरती पर बरसाते हैं। बदले में कुछ भी नहीं लेते। हम ज्यादा कुछ न कर पाये, तो कम से कम अपने हाथों से प्यासे को पानी पिलाने का काम अवश्य करें। किसी को कभी पानी के लिये मना न करें।

धरती–धरती को धैर्य का प्रतीक माना जाता है। विश्व के सभी जीवों को

रहने के लिये स्थान देती है। धरती पर कोई गंदगी करता है, कोई गड्ढे करता है, पर धरती कभी नाराज नहीं होती। सबको समान रूप से शरण देती है। धरती को माँ भी कहा जाता है जैसे माँ अपने बच्चे की गलती क्षमा करती है। ऐसे ही हमें अन्य जीवों की गलतियाँ क्षमा करना चाहिये।

वायु–प्राणवायु भी कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। जीव के दस प्राणों में एक श्वासोच्छश्वास भी होता है, जो वायु के बिना संभव नहीं है। प्रकृति ही हमारे जीवन की रक्षा करती है। लेकिन जो भी वस्तु हमें बिना मूल्य के मिलती है, हम उसकी कीमत नहीं करते। हमारी दृष्टि में तो पैसों से खरीदी वस्तु ही कीमती है। तीनों लोकों के स्थिर रहने का आधार भी वायु है। जितनी गाड़िया दौड़ रही हैं सब वायु के कारण। शरीर में खून चलना भी वायु के कारण है। ऐसा कहा जाये कि संसारी की वायु ही आयु है, तो कोई आश्चर्य नहीं। वायु ने हम पर उपकार किया है, तो हमें व्यर्थ में पंखा, ए.सी., कूलर आदि नहीं चलाना चाहिये। वायु भी जीव है उतना ही उपयोग करो जितना जरूरी है।

वृक्ष–धरती को सुंदर बनाने में सबसे बड़ा योगदान वृक्षों का है। बाग-बगीचा, पेड़ों को देखते ही लोग फोटो खींचना शुरू कर देते हैं। इसके अलावा वृक्ष कार्बन डाइआक्साइड लेकर हमें ऑक्सीजन देते हैं। वृक्ष हमें फल देते हैं, छाया देते हैं, बाढ़ और तूफान से रक्षा करते हैं। हमारे मकान और दुकान की सुरक्षा वही करते हैं, और जन्म से मरण तक हमारे साथ रहते हैं। वृक्षों का उपकार हमारे ऊपर अत्यधिक है। वृक्षों से सीखें कि जो दूसरों को फल और छाया देता है, वह बड़ा बनता है। वृक्षों से सीखें, जो दूसरों की सुरक्षा करता है वह बड़ा बनता है।

कॉलेज और स्कूल की शिक्षा तो इंसान को अक्षरीय ज्ञान कराती है, पेट भरना सिखाती है और साथ ही सात व्यसन की ओर भी ले जा रही है। लेकिन संसार की हर वस्तु हमें कुछ न कुछ सिखाती है, जो हमें आत्मा के उद्धार और सच्चे सुख का मार्ग दिखाती है।

छोड़ने में बुरी इच्छा का
लेने में दीक्षा का
सीखने में शिक्षा का
बड़ा ही महत्व है

धरती में रज का
जंगल में गज का
सुबह-सुबह सूरज का
बड़ा ही महत्व है

वर्तमान में किये कार्य का प्रभाव भूत और भविष्य दोनों पर पड़ता है

बचपन में स्कूल में तीन काल सिखाये थे, भूतकाल (जो बीत गया), भविष्य काल, (जो आने वाला है) वर्तमान काल (जो अभी चल रहा है)। जो काल बीत गया वो हमारे हाथ में नहीं उसमें हम कुछ फेर बदल नहीं कर सकते। भूतकाल में जो गलती हो चुकी है, उसे सुधार नहीं सकते, वर्तमान में सुधार सकते हैं। भविष्य काल में क्या होना है, वह अभी अज्ञात है, जानने की जिज्ञासा रहती है। वर्तमान में जो कर रहे है, वह ही हमारा है।

भगवान महावीर कहते हैं कि वर्तमान में हम जो भी कार्य करते हैं, उसका प्रभाव भूत और भविष्य दोनों पर पड़ता है। यह बात सुनकर आश्चर्य लगता है कि भूत पर क्या प्रभाव हो सकता है वो तो चला गया है। भविष्य की बात तो फिर भी मान सकते हैं, पर भगवान महावीर कहते हैं कि भूत काल में जो कर्म बंध किये हैं, उनका फल तो भविष्य में मिलेगा। यदि वर्तमान में अच्छा कार्य किया है, तो पूर्व के बंधे बुरे कर्म भी ढीले पड़ जाते हैं और उसका फल अपना प्रभाव कम करके देकर निकल जाता है।

यदि जीव सम्यक् दर्शन को प्राप्त करे, तो 70 कोड़ा कोड़ी सागर का कर्म मात्र अंतः कोड़ा कोड़ी सागर रह जाता। इससे बड़ा चमत्कार और क्या हो सकता है। वर्तमान में प्राप्त किये सम्यक् दर्शन से पूर्व के अनंतभव के कर्म बंधन ढीले हो जाते हैं। अतः वर्तमान में सत् कार्य सद्‌भावों से करें, तो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों सुधर जाते हैं। कहा भी जाता है कि वर्तमान का पुरुषार्थ भविष्य का भाग्य कहलाता है।

सजा कम हो जाती है

जब कोई व्यक्ति गलती करता है तो उसे जेल में बंद किया जाता है। जेल में बद

कैदी यदि अच्छे आचरण के साथ जेल में रहे, तो उसकी सजा कम कर दी जाती है और वहाँ भी उत्पाद मचाता है, तो सजा और बढ़ा दी जाती है। ऐसा तो वर्तमान में देखने को मिलता है। जब सजा सुनाई गई थी, तब अधिक थी, लेकिन आचरण अच्छा किया, तो कम हो गई, बुरा किया तो अधिक हो गई। अतः वर्तमान का आचरण, हमारे भूत और भविष्य दोनों को सुधारता है। अतः कार्य करते हुये इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिये।

पूर्व कर्मों को दोष देकर हम हताश न होयें बल्कि अपने पुरुषार्थ से उन्हें बदलने का प्रयास करें।

अनुशासन में अनिवार्य का
भारत में आर्य का
जीवन में अच्छे कार्य का
बड़ा ही महत्व है

बहू में सास का
राजा के दास का
नहीं होने में हताश का
बड़ा ही महत्व है

नेताओं में धरने का
माला को फेरने का
वर्तमान को सुधारने का
बड़ा ही महत्व है

अर्जुन में पार्थ का
चलने में पाथ का
जीवन में पुरुषार्थ का
बड़ा ही महत्व है

बीज में बोने का
कमरे में कोने का
सजा कम होने का
बड़ा ही महत्व है

चन्द्रमा में गुरुत्वाकर्षण का
भौतिकता में आकर्षण का
जीवन में सम्यक् दर्शन का
बड़ा ही महत्व है

तुम्हारा शत्रु नहीं फिर भी दुःख देता है तुम्हारा मित्र नहीं फिर भी सुख देता है

अक्सर जब भी किसी के द्वारा हमें कष्ट की प्राप्ति होती है तो हम उसे शत्रु मान लेते हैं। क्योंकि कष्ट देना शत्रु का काम होता है, किन्तु संसार में ऐसे बहुत से प्राणी हैं, जो शत्रु नहीं होते हुये भी कष्ट देते हैं और ऐसे प्राणी एक दो की संख्या में नहीं बल्कि लाखों और करोड़ों की संख्या में हैं। उन प्राणियों का उद्देश्य हमें कष्ट देना नहीं होता है, बल्कि वे अपने स्वभाव के कारण ऐसा करते है और उससे हमें कष्ट हो जाता है।

जैसे मच्छर। मच्छर कहीं भी मिल जाये, वे अवश्य ही काटते हैं। वे काटते हैं पर उनके काटने में हमसे दुश्मनी नहीं है, बल्कि उनका स्वभाव है। यदि केवल शत्रुता वश ही काटना शुरू करें, तो वहाँ जितने लोग बैठे हैं उनमें से केवल अपने शत्रु को ही काटेंगे। लेकिन ऐसा नहीं, वहाँ जितने लोग होते हैं सबको काटते हैं, बराबर से काटते हैं। मनुष्य के अलावा वहाँ पशु भी हों, तो उन्हें भी काटते हैं। उनका स्वभाव है, तो स्वभाव वश काटते हैं। इसलिये अक्सर लोग मच्छर को भगाते तो हैं, पर उनके काटने का बुरा मानकर उनसे दुश्मनी नहीं पालते। उनसे शत्रुता नहीं बांधते। अतः शत्रु नहीं हैं फिर भी कष्ट देते हैं।

चूहे जिनके घर में होते हैं, लोगों को अपने सामान की रक्षा करने में हजारों लाखों रुपये खर्च करने पड़ते हैं। फिर भी मौका मिलते ही चूहा कपड़े काट देते हैं, किताबें काट देते हैं। भोजन खराब कर देते हैं तथा रसोई में घुस जायें, तो तोड़-फोड़ भी कर देते हैं। बड़ा-बड़ा गोदाम साफ कर देते हैं। कहने में चूहा छोटा सा प्राणी है पर बड़े-बड़े मनुष्यों को कष्ट देने में समर्थ है। हमारा दुश्मन नहीं है और न ही दुश्मन के द्वारा भेजा गया है, फिर भी कष्ट देने में पीछे नहीं रहता।

बंदर भी बड़ा खतरनाक प्राणी है। जिस बाग में घुस जाये बाग उजाड़ देते हैं। जिस शहर, गाँव में होते हैं, उन्हें सपने में भी बंदर नजर आते हैं। बंदर नुकसान

भी करते हैं और हिंसा भी कतरे हैं। उनकी हमसे कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं है, पर चंचलता उनका स्वभाव है। उन्हें इसी में मजा आता है। बिल्ली को भी दूध, दही साफ करने में समय नहीं लगता। मक्खी, मच्छर, टिड्डे, कॉकरोच, चींटी, खटमल, मकोड़े, मकड़ी, छिपकली।

अभी ऐसा सुना गया कि 2-3 करोड़ टिड्डे झुंड में उड़ रहे हैं, एक शहर से दूसरे शहर की लंबी-लंबी यात्रा कर रहे हैं तथा खेतों में फसल का बहुत नुकसान कर रहे हैं। टिड्डा कहने को छोटा सा है, पर बड़ी संख्या में टिड्डों को संभालने के लिये सरकार को सामने आना पड़ा। बड़ी-बड़ी खबरें अखबार में छप रही हैं। बड़े-बड़े टीवी चैनल उनकी फोटो दिखाकर उनकी करतूत सुना रहे हैं। टिड्डे हमारे दुश्मन नहीं हैं, पर उनका स्वभाव ऐसा है।

वर्तमान में चल रही कोरोना महामारी के जो अणु हैं, वे जीव हैं, अत्यधिक सूक्ष्म जीव हैं। संक्रमण बहुत तेजी से करते हैं, असंख्यात गुनी संख्या होने में समय नहीं लगता। पूरी दुनिया को इस छोटे नन्हें से प्राणी ने सोचने पर मजबूर कर दिया है कि, दुश्मन नहीं हूँ पर नुकसान दुश्मन से ज्यादा कर रहा हूँ। तीन-चार महीने में दुनिया भर की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया है, जो काम बड़े-बड़े हथियार नहीं कर पाये वो काम इस महामारी ने कर दिया है। कोरोना के जीव हमें जानते नहीं, पहचानते नहीं, पर उनका स्वभाव ऐसा है।

इस संसार के अनंत जीवों के द्वारा हमें कष्ट पहुँचाना नहीं, वरन् स्वभाव होता है, अतः हमें उन पर अधिक क्रोध नहीं आता। कष्ट देने वाले प्राणी को, तो हम बड़ा याद रखते हैं, पर जो हमें सुख देते हैं, हम उनको कभी धन्यवाद नहीं देते। हमें याद ही नहीं रहता, ये सुख हमें उन जीवों के माध्यम से मिला है। अतः आओ हम जानें कि हमें किन-किन जीवों से सुख मिलता है, जबकि वे हमारे मित्र नहीं हैं।

राष्ट्रीय पक्षी मोर को सभी जानते हैं और सभी ने देखा भी होगा। मोर देखते ही हमारे मन में एक उत्सुकता जाग्रत होती है और हम उसे ध्यान से देखना चाहते हैं। वो जहाँ-जहाँ भागता है, वहाँ नजरें भागनी शुरू हो जाती हैं। यदि मौसम सुहाना हो और मोर पंख फैलाकर नृत्य कर रहे हों, तब हमें अत्यंत आनंद की प्राप्ति होती है। अतः मोर हमारा व्यक्तिगत मित्र नहीं है, फिर भी हमें आनंद देता है।

पहले समय को स्मरण करें। नागपंचमी के दिन गाँव में बीन बजाते सपेरा नागों को डलिया में रखकर लाते थे, टोकरी खोलकर बीन बजाते हुये नागों को नचाते थे। सब लोग नाग का नृत्य देखकर अत्यंत प्रसन्न होते थे, बीन की आवाज कानों को बड़ा सुख देती थी। सांप को शत्रु मानते हैं लेकिन जब सपेरे के अनुशासन में

रहता है, तो वह सुख देने वाला मित्र बन जाता है।

आम की बोर में छुपी कोयल जब मीठी-मीठी आवाज में कूकती है, तो दूर से आता मधुर स्वर आनंददायी बन जाता है। पेड़ पौधों को देखकर अतीव सुख मिलता है। गर्मी के दिनों में काले बादल और ठंडी हवा भी बड़ी सुखदायी होती है। जबकि ये सब हमारे व्यक्तिगत मित्र नहीं हैं पर इनके द्वारा हमें सुख की प्राप्ति होती है।

ऐसे एक नहीं बहुत सी अजीव वस्तुएं भी जीव को सुख देती हैं, हीरा, मोती, माणिक, पन्ना आदि। बीमार इंसान को दवा सुखी करती है। प्यासे इंसान को पानी सुखी करता है। भूखे इंसान को भोजन से सुख मिलता है। सर्दी में वस्त्र ज्यादा सुखदायी लगते हैं। बारिश में छाता सुखी कर देता है। सारी दुनिया सुख हम पर बरसा रही है, हम ही एक ऐसे प्राणी हैं, जो सबको दुःखी करने को सदा तैयार रहते हैं। सुख पाने की भावना रहती है, पर सुख देने की भावना नहीं रहती है।

वे हमारे व्यक्तिगत न होते हुये भी हमें सुख देते हैं, किन्तु हम मनुष्य मित्रों के साथ भी शत्रुता का कार्य करते हैं। जैसे सारा संसार हमें सुख दे रहा है, हमें भी सबको सुख देने की भावना रखनी चाहिये।

नाव के खेने का
कपड़ों के पहनने का
किसी को कष्ट नहीं देने का
बड़ा ही महत्व है

आकाश को निहारने का
शरीर को सिंयारने का
मच्छर चूहा नहीं मारने का
बड़ा ही महत्व है

व्यक्तियों में रॉयल का
पांव में पायल का
मीठा बोलने में कोयल का
बड़ा ही महत्व है

बच्चों में शोर का
जयकारों में जोर का
जंगल में मोर का
बड़ा ही महत्व है

नक्षत्रों में अश्विनी का
करने में अच्छी करनी का
नागी की नाग पंचमी का
बड़ा ही महत्व है

मन की चंचलता वरदान है, इसे अभिशाप न बनायें

छोटा बच्चा जब अधिक दौड़ता है, अधिक खेलता, कूदता है, अधिक प्रश्न पूछता है, तो घर वाले अक्सर ये कहते सुने जाते हैं कि बहुत चंचल है, बहुत परेशान करता है। घर का काम नहीं करने देता, दिन भर इसी को संभालने में लगे रहते हैं। भगवान से प्रार्थना करते हैं, गुरुओं से आशीर्वाद माँगते हैं कि इसकी चंचलता कम हो।

चंचलता यानी गतिशीलता का अधिक होना। बचपन है इसलिये खूलकूद में गतिशील है। समझदारी आयेगी, तो लक्ष्य की तरफ गतिशीलता मुड़ जायेगी। जितनी तेजी से ऊधम कर रहा था; उतनी ही तेजी से मंजिल की तरफ जायेगा। अर्थात् बचपन माता-पिता को संभालना पड़ता है, वे सोचते हैं जितने गंभीर हम हैं बच्चा भी उतना गंभीर हो जाये। पर ऐसा हो नहीं सकता। बच्चे की चंचलता को दिशा देने का प्रयास करें। पर बचपन में लक्ष्य का बोध नहीं होता। अतः समझाने पर भी नहीं समझेगा तो क्रोध न करें। बचपन को बचपन के हिसाब से लाड़ प्यार खेलकूद में रहने दें। उम्र के साथ में गंभीरता स्वयंमेव आती है।

मिट्टी का घड़ा बनाने के लिये, पहले मिट्टी को अनेक प्रयास करके अनुकूल बनाया जाता है। फिर मिट्टी का घड़ा बनाया जाता है। इसलिये उम्र परिस्थिति समझ आने पर, जब बात कही जायेगी, तो जल्दी समझ में आयेगी। इसी तरह किसी को बात समझाने के लिये पहले उसे अनुकूल बनाना आवश्यक है। अनुकूल कैसे बनाना है, उसका तरीका आपको आना चाहिये। सब्जी छौंकते हुये पता है कि तेल कब डालना है, मसाला कब डालना है और सब्जी कब डालना है। कितने गरम तेल होने पर पूड़ी डालना है, आपको पता है, किन्तु सामने वाले के कान में कौन सी बात कब डालनी है, इस बात का भी पता होना चाहिये। तभी हमारी बात मान्यता प्राप्त होगी।

इंसान के अंदर प्रेम बांटने की भावना अतितीव्र है। पर लेने वाला समर्पित चाहिये। आज सबका अहंकार आसमान छू रहा है। कोई किसी का प्रेम लेकर अहसान के बोझ में दबना नहीं चाहता। और न ही झुककर किसी के आगे छोटा बनने के लिये तैयार है। अब स्थिति यह आ गई है कि लोग प्रेम करने के लिये कुत्ता पालने लगे हैं। कुत्ता पूंछ हिलाता है और मालिक प्रेम करता है। जब इंसान ने पूछना बंद किया, तो कुत्ते की पूंछ की जरूरत पड़ी। सम्मान देने से सम्मान प्रेम और गिफ्ट सब कुछ मिलता है।

चर्चा चल रही है, मन की गति वरदान है। अर्थात् मन के पास में तीव्र गति है और इस गति पर जो भाव सवार कर देते हैं, मन उसे लेकर तीव्रता से भागने लगता है। मन पर क्रोध के भाव सवार हो, तो उसे लेकर चलने लगता है। मन अपने आप में कुछ नहीं है। मन एक सवारी है, इसमें जो भी भाव रखोगे वही आगे ले जायेगा। अतः मन में यदि अच्छी सोच अच्छे विचार, धर्मध्यान, सम्मान की भावनायें, वैराग्य भावना भरी जाये, तो वह आत्मा के उत्थान हेतु मोक्ष के रास्ते पर चलना प्रारंभ कर देता है। यदि वह क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह में उलझता है तो आत्मा को नरक पहुँचा देता है। मन तो केवल गाड़ी का काम करता है। मन को चलाने वाला आत्मा यदि जाग्रत है, तो वह मंजिल की तरफ ले जायेगा और यदि आत्मा सुप्त है, तो गाड़ी निश्चित ही दिशाहीन होकर भटक जायेगी। अतः मन को बुरा भला कहने से कोई फायदा नहीं। मन को दिशा लेकर चलाने की कला आत्मा को आनी चाहिये।

आत्मा के ज्ञान की इसमें मुख्य भूमिका है। ज्ञान या तो पूर्व जन्म से साथ आया हो, या वर्तमान में शास्त्रों से, प्रवचनों से, सत्संगति से प्राप्त करके भावों को सुधारना चाहिये। मन को सुधारने के लिये ज्ञान की आवश्यकता है। मन को मनमानी नहीं करने देना है, वरना उस पर संयम का अंकुश लगाना है।

जैसे घोड़े को लगाम की, हाथी को अंकुश की, गाड़ी को ब्रेक की आवश्यकता है। यदि ये है तो तीनों मंजिल पर पहुँचा देंगे, वरना भटका देंगे। ऐसे ही ज्ञान और संयम से मन को वश में करके मन से सही दिशा में ले जाने वाले कार्य कराना चाहिये। तभी मन के द्वारा आत्मा धर्म के अमृत का रसपान कर पायेगी वरना मन रूपी वरदान ही आत्मा के लिये अभिशाप बन जायेगा।

जिस गाड़ी में बैठकर तीर्थ यात्रा की जा सकती है, उसी गाड़ी में महखाने भी जाया जा सकता है। गाड़ी की गति अपने आप में कुछ नहीं, बल्कि जाने वाले सवार के अनुसार गाड़ी चलती है। अतः मन की गति इंसान के लिये वरदान भी बन सकती है और अभिशाप भी।

मन वचन काय का आत्मा पर प्रभाव

मन वचन काय तीनों के पास गति है अर्थात् तीनों सदा गतिमान होते हैं। इनमें मन की गति, सबसे तेज है, क्षण भर में कहीं से कहीं पहुँच जाता है। सारी दुनिया में घूम आता है। किसी को मालूम भी नहीं पड़ता। वचन की गति इससे कम है, जितना स्वर मिला है, उसके हिसाब से ऊँची आवाज में, मन का सोचा हुआ विचार वचन के द्वारा उद्‌घाटित होता है।

शरीर की गति मन, वचन की अपेक्षाकृत धीमी है। मन जितना सोच सकता है, वचन उतना बोल नहीं सकता। वचन जितना बोल सकता है, काया उतना कर नहीं सकती। मन कुछ भी सोच सकता है, पर वचन कुछ भी नहीं बोल सकता क्योंकि उसके पास प्रेम, अनुशासन, प्रशासन, धर्म की सीमा है। वचन जितना बोल लेता है, पर काया उतना कर नहीं सकती क्योंकि करने पर, देखने पर, सुनने पर बंधन और ज्यादा दृढ़ हो जाता है। जैसे—किसी के मारने के लिये आपने कितनी बार विचार किया, पर बोला नहीं अतः परिवार मित्र आदि सजा नहीं देंगे। यदि वचनों से बोल भी दिया, परिवार आदि डांट कर, चिल्ला कर सजा दे सकते हैं, किन्तु शरीर से किसी हत्या कर दी, तो आपको इसकी सजा देने के लिये प्रशासन भी तैयार बैठा है।

मन अति सूक्ष्म है, वचन स्थूल और सूक्ष्म है, पर शरीर स्थूल है। मन को किसी कैमरे के द्वारा अथवा किसी मशीन के द्वारा नहीं पकड़ा जा सकता है। वचन को पकड़ने के लिये भी रिकार्डर आ गये हैं और काया तो इतनी स्थूल है कि आसानी से हाथों द्वारा पकड़ी जा सकती है। अतः जितना पाप मन के द्वारा कर लेते हैं, उतने वचन के द्वारा नहीं होते और जितने वचन के द्वारा कर सकते हैं, उतने शरीर के द्वारा नहीं कर पाते।

आत्मा ही मन के द्वारा सोचता है। वचन के द्वारा भावों को व्यक्त करता है और काया के द्वारा मन के सोचे कार्यों का संपादन करता है और उन सोचे हुये, बोले हुये, किये हुये कार्य के द्वारा कर्मों का आस्रव, बंध करता है। मन वचन काय तीनों गतिशील हैं। तीनों की गतिशीलता चारों गति के जीवों के होती है। हालांकि मन वचन काय तिर्यंच गति के समस्त जीवों के पास नहीं है, पर फिर भी गतिशीलता

वहाँ भी है। देव, मानव, नारकी के पास मन, वचन, काय तीनों हैं। तिर्यंचों में एकेन्द्रिय जीव के पास मात्र शरीर है, वचन और मन नहीं। दो इंद्रिय से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय को वचन मिल गये, पर व्यक्त करने के लिये भाषा और मन नहीं मिला। संज्ञी तिर्यंच भी अपने भाव व्यक्त नहीं कर पाता। वे आपस में ही एक दूसरे की बात समझते हैं और कोई नहीं।

स्वस्थ गतिशीलता

जीवों को मन वचन काय की गतिशीलता, वरदान और अभिशाप दो रूप में व्यक्त की जा सकती है। मन, वचन, काय अपने आप में कुछ नहीं है, इसका उपयोग करने वाली आत्मा है, आत्मा जब मन वचन काय से उत्तम सोच रखते हुये उत्तम वचनों से भाव अभिव्यक्त करते हुए शरीर से उत्तम कार्य करती है; तब यह तीनों आत्मा के लिये किसी वरदान से कम नहीं हैं। किन्तु जब आत्मा क्रोध, मान, माया, लोभ की तथा पापों की संगति करती है; तब मन, वचन, काय के द्वारा इनका ही उपयोग कर स्वयं का जीवन तथा वहाँ का वातावरण दोनों को अनासिक्तमय बना देती है। अर्थात् सक्रियता, क्रियाशीलता, गतिशीलता, दोनों कार्य में है, किन्तु एक में वरदान रूप में, एक में अभिशाप रूप में। दोनों के परिणाम भी आत्मा को ही भुगतने पड़ेंगे।

शरीर को संस्कारित करने के लिये प्रातःकाल से ही चर्या को संयममय बनाना होगा जैसी खड़ी हुई गाड़ी में जंग लग जाती है, वैसे ही अधिक आराम करने वाला शरीर भी बीमार हो जाता है। शरीर का निर्माण मेहनत करने के लिये हुआ है, अतः घर के काम न हों तो एक्सासाइज, व्यायाम आदि करके शरीर को स्वस्थ रखें। यदि नहीं करते हैं, तो आत्मा के निकट शरीर ही है, यदि वह बीमार हुआ, तो आत्मा भी सुखी नहीं रह पायेगी।

शरीर का स्वभाव भी गतिशीलता है, यदि स्थिर कर दिया तो, यह निश्चित ही कष्ट का कारण बनेगा। अतः मेहनती काम शरीर से अवश्य कराने चाहिये।

वचन में गतिशीलता है। हर मनुष्य वचन भी सुबह से शाम, रात तक बोलता है। जबसे बोलना सीखता है, तब से। जब तक ताकत होती है, चुप नहीं होता। गले से ढंग से आवाज न निकले, तब भी गला खींच-खींच कर बोलता है। तोतला हो तब भी बहुत बोलता है और जिसकी जुबान ठीक हो, उसका तो कहना ही क्या?

नल में पानी आता है, जो टंकी में भरा होता है। अर्थात् टंकी में जैसा पानी होगा वैसा नल में आयेगा। इसी तरह जैसे विचार मन में होंगे, वैसे वचन में आयेंगे। अर्थात् वचनों को उत्तम बनाने के लिये मन की सोच को उत्तम बनाना आवश्यक है।

मृत्यु से ज्यादा कष्ट अपमान

सांसारिक जीवों की पीड़ा की ओर देखा जाये, तो एक से बढ़कर एक पीड़ायें लेकर मनुष्य जीवन जीता है। अपेक्षाकृत कथन किया जाये तो शारीरिक कष्ट से ज्यादा मानसिक कष्ट की पीड़ा ज्यादा है। मानसिक कष्ट में कषायों की पीड़ा ज्यादा है। शरीर का कष्ट, तो सहन हो जाता है, पर सामने वाले का क्रोध सहन करना मुश्किल लगता है। सामने वाले के द्वारा किया अपमान सहन करना मुश्किल होता है।

क्रोध में इंसान कुछ भी कर सकता है

इंसान को जब क्रोध आता है, तब उसके अंदर विशेष राक्षसी शक्ति जाग्रत हो जाती है, फिर वो सामान्य नहीं रह जाता। वो क्रोध के वशीभूत हो जाता है। जैसे किसी को भूत प्रेत लग जाये तो वह व्यक्ति जो भी करता है वो, कार्य, वह नहीं करता, जो भूत प्रेत कराते हैं, वो वह कार्य करता है। ऐसे ही जब क्रोध आत्मा में प्रवेश कर जाये तो फिर वो, जो भी करता है वह क्रोध ही कराता है। अंतर इतना है कि भूत प्रेत बाहर से आये हैं और क्रोध अंदर से आया है।

क्रोध एक तूफान की तरह आता है और वर्षो की मेहनत से जो रिश्ते बनाये थे, वो एक पल में तोड़ देता है, सामान तोड़ देता है, बच्चों को पीटता है, और ज्यादा आ जाये तो स्वयं को पीटने लगता है और ज्यादा आ जाये तो या तो वह दूसरों की हत्या करवा देता है या खुद को खत्म कर देता है। यह क्रोध का अंतिम और तीव्र रूप है। अर्थात् क्रोध का कष्ट इतना बड़ा हो गया कि मृत्यु का कष्ट छोटा पड़ गया। जबकि मृत्यु से चारों गति के जीव डरते हैं पर क्रोध के सामने वह भी तिनके के बराबर पड़ गया।

अर्थात् इंसान को क्रोध पर संयम रखना चाहिये। परिस्थितियाँ प्रतिकूल मिलती थी, मिलती हैं, और मिलेंगी, पर उन विकट परिस्थितियों का सामना कैसे करना है? इस बात के लिये जाग्रत होना आवश्यक है। स्वयं का नियंत्रण खोने पर प्रलय

आ जाती है। नियंत्रण में रहकर ही स्वयं को दूसरे को वश में किया जा सकता है। इच्छाओं की पूर्ति के लिये क्रोध न करें। यदि नियंत्रण न रखा जाये, तो क्रोध के जाने पर पछतावा शेष रह जाता है।

उदाहरण के लिए—गाँव में रहने वाला वकील रोज शहर जाकर वकालत करता था। उसकी पत्नी उसे कई दिन से नई साड़ी लाने को कह रही थी। वकील जाता तो कोर्ट जाने की जल्दी होती थी, लौटने के समय लेट हो जाता, तो वापस घर आ जाता। वह साड़ी नहीं ला पाया। इधर पत्नी का क्रोध बढ़ता रहा, एक दिन वकील से सुबह खूब झगड़ा किया, पश्चात् वकीत तो कोर्ट चला गया, पत्नी ने छोटे दोनों बच्चों को गोद में लिया और जाकर कुएँ में कूद गई। लोगों को पता चला, फटाफट जाकर निकाला बच्चे तो मर गये थे, पत्नी बच गई। अब पत्नी को बड़ा पछतावा हुआ, बच्चों के लिए तड़पने लगी, बहुत दुःखी हुई, पर अब क्या होता है। क्रोध को तो जो कराना था, करा कर चला गया, ''अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।'' अर्थात् होश पूर्वक क्रोध को नियंत्रण करने का प्रयास करें वरना यह क्रोध वर्तमान में घर को नरक बना देगा और मरने के बाद आत्मा को नरक भेज देगा। अतः

जुबान नरम
जेब गरम
और सिर ठंडा रखना चाहिये

अपमान का कष्ट

मनुष्य मान कषाय के साथ जन्म लेता है। अर्थात् मनुष्य पर्याय में मान कषाय की तीव्रता है।

क्रोध आता है, तो नजर आता है, दिखता है, आवाज ऊँची हो जाती है, चेहरा विकृत हो जाता है, हाथ, पाँव फटकारने लगता है। सांसें तेज-तेज चलने लगती हैं। आँखें लाल हो जाती हैं। क्रोध पूरे शरीर में ऐसे प्रवेश कर जाता है, जैसे बुखार। पर मान बड़ा मीठा है, आता भी और पता भी नहीं चलता।

मान कषाय के लक्षण

1. अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होता है।
2. जिस जगह प्रशंसा न मिले, वहाँ टिकता नहीं है।
3. अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहता है।

4. अपनी बात सुनाने को तैयार रहता है, सुनने को नहीं।
5. अपनी बनाई खराब वस्तु के कारण बताता है कि खराब मैंने नहीं बनाई कारणों से हुई है। अर्थात् अपनी गलती मानने को तैयार नहीं होता।
6. अपनी कमी सुनने पर क्रोध आता है।
7. दूसरों की निंदा करने में सुख मिलता है।
8. दूसरों की प्रशंसा सुनने में कष्ट होता है।
9. अपनी कमियों को छिपाने की कोशिश करता है।
10. झूठ बोलने में भी पीछे नहीं रहता।
11. भीड़भाड़ के स्थान प्रिय लगते हैं। जहाँ अपने आपको प्रदर्शित करने का मौका मिले।

अर्थात् जब अभिमान अपना रूप दिखाता है, तो तब भी इंसान स्वयं को भूल जाता है। जैसे क्रोध स्वयं को भुला देता है, वैसे मान भी करता है और कभी अपमान हो जाये, तो जीवन को व्यर्थ समझ कर आत्महत्या तक का प्रयास कर लेता है। विचार करता है कि ऐसी अपमान भरी जिन्दगी से तो मरना श्रेष्ठ है। सबके सामने मेरी कमी बताई, मेरा अपमान किया, विष पीने से भी ज्यादा कड़वा है, इस प्रकार वह अपमान के शब्दों को महसूस करता है।

भगवान महावीर ने आत्मा और शरीर का भेद विज्ञान करके बाहर के अभिमान को छोड़ कर आत्मा के ज्ञान का सम्मान किया, जहाँ अभिमान होता ही नहीं है। कोमलता मृदुता इतनी होती है, कठोरता का असर ही नहीं होता और निन्दा सुनकर नाराज नहीं होते, वे समता धारण कर अभिमान को दूर करते हैं। अभिमान को साथ लेकर चले, तो यह अभिमानी इंसान बदला लेने की भावना को लेकर दूसरे की हत्या भी कर सकता है और ज्यादा हो जाये तो स्वयं की हत्या भी कर सकता है।

मानी मानी भर गये, रहा न उनका वंश।
तीनों टोला देख लो, रावण कौरव कंस॥

माया कषाय क्रोध, मान और लोभ के साथ अपना रूप दिखा कर अपना कार्य करती है। क्रोध, मान, लोभ में विशेषता भरती है, उनमें वृद्धि करती है। वैसे देखा जाये, तो क्रोध और माया तो अपने लिये कुछ भी नहीं करते, दोनों मान और लोभ की रक्षा में तत्पर होते हैं। जब सम्मान न मिले, मान की पूर्ति न हो, एवं सामने अपने से निर्बल हो, तो क्रोध आता है और सामने वाला अपने से बलवान हो तो माया आती है। इसी तरह लोभ पूर्ति हेतु दोनों तत्पर रहते हैं।

अंदर बैठा लोभ भी, इंसान के मुख से कहलवाता है कि यदि अमुक वस्तु या व्यक्ति न मिला, तो मैं मर जाऊँगा, मैं उसके बिना नहीं रह सकता। मैं तभी जी सकता हूँ, जब वह मुझे मिले। इस तरह लोभ की पूर्ति न हो, तो भी आदमी प्राण देने को तैयार हो जाता है तथा उस वस्तु या व्यक्ति को कोई और ले ले, तो जान लेने को भी तैयार हो जाता है। अर्थात् लोभ कषाय परवस्तु में मोहित कर प्राप्ति के भाव बनाता है और एक दिन वह खुद ही उसे छोड़कर चला जाता है।

इस तरह चारों कषाय आत्मा को अत्यंत कष्ट और पीड़ा देती है। ये कषाय तब तक अपना असर दिखा रही है, जब तक आत्मा जाग्रत नहीं है। यदि आत्मा अपने स्वभाव के प्रति जाग्रत हो जाये, तो कषायों को भागने में समय नहीं लगेगा।

जैसे—जब तक सिंह सो रहा है, तब तक जंगल के पशु-पक्षी निर्भय होकर विचरण कर रहे हैं, किन्तु जैसे ही शेर जागकर एक दहाड़ लगावे, तो सारे पशु-पक्षी अपने-अपने बिल में घुस जाते हैं। ऐसे आत्मा का स्वभाव जाग्रत होते ही कषाय भाग जाती है।

सेना में कप्तान का
देश रक्षा में जवान का
नहीं करने में अपमान का
बड़ा ही महत्व है

रसोई में बर्तन का
बच्चों में नर्तन का
स्वयं पर नियंत्रण का
बड़ा ही महत्व है

होने में बोध का
करने में शोध का
नहीं करने में क्रोध का
बड़ा ही महत्व है

जुबान में नरम का
जेब में गरम का
आंखों में शरम का
बड़ा ही महत्व है

आत्मा की चिंता क्यों करें?

जैसे जीव स्वयं को पहचानता है और कर्म के आस्रव बंध को जानता है; वैसे ही जीव स्वयं के हित की चाह करने लगता है। कर्म कहाँ से आ कर रास्ता बंद करना शुरू कर देता है। असंयम से, राग से बंध होता है।

रत्तो बंधदि कम्मं, मुचदि जीवो विराग संपन्नो

राग से बंधन है, वह बाहर से इंद्रियों एवं मन पर संयम और प्राणी संयम प्रारंभ कर देता है। यही से आत्म हित प्रारंभ कर देता है।

उत्तमा स्वात्म चिंता च...

सबसे पहले अपनी चिंता करो। अपनी चिंता का मतलब, अपने खाने की चिंता नहीं, अपने मकान की चिंता नहीं। घर गृहस्थी की चिंता नहीं, बल्कि आत्मा की चिंता। आत्मा की चिंता से आत्मा की रक्षा, किससे रक्षा करनी है, कौन है, जो आत्मा को सता रहा है, कौन है, जो दुःख दे रहा है। आत्मा दिखाई दे, तो रक्षा करूँ, दिखाई तो शरीर देता है इसलिये इसकी रक्षा करता हूँ। इसे बचाने का प्रयास करता हूँ, ये फिर भी नहीं बचता, जो दिखता है, उसके लिये साधन होते हैं, जो नहीं दिखता पर है उसकी साधना होती है।

जो देख रहा है, बोल रहा है, सुन रहा है, ये वही तो है। जो सुख दुःख महसूस कर रहा है। ये वही तो है। उसी की रक्षा करनी है। वही मैं हूँ, जो दिख नहीं रहा। उसकी रक्षा क्रोध से करनी है, मान, माया, मोह से करनी है, पाप और असंयम से करनी है।

जिसके पास धन हो, संपत्ति हो, तो उसकी रक्षा करें, आत्मा के पास ऐसी क्या चीज है, जिससे उसकी रक्षा करें। प्रश्न उठ सकता है, रक्षा करने की जरूरत क्या है? आत्मा रह रही है, रहने दो। किन्तु भगवान महावीर ने, अन्य तीर्थंकर भगवन्तों ने अपनी शुद्ध आत्मा को उपलब्ध हुये और उन्होंने बताया कि आत्मा में अनंत ज्ञान, दर्शन, सुख, शक्ति का खजाना है। ये कर्म लुटेरे लूट रहे हैं। इन्होंने उस खजाने

पर कब्जा कर रखा है और अंनत सुखी आत्मा को भिखारी बना दिया, वो बाहर के परिजनों से सुख की भीख माँग रहा है। अनंत शक्ति का खजाना है। डॉ. साहब से कहता है, शक्ति नहीं है, दवाई दे दो। भगवान से कहता है, भगवान शक्ति दो। जबकि स्वयं शक्ति का खजाना है।

जब तक पर को अपना मानकर राग-द्वेष करता रहेगा। तब तक जीव अपने खजाने को देख ही नहीं सकता। दृष्टि को बाहर से हटा, तब तुझे अपना सुख का खजाना दिखेगा। आज दूसरों की चिन्ता की अपेक्षा थोड़ी चिन्ता अपनी आत्मा की कर ले।

उत्तमा स्वात्मचिन्ता स्यात्, देहचिन्ता च मध्यमा।
अधमा कामचिन्ता स्यात्, परचिन्ताऽधमाधम॥

देश में अभियंता का
तीर्थों में गजपंथा का
आत्मा की चिंता का
बड़ा ही महत्व है

प्रभु आज्ञा मानने का
आत्मा को जानने का
स्वयं को पहचानने का
बड़ा ही महत्व है

पाने में मुक्ति का
लगाने में युक्ति का
आत्मा की अनंत शक्ति का
बड़ा ही महत्व

दही को जमाने का
रूठे को मनाने का
आत्मा को सुख के खजाने का
बड़ा ही महत्व है

स्कूल में कक्षा का
सेना में सुरक्षा का
आत्मा की रक्षा का
बड़ा ही महत्व है

प्रभाव

संसार में हर कोई अपना-अपना प्रभाव दिखाना चाहता है। मौका मिलते ही अपनी कथनी-करनी का बखान प्रारंभ कर देता है। प्रभाव दिखाना मान कषाय का कारण है। वह किसी भी रूप में दिखा सकता है। अपनी सत्ता की मौजूदगी कराना किसी भी रूप में कर सकता है। बच्चा, बड़ा, बूढ़ा हर जीव चाहता है। गुणवान अवगुणी दोनों चाहते हैं। गुणवान का प्रभाव तो वो ना भी चाहे, तो भी हो सकता है। पर अवगुणी तो अपना प्रभाव दिखाने के लिये बड़ी-बड़ी सभायें खराब कर देता है। बड़े-बड़े काम में अंतराय डाल देता है। केवल अपना प्रभाव दिखाने के लिये।

शादी होती है, तब फूफा जी अपना प्रभाव न दिखायें कैसे संभव है। अथवा और भी कोई रूठ के बैठ जायेगा—मनाते रहो। वैसे उसे अपने घर में कोई नहीं पूछता, पर ससुराल में शेर बन जाता है। माँ कुछ काम कर रहीं हो, या किसी से बात कर रही हो, तो बच्चा हाथ खीचेगा, बाल खीचेगा, गाल खीचेगा, पहले मेरी सुनो। वो भी अहसास दिलाना चाहता है, मैं भी कुछ हूँ।

कोरोना काल में महिलाओं ने खूब प्रभाव दिखाया। पति को बार-बार कहती थी, कहाँ से लॉक डाउन लग गया, मेरी तो आफत आ गई, सारे दिन इनके आगे थाली, गिलास लेकर खड़े रहो। दिन भर इनकी फरमाइशें पूरी करती रहो। बच्चों को सारे दिन ताने देती थी, दिन भर परेशान करते हो। घर में महिलाओं का मौका मिला है प्रभाव दिखाने, अहंकार का प्रभाव। जिन बच्चों से वो प्रेम करती है, जिनसे शादी करके वो इस घर में आई, आज यदि साथ रहने का मौका मिला, तो परेशान हो गई। इसका मतलब उसे जिन्दगी जीना नहीं आता है और इस लॉक डाउन में अनेक घरों में क्लेश और लड़ाईयाँ भी हुई हैं। पर यदि कोई समझदार महिला होगी, तो इस समय को सार्थक कैसे बनाना है मीठे शब्द से, समझदारी से वैसा कर लेगी। घर का माहौल नारी जैसा बनाना चाहे, वैसा बना सकती है।

सहनशीलता, विनम्रता, प्रेम, करुणा, दया से वह नारी, घर के प्रत्येक सदस्य

के दिल पर राज कर सकती है। प्रभाव दिखाना अलग बात है, प्रभाव होना अलग बात है। सामने वाले से जोर-जोर से चिल्ला के बात करके प्रभाव जमाना अलग है कुछ बोला भी नहीं और सामने आपकी बात सुनने के इंतजार में है, ये बात अलग है।

भोजन बनाना नारी के लिये एक विशेष गुण है। पर अहसान जता के खिलाती, गुस्सा करके खिलाती, चिड़चिड़ाती है, ऐसा भोजन, भोजन नहीं जहर बन गया। घर वालों को स्वस्थ रखना है, तो प्रसन्न होकर बनाओ, भक्तामर मोबाइल में चालू कर दो, ताकि भोजन भी मंत्रित होकर अमृत बन जाये। खिलाते समय चेहरे पर मुस्कुराहट अवश्य होनी चाहिये। बाकी समय चाहे न मुस्कुराओ, पर भोजन परोसते समय प्रसन्न मुद्रा में रहो, तो भोजन करने वाले के स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ता है।

न अभाव में जियो, न प्रभाव में जिओ
जीना है तो अपने स्वभाव में जिओ।

लगाने में चौंका का
सुपाड़ी के लिये सरौंता का
अच्छे काम के मौका का
बड़ा ही महत्व है

पक्षियों में बया का
नारी में हया का
दिल में दया का
बड़ा ही महत्व है

व्यापारी में नफा का
रसोई में सूपा का
घर में फूफा का
बड़ा ही महत्व है

भोजन में तहारी का
पान में सुपारी का
जीने में समझदारी का
बड़ा ही महत्व है

दुःख और चुनौती सोई शक्ति जाग्रत करता है

इंसान शक्तियों का खजाना है। अनंत-अनंत संभावनायें इंसान के अंदर छुपी हैं। जैसे सोया शेर किसी कमजोर प्राणी से कम नहीं है, वैसे ही सोई शक्ति का कोई महत्व नहीं है। शक्तियों को जाग्रत करके हम उनसे अनेक लाभ ले सकते हैं। शक्तियों को जाग्रत करने में चुनौती की सबसे बड़ी भूमिका होती है। जब भी कोई चैलेंज करता है, तो उस कार्य को करने को हम प्रेरित और तत्पर हो जाते हैं। दिमाग की मशीन भी जाग्रत हो जाती है कि यह काम कैसे होगा, सारी शक्ति उस चुनौती को पूर्ण करने में लग जाती है। जिसका ज्ञान हमें पहले नहीं था, और नई-नई खोज शुरू हो जाती है। सुप्त पड़ा मन सक्रिय हो जाता है।

जैसे एक कमजोर आदमी में दौड़ने की ताकत नहीं है, पर यदि कुत्ता या शेर पीछे लग जाये, तो वह भी तेज दौड़ने लगता है। कहाँ तो चलने की ताकत नहीं थी, पर कुत्ते ने उस व्यक्ति के दौड़ने की ताकत को जाग्रत किया। बच्चों से जब गलती हो जाती है तो वे बचने के लिये तरह-तरह के उपाय सोचते हैं। उनके सामने माता-पिता के डांट की चुनौती है। या दुःख शक्ति जाग्रत करता है या चुनौती शक्ति जाग्रत करती है।

इंसान या तो दुःख को भगाने में अपनी शक्ति लगाता है या चुनौती को पूर्ण करने में। इसलिये चुनौती न हो, तो किसी को भी आधार बनाकर उसे चुनौती मानकर पुरुषार्थ प्रारंभ करें, फिर देखिये कितना आनंद आता है। दुःख जाने पर या चुनौती पूर्ण होने पर, जो आनंद इंसान को मिलता है, वह किसी धन से तौला नहीं जाता। निष्क्रिय बैठकर जीने में आनंद नहीं है, आनंद तो नित्य नये-नये कार्य करने में है।

प्रतियोगिता (कम्पटीशन) का चलन हर क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। मैं उससे अच्छा करूँ। यह सोच इंसान की सोई शक्ति जाग्रत करती है और यह बचपन से प्रारंभ हो जाता है। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की परीक्षायें होती हैं। जिससे वे विशेष ध्यान से पढ़ाई करते हैं। स्मरण रखते हैं, मेहनत करते हैं, दिन-रात उन्हें

केवल परीक्षा ही स्मरण रहती है, कोई मैरिट में आने के हिसाब की पढ़ाई करता है, तो कोई पास होने लायक करता है, पर करते सब है। बुद्धि तो सबके पास है, पर परीक्षा बुद्धि को तेज कर देती है।

बाप की बपौती का
दादा की पोती का
जीवन में चुनौती का
बड़ा ही महत्व है

कपड़ों में फिट का
उपाधि में डी.लिट्. का
आने में मैरिट का
बड़ा ही महत्व है

शेर से सामना का
नहीं होने कामना का
जीव की अनंत संभावना का
बड़ा ही महत्व है

रसोई की शुद्धि का
दुकान की गद्दी का
इंसान की तेज बुद्धि का
बड़ा ही महत्व है

कार्य में मिशन का
बुक में लेशन का
जीवन में काम्पटीशन का
बड़ा ही महत्व है

छोड़ने में दंद फंद का
नहीं होने में द्वंद्व का
चुनौती के आनंद का
बड़ा ही महत्व है

बाग में फूल का
दिमाग में कूल का
बच्चों के लिए स्कूल का
बड़ा ही महत्व है

संसार को दर्शक बनकर नहीं दृष्टा बनकर देखो

आँख प्रतिक्षण कोई न कोई पदार्थ को देखने का कार्य करती है। आँख जिस पदार्थ को देखती है, उसे संसार दृश्य कहता है। कुछ दृश्य देखने जाते हैं। कुछ दृश्य दिखते हैं। सभी दृश्य होते हैं। जिसे देखते हैं, वह दृश्य, जो देख रहा है वह दर्शक। दृश्य की कीमत दर्शक से होती है। यदि दर्शक न हो, तो दृश्य का होना, न होना उपयोगिता नहीं रखता। जहाँ जिस वस्तु के अथवा किसी स्थान विशेष के दर्शक अधिक हों, वह स्थान प्रसिद्ध कहलाता है। दर्शक के द्वारा दृश्य को देखने की क्रिया, किस भाव से की जा रही है, वह भी कर्मबंध में कारण होता है।

कोई पहाड़ों पर बर्फ देखने जाता है। कोई पहाड़ देखने जाता है, कोई ठंडक लेने जाता है। कोई ताजमहल देखने जाता है, तो कोई राजमहल देखने जाता है। कोई गार्डन देखने जाता है, तो कोई झरना देखने जाता है। कोई विदेश में विशेष देखने जाता है। इन सब पदार्थों का यदि मूल मटेरियल देखा जाये, तो पेड़, पानी, पहाड़, पत्थर, वनस्पति ही है। किसने कितने कुशलता से दिखाया है, ये बात अलग है। कलाकारी करने पर वह विशेष दृश्य बन जाता है। जो लोगों को आकर्षित करता है। कुछ दृश्य देखने लोग पिक्चर हॉल में जाते हैं। दृश्यों को देखने के लिये घर में टी.वी. रखी हुई है। और जेब में भी वही है। अर्थात् आँखों के देखने के आकर्षण में सारी दुनिया पागल हो रही है। दृश्य और दर्शक का संबंध गहरा होता जा रहा है। पर द्रष्टा खो गया है।

फिल्म देखते वक्त इंसान इतना खो जाता है कि वह स्वयं को भी भूल जाता है। लाफ्टर देखने में भी खुद को भूल जाता है। इंसान के अंदर की चिंता, पीड़ा, दुःख, परेशानी वह थोड़ी देर के लिये भूल जाता है। अपने दुःख से इतना परेशान है कि वह ऐसे दृश्य खोजता है कि वह खुद को भूल जाये। खुद को भूलने के लिये लोग तो शराब भी पीते हैं अर्थात् भूलने से दुःख कम या खत्म नहीं हो जाता, कुछ देर को विस्मरण अवश्य हो जाता है। एक दृश्य को देखकर दूसरे दृश्य को भूल

जाता है। पुराना दृश्य नीचे चला गया, नया दृश्य ऊपर (डिस्प्ले) हो रहा है। इससे नीचे वाला चित्र खत्म नहीं हुआ। अर्थात् बाहर के चित्रों में खोकर, समस्या का समाधान नहीं निकाला जा सकता।

जैसे कोई व्यक्ति आईने में अपने को देख रहा है। उस समय जो आईने में दिख रहा है वो दृश्य है, जो देख रहा है वो दर्शक है। वह अपने शरीर के प्रति बिम्ब का दर्शक है। फिर वही व्यक्ति अपनी आँखों से अपने हाथों को निहार रहा है, तब दृश्य और दर्शक का भेद है। क्यों, देखने वाला आत्मा है और दिखने वाला शरीर है। किन्तु दूध पानी के समान एक नजर आ रहे हैं। इनको अलग करने की विधि तो तपस्या और ध्यान है। शरीर में रहकर, शरीर देखने को देखना, ये सबसे उत्तम दृश्य और दर्शकपना।

दर्शक और द्रष्टा शब्द देखने में एक से प्रतीत होते हैं, पर दोनों में अंतर है। जो दृश्य देखने में खुद को भूल जाये, वो दर्शक और जो दृश्य को देखते हुये आत्मा को याद रखे वह है द्रष्टा। दर्शक देखने के बाद हर वस्तु में राग या द्वेष उत्पन्न करता है। किन्तु द्रष्टा, दृश्य को देखकर उसमें अच्छे बुरे की कल्पना नहीं करता। भगवान महावीर ने आत्मा का स्वभाव दर्शक नहीं द्रष्टा कहा है,

हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम,
ज्ञाता दृष्टा आतम राम।

संसार को दर्शक बन कर नहीं दृष्टा बनकर देखो।

शहरों में आष्टा का
रसोई में पाटा का
बनने में दृष्टा का
बड़ा ही महत्व है

होने से हर्षित का
शासन में शासित का
नहीं होने में आकर्षित का
बड़ा ही महत्व है

सुधारने में लत का
मकान की छत का
वस्तुओं की कीमत का
बड़ा ही महत्व है

पशुओं की नसल का
होने में सफल का
मनुष्यों में कुशल का
बड़ा ही महत्व है

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मुक्ति का साधन

वर्तमान समय पंचम काल चल रहा है। पंचमकाल की मुख्य विशेषता है कि इसमें निकृष्ट आचरण, निकृष्ट विचार बढ़ेंगे और उत्तम विचार, उत्तम आचरण घटेगा। पंचमकाल में शुभ भाव बनाने में अति पुरुषार्थ करने होता है, पर उनका टिका रहना बड़ा मुश्किल होता है तथा अशुभ भाव की धारा लगातार अनवरत बहती रहती है। स्वभाव से कला की निष्कृष्ट प्रत्यक्ष गोचर हो रही है। लेकिन अभी पंचमकाल के मात्र 2500 वर्ष बीते हैं। धीरे-धीरे यह आगे की तरफ बढ़ रहा है। अभी धर्म और धर्मात्मा धरती पर हैं और रहेंगे, संख्या भले ही कम होती जाये। धर्म अभी साढ़े अठारह हजार वर्ष और चलेगा। फिर भी काल की निकृष्टता के प्रभाव से अधर्मात्मा की संख्या बढ़ रही है।

हीन शक्ति, कमजोर शरीर के होते हुए भी, इतने मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका संख्या देखने को मिल रही है, ये भी एक अतिशय है। इसलिये शास्त्र में लिखा है कि पंचम काल में कोई जीव एक दिन तप करे और चतुर्थ काल में महीना भर तप करे, तो दोनों की निर्जरा बराबर है। जैसे कोई बच्चा पानी से भरी बाल्टी उठाये, तो लोग शाबाशी देते हैं, और वही बाल्टी कोई बड़ा उठाये तो कुछ नहीं कहते। इसी तरह इस काल में तपस्या करना दीक्षा लेना, बड़ी बात कही है।

पंचम काल में भी चतुर्थ जैसा करने वाले साधु आज भी हैं। उनकी निर्दोष चर्या देखकर लोगों को आश्चर्य होता है। चारों तरफ भौतिक साधनों के अंबार लगे हैं मन को आकर्षित करने वाले हजारों तरह की वस्तुएँ हैं, पर उनकी तरफ आकर्षित नहीं होना और अपने मन को धर्म में दृढ़ बनाये रखना, ये भी प्रशंसनीय है। भोग विलास में डूबे लोगों की ओर देखें, तो लगता है कि धर्म कैसे आगे बढ़ेगा। लेकिन जब धर्मात्माओं की ओर दृष्टिपात करते हैं, तो लगता है कि कोई चिन्ता नहीं, धर्म ऐसे आगे बढ़ेगा।

होता स्वयं जगत परिणाम,
मैं जग का करता क्या काम?

जैनधर्म जनधर्म है, जैनधर्म आत्मा का धर्म है, जैनधर्म अनादि अनिधन धर्म है। आत्म कल्याण का पथिक सदा ही आत्म सुख प्राप्ति हेतु धर्म को धारण करते रहेंगे और धर्म चलता रहेगा। धर्म अकेला नहीं चल सकता, धर्म हमेशा धर्मात्मा के ऊपर सवार होकर चलता है और धर्मात्मा को सुखी कर देता है। पंचम काल में अनेक दीक्षित साधु दिख रहे हैं जिन्हें वैराग्य आया, आत्म जाग्रति आई, और दीक्षा ले ली। स्व-पर कल्याण करने हेतु तप-त्याग का कठिन मार्ग अपनाया और मुक्ति की राह पर चल पड़े। दीक्षा का मार्ग, बाह्य बाधाओं का मार्ग का, शारीरिक परेशानियों का मार्ग है। यदि जीव आत्मज्ञान साधना कर लेता है, तो वे बाधाएं शूल समान नहीं बल्कि फूल समान लगती हैं और वे उन्हें कर्म निर्जरा में साधन बना लेते हैं। हालांकि देखने वाले को लगता है कि उन्हें कष्ट हो रहा है, पर उनका ध्यान तो ज्ञान और संयम की ओर रहता है।

महसूस करने वाला मन है और मन को ज्ञान-ध्यान में लगा दो, तो कष्ट भी कष्ट नहीं लगता। कब आया, कब चला गया, अथवा सर्दी, गर्मी अनुभव में नहीं आती। जैसे बच्चे खेलते हैं, तब सर्दी-गर्मी कितनी भी हो उन्हें महसूस नहीं होती। माता-पिता महसूस करते हैं कि बच्चे को लग रही है, पर बच्चे का ध्यान तो खेल में है, उसे तो पता ही नहीं चल रहा कि गर्मी लग रही है। इसी तरह योगी अपने मनोयोग को बदलकर 22 परीषहों को सहन करते हैं। वे शरीर की तरफ ध्यान कम और आत्मा की ओर ध्यान ज्यादा रखते हैं। संसारी प्राणी शरीर की ओर ध्यान ज्यादा लगाता है, इसीलिये दुःखों से भर जाता है। क्योंकि सुख बाहर नहीं आत्मा में है। सच्चे सुख की ओर ध्यान देना (यही दीक्षा लेने का प्रयोजन है)।

मुक्त क्यों होना चाहिए?

सभी द्रव्य स्वभाव से स्वतंत्र हैं। विभाव परिणति केवल दो द्रव्यों से पाई जाती है जीव और पुद्गल। जीव द्रव्य में चेतनता है, अनुभूति और अनुभवन की शक्ति है। जिससे वह सुख और दुःख का अनुभव करता है। किन्तु यह गुण पुद्गल में नहीं है। विभाव परिणति का कष्ट चेतन महसूस करता है। जब तक आत्मा कर्मो के बंध में है, तब तक दुःख, कष्ट, पीड़ा, परेशानी, संघर्ष आदि कष्ट सताते रहें। जब जीव कर्मों के बंधन से मुक्त होगा, तब वह अपनी आत्मा में अनंत सुख नामक

गुण प्रगट कर लेगा और दुःखों से छुटकारा पा लेगा। फिर वह सदा-सदा के लिये स्वतंत्र हो जायेगा। यही स्वतंत्र अवस्था ही उसकी शुद्ध अवस्था, इसी की प्राप्ति के लिये मुक्त होना चाहता है।

अभी तक जीव कहाँ था?

नित्य निगोद में अनंत जीव पड़े हुये हैं, जो समय पाकर वहाँ से बाहर निकलते हैं। फिर अनंत काल तक एकेन्द्रिय की पर्याय में जीवन जीते हैं। पश्चात् दो इंद्रिय, तीन इंद्रिय, चार इंद्रिय की पर्याय में असंख्यात काल तक भ्रमण करते हैं। फिर पंचेन्द्रिय तिर्यंच आदि का जीवन पाते हैं। महान पुण्य का अवसर होता है, जब जीव मनुष्य पर्याय को प्राप्त करता है। उस मनुष्य पर्याय में सत्संगति, जैन कुल, अच्छी बुद्धि, देव-शास्त्र गुरु का समागम मिलना और धर्म बुद्धि का मिलना, यह सब चिंतामणि रत्न मिलने के समान कहा है। इस तरह अनंत काल से हम संसार का परिभ्रमण कर रहे थे और अनंत तरह के अनंत दुःखों को भोग रहे थे। पंचपरावर्तन कर संसार में भ्रमण कर रहे थे।

मुक्ति का साधन क्या है? और कहाँ है?

चार गति, चौरासी लाख योनियों में एक मनुष्य गति ही ऐसी गति है, जहाँ से मुक्त हो सकते हैं। बाकी योनियों में तो मात्र भ्रमण ही है। मुक्त होने का रास्ता नहीं। अतः मुक्ति के लिये मनुष्य शरीर ही पुरुषार्थ करने योग्य है। यह शरीर ही मोक्ष तक पहुँचाने में सहायक है। मनुष्य भव रूपी गाड़ी से ही मोक्ष रूपी मंजिल का सफर तय किया जाता है। मनुष्य शरीर ही अंतिम स्टेशन तक पहुँचाने में सहायक है। इसीलिए मुक्ति के साधनों में पहला साधन, शरीर है, जो कि आज हम सबको प्राप्त है। यह साधन प्रभु कृपा से प्राप्त है, अब अन्य साधनों की खोज करनी है।

जब पुण्य हो तो वस्तु की खोज करनी नहीं पड़ती। वस्तु हमें खोजते हुए चली आती है। जब पुण्य कमजोर हो तो हमें अधिक पुरुषार्थ करने पर सफलता मिलती है। यदि ज्यादा कमजोर हो तो पुरुषार्थ करने पर भी सफलता नहीं मिलती। इससे हमें हार नहीं मान लेनी चाहिये। समुद्र में गोताखोर को एक बार में ही हीरा-मोती नहीं मिल जाते, कई बार समुद्र की गहराई में जाना पड़ता है, तब कहीं जाकर रत्नों का खजाना मिलता है। इसलिये सफलता न भी मिले, तो निराश नहीं होना चाहिये। पुरुषार्थ की ज्योति जलेगी, तो अंधकार अवश्य ही भागेगा।

देव शास्त्र गुरु

हमारे प्रेरणा स्तोत्र, हमारे मार्गदर्शक, हमारे पथ प्रदर्शक, हमारे ज्योति पुंज, देव, शास्त्र, गुरु हैं। वर्तमान समय में सर्वज्ञ देव प्रत्यक्ष रूप से नहीं हैं, पर उनका प्रतिबिम्ब ही हमें अनेक प्रेरणा और पथ प्रदर्शित कर देता है। उनका प्रतिबिम्ब अनेकों मौन शिक्षायें देता है। उस प्रतिबिम्ब की भक्ति करके करोड़ों पाप का नाश करके, सम्यक दर्शन की प्राप्ति कर लेते हैं। जो हमारे समस्त दुःख और कष्ट को दूर करने में सहायक हैं। देव के तीन लक्षण हैं वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी और प्रभु भगवान शिक्षा दे रहे हैं कि जो मैंने प्राप्त किया है, वह तुम भी प्राप्त करके मेरी तरह भगवान बन सकते हो। मंदिर जी में, भगवान के प्रतिबिम्ब की मुद्रा का जो दर्शन करते हैं, वही स्वरूप जिनदेव का होता है। वही मुद्रा समवशरण में भगवान की होती है।

देव की वाणी शास्त्र है, जब देव न हो, तो उनकी वाणी को श्रद्धा से पढ़कर, उसमें जैसा कहा है, वैसा आचरण करके, मुक्ति पथ पर चला जा सकता है। वीतरागी देव की वाणी, वीतरागी संतों के द्वारा लिपिबद्ध की जाती है। उसका स्वाध्याय ही मोक्षमार्ग का साधन बन जाता है। ऐसे अनेक तपस्वी देखने को मिलेंगे जिनको शास्त्र पढ़कर वैराग्य हुआ। प्रशम मूर्ति आ. श्री शांतिसागर महाराज प्रथम (छाणी वाले) गुरुवर को भगवान नेमिनाथ पुराण में नेमि प्रभु के वैराग्य का प्रकरण पढ़ कर वैराग्य हुआ था। आ. सृष्टि भूषण माताजी को यशोधर चरित्र में आटे के मुर्गा की कहानी पढ़कर वैराग्य हुआ था। एक महाराज थे जिन्होंने 'मुक्ति पथ की ओर' पढ़कर वैराग्य को प्राप्त हुये थे अर्थात् एक नहीं अनेक उदाहरण हैं जिनको शास्त्र पढ़कर वैराग्य हुआ तथा वैराग्य होने के बाद कैसे आगे बढ़ना है, वो भी शास्त्र सिखाते हैं। अतः भगवान की वाणी सम्यक शास्त्र भी हमारे मुक्ति सुख प्राप्ति में अत्यंत लाभप्रद है।

मनुष्य के लिए धन का
भक्ति में आराधन का
मुक्ति के साधन का
बड़ा ही महत्व है

होने में भोर
दरवाजे पर तोर
समुद्र में गोता खोर का
बड़ा ही महत्व है

ज्ञान-अभ्यास

अभ्यास! किसका? ज्ञान का? किसी भी क्रिया को बार-बार करने को अभ्यास कहते हैं। अभ्यास करने पर जो काम घंटों में होता था, वो मिनटों में होने लगता है। एक पुरुष भोजन बनाये, तो टाइम ज्यादा लगेगा और महिला बनाये, तो समय कम लगेगा। बच्चा चलना सीखता है, तो धीरे-धीरे संभल के चलता है फिर जब अभ्यास हो जाये, तो दौड़ना शुरू कर देता है। बच्चा प्रारंभ में जब अ, आ, इ, ई, क, ख सीखता है फिर दो-दो अक्षर मिलाता है। घर पर चल, झट पट कर। तीन-तीन अक्षर मिलाता है। अभ्यास करते-करते कब पढ़ना सीख जाता है, पता ही नहीं चलता।

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होय सुजान।
रसरी आवत जात ही, सिल पर पड़त निशान॥

प्रतिमा बनाने वाला धीरे-धीरे सुंदर प्रतिमा बनाने लगता है। अर्थात् अभ्यास एक ऐसी चीज है, जिससे जो काम संभव न हो, वह भी संभव हो जाता है। उपवास व्रत का भी अभ्यास किया जाता है। सुबह जल्दी उठना चाहें, तो उसका भी अभ्यास किया जाता है। माँ बेटी को रसोई में रोटी बनाना सिखाती है, तो प्रारंभ बहुत धीरे-धीरे करती है। फिर हाथ जल्दी-जल्दी चलने लगते हैं। गाड़ी चलाने में भी यही क्रिया लागू है। अभ्यास सही जगह किया जाये, तो पत्थर भी भगवान बन सकता है। अभ्यास से लोग माउन्ट एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ जाते हैं।

सोलह कारण भावनाओं में ज्ञान का अभ्यास करने को कहा है। आँखों में देखने की शक्ति न हो तो उजाला भी किसी काम का नहीं। अर्थात् बाहर की दुनिया देखने के लिये पहले आँखों की रोशनी चाहिये। इसी तरह बाहर से हम ज्ञान लेते हैं, लेकिन ज्ञान इसलिये समझ में आता है कि ज्ञान हमारे अंदर है। हमारी आत्मा का स्वरूप ही ज्ञान रूप है। ज्ञान और आत्मा एक ही है। आत्मा का गुण ज्ञान है।

प्रश्न उठ सकता है कि जब ज्ञान हमारे अंदर है, तो बाहर से ज्ञान लेने की क्या जरूरत? जिज्ञासा उत्तम है। कर्मों से ढंके होने पर ज्ञान प्रगट नहीं है। उस

ज्ञान की महिमा प्रभु ने प्रगट की है, उन्हें देखकर हमें अपने ज्ञान की याद आती है। फिर यह कैसे प्रगट करें? देव, शास्त्र, गुरु के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते हैं। देव, शास्त्र, गुरु ज्ञान के अलावा कुछ नहीं देते। वो जिस ज्ञान को उपलब्ध हुये हैं, प्राप्त किया है, उसे ही देते हैं। ज्ञान से सुख है, अज्ञान से दुःख है। दुःख बाहर नही अज्ञान में है। सुख बाहर नहीं आत्मा में है।

जिनको सुख चाहिये, वे बाहर की वस्तु नहीं अपितु आत्मा का ज्ञान प्राप्त करे। और उसका अभ्यास करे।

बनाने में विश्वास का
फूलों में सुवास का
करने ज्ञान अभ्यास का
बड़ा ही महत्व है

घर में गेस्ट का
बीमारी में टेस्ट का
पर्वतों में माउण्ट एवरेस्ट का
बड़ा ही महत्व है

जीत के जश्न का
महापुरुषों में कृष्ण का
पूछने में प्रश्न का
बड़ा ही महत्व है

किताब को पढ़ने का
कपड़ों को कढ़ने का
पर्वत पर चढ़ने का
बड़ा ही महत्व है

योद्धा में सुभट का
भगवान के भगत का
ज्ञान के प्रगट का
बड़ा ही महत्व है

लड़कियों में चोटी का
चवन्नी में खोटी का
बनाने में रोटी का
बड़ा ही महत्व है

ग्रहों में शनि का
खुशी में दुगुनी का
जीवन में रोशनी का
बड़ा ही महत्व है

संपूर्ण ज्ञान को, शब्दों की आवश्यकता नहीं

भाव और स्वभाव। अर्थात् आत्मा में भावों की तरंगें प्रतिपल उठती रहती हैं, पर भाषा रूप व्यक्त करने की क्षमता इंसान को प्राप्त है। वह अपने भावों की क्षमता अपने अभिप्राय को सामने वाले को बता सके, समझा सके, व्यक्त कर सके और करता भी है। आत्मा के भाव मन में विचार रूप परिवर्तित होते हैं और विचार शब्द रूप बनकर बाहर सबके समक्ष आ जाता है।

वह भाव चाहे क्रोध का हो या प्रेम का, मान का हो या लोभ का। सुख का हो या दुःख का। वैराग्य का हो या त्याग का, सेवा का हो या भक्ति का। बाहर भाषा के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। मनुष्य के अलावा अन्य पशु-पक्षी को ये वरदान नहीं मिला है। इसी भाषा के कारण संसार में साहित्य का निर्माण हुआ। जितनी भाषायें बोली जाती हैं, हर भाषा में साहित्य निर्मित हुआ, उस देश का विकास, वहाँ की संस्कृति साहित्य में लिपिबद्ध की जाती है।

किन्तु आत्मा में जितने भाव हैं, वे मन में उतने विचार रूप नहीं बन पाते। जितने विचार बनते हैं, उतने वचन से नहीं बोले जाते, जितने बोले जाते हैं उसे शरीर से आचरण में नहीं लाया जा सकता। आत्मा में भाव अनंत हैं, भाषा सीमित है, विचार सीमित है। ऐसा प्रत्यक्ष में देखा जाता है कि जब किसी को क्रोध आता है, तो वह चिल्लाने लगता है। शब्द से क्रोध को पूरा न कर सके तो वह मारने लगता है, और उससे भाव पूरे न हों, तो गोली भी चला देता है। अर्थात् क्रोध को व्यक्त करने में भाषा अपूर्ण है, इसकी पूर्ति शरीर भी नहीं कर पाया, तो डंडा लेना पड़ा। भाषा कम पड़ गई।

इसी तरह मान कषाय अधिक हो और शब्दों से अपनी तारीफ करने में समर्थ न हो तो, दिखावा करता है। कोठी, बंगला, गाड़ी, सोना-चांदी, कपड़ों से मान कषाय की पूर्ति करता है। मान कषाय का भाव केवल शब्द में पूरा नहीं हो पाता इसलिये वस्तुओं की आवश्यकता पड़ी। इसी तरह मायाचारी और लोभ कषाय है। लोभ कषाय

की अभिव्यक्ति शब्द से नहीं बल्कि धन इकट्ठा करके होती हैं।

व्यक्ति जब दुःखी होता है, तो औरों को सुनाता है। अर्थात् दुःख के विचार को शब्द रूप करके बताता है। दुःख का भाव अधिक बढ़ जाये, तो आँखों से आँसू गिरने लगते हैं और अधिक बढ़ जाये, तो जोर-जोर से रोने लगता है। दुःख का भाव और बढ़ जाये तो हाथ-पांव पटक-पटक के रोने लगता है और भाव दुःख का अधिक बढ़ जाये तो आत्महत्या तक कर लेता है। अर्थात् भावों को व्यक्त करने में भाषा बहुत लघु है, छोटी है इसलिये अन्य सहारों से दुःख के भावों को व्यक्त किया जाता है। ये सारे भाव पर के निमित्त से हो रहे हैं। निमित्त दूसरा है, भाव आत्मा के हैं। आत्मा जब मोह भाव के कारण पर पदार्थों से जुड़ती है, तब उन पदार्थों में इष्ट, अनिष्ट की कल्पना करके सुखी दुःखी होता है। जबकि आत्मा परनिमित्त को छोड़ें तो स्वयं सुख का सागर है।

कभी इंसान खुश होता है, तो मुस्कुराता है। अपनी या अपनों की तारीफ करके खुश होता है। अड़ोसन-पड़ोसन को बताता है। फोन करके बताता है और सुख ज्यादा बढ़ जाये तो रोना शुरू कर देता है। भावों का वेग शब्दों में नहीं समाया, तो आँखों से आंसू झरने लगते हैं। अर्थात् सुख व्यक्त करने में भी भाषा के पास पूर्ण शक्ति नहीं है।

जब सेवा के भाव उमड़ते हैं तो व्यक्ति बोलता कम है। काम ज्यादा करता है। देने का काम करता है। सहयोग करने का काम करता है। भक्ति के भाव उमड़े तो भजन गाकर व्यक्त करता है। पूजा करता है, स्तोत्र पढ़ता है। और वैराग्य के भाव उमड़े तो त्याग के मार्ग पर चलने लगता है। भाव आत्मा में हैं पर इंसान की हर क्रिया उसके भावों को व्यक्त करने में कारण है।

भावों को व्यक्त करने में आंसू की बहुत बड़ी भूमिका है। भावों का वेग धारा बनकर बह जाता है। सामने वालों को कुछ कहने की जरूरत नहीं आंसू ने वो सारी बात कह दी, जो भाषा नहीं कह सकती थी। आंसू से बड़ी भाषा कोई नहीं बोल सकता। ये भाषा का डिजिटल रूप है। भाषा भाव को व्यक्त करती है, पर पूर्ण रूप से नहीं।

इंसान जितना सोचता है, उतना बोल नहीं पाता। जितना बोलता है, उतना क्रिया रूप कर नहीं पाता और आत्मा में जितने भाव हैं, इंसान उतना सोच भी नहीं पाता। अर्थात् आत्मा के भाव अनंत, विचार असंख्यात हैं, वचन संख्यात हैं और क्रिया उंगलियों में गिनने लायक है। आत्मा के अनंत भावों की, अनंत ज्ञान की खोज भी इस सूक्ष्म ज्ञान से करनी होगी। ज्ञान की पर्याय ही भाव है। ज्ञान की

खोज ज्ञान से ही करनी होगी। और ऐसा करना संभव है। पूर्व अनंत आत्माओं ने इसी अशुद्ध ज्ञान को शुद्ध बनाकर केवलज्ञान प्राप्त किया था। हमें भी उसी रास्ते पर चलना होगा।

ज्ञान प्राप्ति की खोज, शब्द से शुरू होगी किन्तु निःशब्द में जाकर समाप्त होगी। ज्ञान की चरम सीमा अनुभवात्मक है शब्दात्मक नहीं। जैसे पूर्व में बताया कि भाव की पूर्ण अभिव्यक्ति शब्द नहीं कर पाते, क्योंकि भावों में शब्दों की आवश्यकता ही नहीं है। जब तीर्थंकर भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति होती है। समवशरण में भव्यों के पुण्य से प्रभु की दिव्यध्वनि खिरती है, वह शब्दात्मक अक्षरात्मक नहीं होती। वह ओंकार ध्वनि के रूप में होती है। वह भी मुख से नहीं बल्कि सर्वांग से प्रसारित होती है। जब मौन साधना से तप करके ज्ञानावरण कर्म का नाश किया, तो मुख को बोलने की जरूरत नहीं है। रोम रोम मुखर हो रहा है। पर उनका ध्यान आत्मा में ही रहता है। इस तरह भगवान की दिव्य ध्वनि में द्वादशांग का सार होता है। गणधर उसे लेकर भक्तों को देते हैं। देवता उस ध्वनि को सभी मनुष्य और पशु-पक्षी की भाषा रूप परिणत कर देते हैं और भव्यों को प्रभु के ज्ञान के सागर की कुछ बूंदें मिल जाती हैं।

यानी केवलज्ञान में शब्दों की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। संपूर्ण ज्ञान को शब्दों की आवश्यकता नहीं है।

मिटने में अज्ञान का
देश में विज्ञान का
संपूर्ण ज्ञान केवलज्ञान का
बड़ा ही महत्व है

चलने में आहट का
परीक्षा में घबराहट का
इंसान की मुस्कुराहट का
बड़ा की महत्व है

पानी में खौलने का
बनिया में तौलने का
जीवन कम बोलने का
बड़ा ही महत्व है

जेब में मनी का
थैले में तनी का
भगवान की दिव्यध्वनि का
बड़ा ही महत्व है

मंजिल सवार की है, घोड़े की नहीं

जितना तेज दौड़ने वाला घोड़ा होगा, उतनी जल्दी मंजिल पर पहुँचायेगा, शर्त इतनी है कि घोड़े का सवार, घोड़े को अपने हिसाब से चला रहा है, यहाँ घोड़ा अपने हिसाब से दौड़ रहा है। यदि घोड़े का सवार घोड़े को अपने हिसाब से चलाना जानता है तो मंजिल मिलना तय है और यदि घोड़ा तेज दौड़ रहा है, सवार के हिसाब से नहीं, वो अपने हिसाब से, तो कितना भी तेज दौड़ ले मंजिल कभी नहीं मिलेगी।

क्योंकि मंजिल सवार की होती है, घोड़े की नहीं, घोड़ा तो पहुँचाने में सहायक है। इसलिये मन घोड़ा है और आत्मा सवार है, यदि आत्मा जाग्रत नहीं, तो कितना भी तेज मन दौड़ ले सुख नहीं मिल सकता, वरना वो किसी न किसी गड्ढे में जरूर गिरायेगा। इसी तरह यदि मन को अपने हिसाब से चलाया गया, तो यह आत्मा का अहित अवश्य कर देगा। इसलिये मन पर संयम की लगाम आवश्यक है। जिसके मन पर संयम है, वह संसार में विजय यात्रा कर सकता है।

कुछ लोग मन को मूड कहते हैं, चलो मंदिर चलें, मूड नहीं है, माला फेर लो, मूड नहीं है। अच्छे काम करने का मन क्यों नहीं कर रहा क्योंकि पूर्व में संस्कार नहीं डाले और अभी भी नहीं डाले, तो आगे तो रास्ता ही बंद हो जायेगा। अतः जैसे घोड़े को लगाम लगाकर संस्कारित किया जाता है, वैसे ही संयम की लगाम से मन को संस्कारित किया जाता है। मन को सोचने के संस्कार दिये जाते हैं। तब मन अच्छा सोचता है। कल परिवार आया, पिता बोले माताजी मेरा बेटा पढ़ने में बहुत होशियार है, मैं कह रहा हूँ, आईएएस की तैयारी कर ले। मैंने पूछा क्या करना चाहते हो? वो बोला आर्ट लेकर पढूंगा। मैंने पूछा आईएएस की पढ़ाई क्यों नहीं करना चाहते? वह बोला झूठ बोलना पड़ेगा, नेताओं की गल्तियों को दबाना पड़ेगा। उनसे दबकर काम करना पड़ेगा। ये मुझसे नहीं होगा। बुद्धि तेज है, पर पुराने संस्कार कह रहे हैं, गलत काम नहीं करना।

मन और योग। योग का महत्व जोड़। जब मन बाहर के पदार्थों से जुड़ता

है, तब वह मनोयोग होता है। जुड़ने से अनेक तरह के संकल्प-विकल्प होने लगते हैं। राग द्वेष के द्वारा अच्छे-बुरे भाव उत्पन्न होने लगते हैं और कर्म बंधन प्रारंभ हो जाता है। जैसे आपके घर में लाइट के तार की फिटिंग पूरी है, सारी मशीन लगी है। पर अभी पॉवर हाउस से कनेक्शन नहीं लिया तो बिल नहीं आयेगा। जैसे ही कनेक्शन किया मीटर घूमना स्टार्ट हो जायेगा, बिल आना शुरू हो जायेगा। नहीं भी जलाओगे, तो भी मीटर तो घूमेगा क्योंकि कनेक्शन है। जलाओगे तो ज्यादा घूमेगा बिल ज्यादा आयेगा। ऐसे ही मन का कनेक्शन बाहरी पदार्थों से होते ही, कर्म का मीटर शुरू हो जाता है। खाली बैठे हो, कुछ नहीं कर रहे, तो भी कर्म तो आ रहा है क्योंकि कनेक्शन कट नहीं किया। मन से काम अधिक ले रहे हो, तो भी कर्म अधिक आयेगा। यदि हम सो भी रहे हैं, तो भी कर्म का मीटर चालू है।

उस बिजली से आप क्या काम कर रहे हो, बिजली को मतलब नहीं है। बिजली का काम तो मीटर घुमाना है। बिजली कौन यूज कर रहा है यह तो उस पर निर्भर कर रहा है। बिजली का सही उपयोग करोगे, तो उत्पादन करायेगी। गड़बड़ किया, तो जान भी जा सकती है। ऐसे मन का सदुपयोग किया तो जिन्दगी बना देगा। उपयोग करना नहीं आया, तो जिन्दगी मिटा देगा।

यही मन और पाँच इंद्रिय भगवान महावीर के पास भी थीं। यही मन और इंद्रियाँ आ. कुन्द कुन्द स्वामी के पास भी थीं। यही हमारे अन्य मुनिराजों के पास भी हैं और यही हम सबके पास भी हैं। जिसने इसका उपयोग आत्मा के लिये किया वह तो तर गया और जिसने बाहर के भौतिक सुख में किया, वह मर गया। तो हमें तरना है या मरना है, दोनों शक्ति हमारे पास में है और निर्णय हमें लेना है।

कम्प्यूटर में माऊस का
रहने के लिये हाउस का
मनरूपी पॉवर हाउस का
बड़ा ही महत्व है

शरीर में दिल का
दुकान में बिल का
पाने में मंजिल का
बड़ा ही महत्व है

सेना में जवान का
किताब में निशान का
घोड़े की लगाम का
बड़ा ही महत्व है

मन दो मुहा है

इंसान को मन मिला, इसलिये सोचने समझने की शक्ति मिली, हेय उपादेय का ज्ञान मिला। वस्तु पदार्थ तत्त्व को जानने की शक्ति मिली क्योंकि इंसान के पास विशेष शक्ति मन है। मन के द्वारा आत्मा की अनंत शक्तियाँ प्रगट होने की सामर्थ्य है। संसार में सारी खोज, सारी उन्नति मानव मन के द्वारा ही निर्मित है। पशु तो पशु के स्तर पर ही जी रहे हैं, पर मानव ने मन के द्वारा बहुत विकास किया है। अध्यात्मिक भी और भौतिक भी।

आत्मा जैसे अन्य इंद्रियों के द्वारा अपना कार्य करती है, वैसे ही मन भी इंद्रिय नहीं है पर मन को भी दो भागों में विभक्त किया गया—द्रव्य मन और भाव मन। हृदय के पास कमल के आकार का स्थान है, जिसे भगवान महावीर ने द्रव्य मन कहा है और उसमें जो विचार रूप शक्ति है, वह भाव मन है। जब भी आपको कोई बहुत अच्छा लगता है, या किसी आनंद अनुभूति के समय व्यक्ति का हाथ स्वयंमेव हृदय के ऊपर रखा जाता है और कहते हो आनंद आ गया। ये पता नहीं है कि वहाँ क्या है पर स्वयंमेव हाथ हृदय में गया। अर्थात् द्रव्य मन यहीं पर है।

विचारों को इकट्ठा करने का स्थान है दिमाग (मेमोरी) जब दिमाग में चिंता के विचार ज्यादा इकट्ठे हो जायें, तो हाथ स्वयंमेव सिर पर रखा जाता है। अर्थात् चिंता के विचारों को कम करने को कह रहा। दिमाग पर बोझ ज्यादा हो रहा है। विचारों को स्टोर करने का काम दिमाग में होता है। और दिमाग का संचालन मन के द्वारा होता है। मन सही है, तो दिमाग सही चलता है। वरना मन भी गलत विचार इकट्ठे करने लगता है।

इंसान निराश होता है, तो मन के द्वारा होता है और उत्साह से भरता है, तो मन के द्वारा भरता है। यदि इंसान के अंदर देवत्व के गुण आते हैं, तो मन में आते हैं और इंसान पशुओं जैसे कार्य करे, तो वह भी मन के द्वारा ही करता है। घर को नरक बनाता है, तो मन के द्वारा, क्रोध, क्लेश कराके और स्वर्ग बनाता है, तो

मन को समझा कर शांति और संतोष के द्वारा। आज तक किसी महिला के गले ने, गले में पहनने को हार नहीं माँगा, हार माँगने वाला मन है। हाथ की चूड़ी हो या सोने के कंगन, मन के द्वारा लोभ और मान कषाय ही माँगती है। अर्थात् आत्मा मन के द्वारा ही सारे अच्छे बुरे कार्य करती है।

इंसान धर्मात्मा है, तो मन के कारण अधर्मात्मा है, तो मन के कारण। आस्तिक और नास्तिक भी मन के कारण होता है। कोई नरक जाता है, तो मन के कारण कोई स्वर्ग जाता है, तो मन के कारण। यदि किसी को सुधारना है, तो वह है मन। मन को सुधारते ही जीवन अपने आप सुधर जायेगा।

अरे सुधारक जगत की चिंता मत कर यार।
तेरा ही मन जगत है, पहले इसे सुधार॥

मन चालाक भी है, होशियार भी है, राजनीति भी करता है छुपाता भी है और प्रगट भी करता है। यही कारण है कि मन मायाचारी करता है और फिर मनोयोग को समझने के लिये चार भेद समझना आवश्यक हैं, जो कर्म बंध में कारण है।

सत्य मनोयोग—सम्यग्ज्ञान के विषय भूत पदार्थों का ज्ञान सत्य रूप मन के द्वारा होना

असत्य मनोयाग—मिथ्यात्व विचार को।

मन दो मुहा है, मन दोगला है। जिसके साथ रहता है उसकी बजाता है। ये बाहर के पदार्थों से जुड़ने की शक्ति भी रखता है और आत्मा से जुड़ने की भी शक्ति रखता है। बाहर जुड़ता है, तो कषायों के द्वारा इच्छाओं, आकांक्षाओं को उत्पन्न करना और उनकी पूर्ति के उपाय करना, ये दोनों काम मन करता है। वहाँ से सही गलत का ध्यान नहीं रखता। जबकि मन आत्मा का प्रतिनिधि है। उसे आत्मा का हित ध्यान में रखकर बाहर के पदार्थों से जुड़ना चाहिये। आत्मा की भावना का ध्यान रखना चाहिये। मगर मन बना तो, पुद्गल स्कंधों से है और मन के विचार में कर्म भी कारण है। अतः मन मर्जी से कार्य करने लगता है।

मन को हेय उपादेय का ज्ञान कराना पड़ता है। अच्छे बुरे की पहचान करानी पड़ती है। पहचान कराने के बाद मन फिर अहित से बचने का प्रयास अवश्य करता है। आत्मा का ज्ञान न होने पर, वह आत्मा के विषय में भी विचार करता है। नहीं होने पर जिससे परिचित होता है, उसी का काम करता है। मन पदार्थों की पहचान करके जहाँ वह सही समझता है, वहाँ के लिये पूरा प्रयास करता है।

मन चालाकी भी कराता है, मन राजनीति भी कराता है, जब वह कषायों के वशीभूत होता है। मन केवल ड्राइवर है, गाड़ी कहाँ ले जानी है, यदि कर्मों का जोर

हुआ, तो गाड़ी कषाय के अनुसार चलती है। यदि आत्मा की शक्तियां जाग्रत हुई, तो गाड़ी आत्मा के अनुसार चलती है। दोनों के बीच द्वंद्व चलता रहता है। कभी कर्म जोर मानते हैं, कभी आत्मा जोर मारती है और मन दोनों के प्रति समान है, मन पानी के समान है, कषाय का रंग चढ़ा, तो वैसा दिखने लगता है और आत्मा का ज्ञान का रंग चढ़ा, तो वैसा हो गया। मन का काम तो केवल संबंध स्थापित करना है। मीडियेटर है। इस मन से आत्मा काम ले या शरीर, उससे उसे फर्क नहीं पड़ता। फर्क पड़ता है शरीर को, फर्क पड़ता है आत्मा को। आत्मा ने कहाँ उपवास किया है, शरीर ने उपवास किया। फर्क शरीर पर पड़ा, पर आत्मा प्रसन्न है।

आज तक आत्मा पर मोह और कषायों के संस्कार ज्यादा हैं, इसलिये इनकी तरफ जल्दी खिंचता है। संसार के कार्यों में रुचि लेता है। मन प्रसन्न होता है। बिना सिखाये सीख जाता है। एक बार देखा और सीख जाता है। ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती क्योंकि ये संस्कार जन्म-जन्म के हैं। जो भी कार्य हम कर रहे है, वह अगले जन्म के लिये बीज डाल रहे हैं और जो भोग रहे हैं, वह पिछले जन्म में डाले बीज का फल है। इसलिये जिन्दगी में हर कार्य बड़े सोच समझ कर करना पड़ता है। फिर भी कहीं न कहीं चूक हो ही जाती है। पिछले जन्म का कर्म फल मानकर, पुरुषार्थ में कमी नहीं करना है।

बारात में वर का
पानी में सरोवर का
मन रूपी ड्राइवर का
बड़ा ही महत्व है

आहार की विधि का
चक्रवर्ती की निधि का
आत्मा का प्रतिनिधि का
बड़ा ही महत्व है

सूरज के उदय का
पापो के विलय का
मनुष्य के हृदय का
बड़ा ही महत्व है

मंदिर में मूर्ति का
भोजन की पूर्ति का
आनंद की अनुभूति का
बड़ा ही महत्व है

भगवान आदेश नहीं, उपदेश देते हैं

संपूर्ण परिवार पर शासन करने का अधिकार हर एक इंसान को चाहिये। वह चाहता है, जो मैं कहूँ, वह ही हो, कोई उसके काम में हस्तक्षेप न करे। घर का हर सदस्य मेरे इशारे पर चले। परिषद् चाहता है, मोहल्ले वाले मेरे हिसाब से चलें। विधायक चाहता है, जिले के लोग मेरे हिसाब से चलें। मुख्यमंत्री चाहता है, राज्य में वही हो, जो कहूँ, सब मेरे कहे अनुसार चलें। प्रधानमंत्री चाहता है कि देश मेरे अनुसार चले। संभव नहीं है कि ऐसा सब हो जैसा चाहता है। दुकान पर पिता चाहता है, दुकान मेरे हिसाब से चले, पुत्र कहता है, आप पुराने जमाने के हैं, दुकान मेरे हिसाब से चले। घर में सास-बहू के बीच झगड़े का कारण यही होता है। पति चाहता है, बच्चे मेरी मानें, पत्नी कहती है, बच्चे मेरी मानें। सारा संसार इसी अधिकार में लड़ता रहता है और जीवन समाप्त हो जाता है। चलती उसकी है, जो होना होता है, बाकी सब क्लेश का कारण बनता है।

मेरी चले, मेरा अधिकार, ऐसे भाव उमड़ने का कारण है, मान कषाय। अभिमान की पूर्ति होती है, अपनी-अपनी चलाने में। न चलने पर दुःखी होता है, शोक करता है। ये नव नोकषाय है। भगवान कभी नहीं कहते कि मेरी चले, शांति से ध्यान में बैठे हैं। मैं मंदिर का मालिक हूँ, मेरी मानो। मेरे अनुसार चलो। उन्होंने मान कषाय का त्याग किया तब उनके हृदय भाव कोमल हुआ, नरम हुआ इसीलिये भगवान आदेश नहीं, उपदेश देते हैं।

त्याग धर्म के पश्चात् मेरेपन का भाव समाप्त हो जाता है। जब मेरेपन का भाव समाप्त हुआ, तो आदेश देने के कारण समाप्त हो गये। अब तो प्रभु भक्तों को दुःख से बचाने के लिये उपदेश देने लगे। उपदेश का मतलब 'धर्म करना चाहिये'। आदेश का मतलब 'धर्म करना पड़ेगा'। यदि कोई उपदेश न माने, तो क्रोध नहीं आता। यदि कोई आदेश न माने, तो क्रोध आता है। अतः प्रभु ने केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात उपदेश दिया। सामूहिक दिया, कोई भी सुने, चारों गति के जीवों के लिये

है। आदेश कुछ व्यक्तियों तक सीमित रहता है। प्रभु का ज्ञान असीमित है, उनका उपदेश भी असीमित जीवों के लिये। आदेश असीमित लोगों के लिये नहीं हो सकता।

जैसे—श्रीमद् महाज्ञानी रायचन्द जी लिखते हैं कि जब मुझे थोड़ा ज्ञान था, तब मैं सब को सुनाना चाहता था। जब वास्तविक यथार्थ ज्ञान हुआ तब मैं आँख बंद करके बैठ कर खुद को सुनाता हूँ। जब अभिमान के साथ ज्ञान होता है, तो दूसरों को शासन में रखना चाहता है। जब सच्चा ज्ञान होता है, तब स्वयं को अनुशासन में रखता है।

बाहरी ज्ञान बाहर का शासन चाहता है, आत्मा का ज्ञान स्वयं पर अनुशासन चाहता है। बाहर के ज्ञान के साथ अभिमान आता है। आत्मा के सच्चे ज्ञान के साथ अभिमान समाप्त होता है। आज का मानव बाहर की ओर भाग रहा है, इसलिये अभिमान बढ़ रहा है। अभिमान अधिकार चाहता है, अधिकार पाने के लिए हिंसा करता है, दूसरों को दुःख देता है, कष्ट पीड़ा परेशानी पैदा करता है। क्रोध करता है, मायाचारी और लोभ करता है। झूठ भी बोलता है, चोरी भी करता है, कुशील भी करता है।

घोड़े की रेश का
कार्यों में विशेष का
भगवान के उपदेश का
बड़ा ही महत्व है

दर्द में लेप का
देखने में मैप का
नहीं करने में हस्तक्षेप का
बड़ा ही महत्व है

बोलने में मित का
जीवों के हित का
ज्ञान में असीमित का
बड़ा ही महत्व है

अनाज में चने का
गर्मी में पने का
शांति से बैठने का
बड़ा ही महत्व है

पक्षी में पाख का
पेड़ पर शाख का
देखने में आँख का
बड़ा ही महत्व है

ध्यान

ध्यान इंसान के जीवन का सबसे बड़ा गुण है। अनंत काल से मोह के भटकाव के कारण आत्मध्यान एकाग्रता में नहीं कर पाये। किन्तु मनुष्य पर्याय में ध्यान संभव है।

ध्यान से क्या-क्या कार्य संभव हो सकते हैं, जानकर आप आश्चर्यचकित हो जाओगे। ध्यान की शक्ति अनंत और अपार है। यह शक्ति हम सबके अंदर विद्यमान हैं। बस इस शक्ति को जानकर इसका अभ्यास करना है, वर्तमान में ध्यान करने का भाव नहीं होता। भाव बनाये, तो ध्यान में क्या करें? ये पता नहीं चलता। ध्यान करने की विधि सीख लें, तो एकाग्रता नहीं बनती। एकाग्रता इसलिये नहीं बनती कि ध्यान का अभ्यास नहीं है और लोग चाहते हैं, एक दिन में घंटों ध्यान कर ले। बच्चा एक दिन में चलना नहीं सीखता, बच्चा एक दिन में बोलना नहीं सीखता। एक दिन में स्कूल की पढ़ाई पूरी नहीं होती। सालों लग जाते हैं, एक विषय की थोड़ी सी पढ़ाई करने में। एक दिन में दुकान चलाने का अभ्यास नहीं होता। एक दिन में वकील, डाक्टर, एक्सपर्ट नहीं बन पाते, तो एक दिन में आप ध्यान कैसे कर पाओगे? ध्यान के लिये भी अभ्यास चाहिये और अभ्यास भी उतने समर्पण के साथ चाहिये, जितना समर्पण दुकानदार का दुकान के प्रति होता है। वकील और डाक्टर का अपने कैरियर के प्रति होता है, एक माँ का समर्पण जितना बच्चे के प्रति होता है। तब कहीं जाकर ध्यान में एकाग्रता बनेगी अनंत जन्मों की भटकी आत्मा को स्थिर करने के लिए पुरुषार्थ में पूर्ण समर्पण चाहिये।

ध्यान क्यों करें?

इंसान अपनी प्रापर्टी की सुरक्षा क्यों करता है? इंसान अपने परिवार की रक्षा क्यों करता है? इंसान अपने दुकान, मकान की चिंता क्यों करता है? क्योंकि वो उसकी प्रॉपर्टी को अपना मानता है, क्यों वो परिवार को अपना मानता है, क्योंकि वो दुकान मकान को अपना मानता है। अनंतकाल से हमने, जो मेरा नहीं है, उसको अपना

माना है, अनंतकाल के मोह के संस्कार मनुष्य भव में साथ चले आये हैं और यहाँ भी हम वही कर रहे हैं।

मनुष्य भव में चेतना के जाग्रत होने का अवसर है, जीव और जड़ का भेद विज्ञान करने का अवसर है, जो मेरा नहीं है, उसे छोड़ने का अवसर है, जो वास्तव में मेरी प्रापर्टी है, उसे पाने का अवसर है। बाहर में जितने पदार्थ को अपनी प्रापर्टी मानते हो वो सब मरण के बाद यही रह जायेंगी। इसलिये अपनी आत्मा की प्रापर्टी को पहचानो और उस प्रापर्टी को प्राप्त करो। क्योंकि हमारी प्रापर्टी को हमने अनंतकाल से छोड़ रखा है, उसे संभाला नहीं, उसकी रक्षा नहीं की, राग, द्वेष, मोह, क्रोध, मान, माया, लोभ ने उस पर कब्जा कर लिया। कब्जा बहुत पुराना है, जिससे वे ही मालिक बन गये हैं। जैसे पुराने किरायेदार से मकान खाली कराना मुश्किल है, ऐसे ही आत्मा की प्रापर्टी शुद्ध ज्ञान, दर्शन, सुख और शक्ति के ऊपर कर रहे मालकियत से मुक्ति कराना मुश्किल है।

ध्यान में क्या करना चाहिये?

मुश्किल है, पर असंभव नहीं, सर्वप्रथम, स्वभाव ज्ञान दर्शन के स्वरूप को समझना होगा। बारह भावना, विराग भावना, वैराग्य भावना आदि से संसार की असारता को आत्मा के भावों से अंदर गहराई में ले जाना होगा और यह कार्य संभव होगा, ध्यान से। मन, वचन, काय को एकाग्र करके, आत्मा-परमात्मा का ध्यान करते हुये, तत्त्व चिंतन मंथन में समय लगाना होगा। जैसे चाकलेट को स्वाद ले-लेकर खाते हैं। ऐसे बारह भावना के एक-एक शब्द की गहराई में डुबकी लगानी होगी। जीव और अजीव का भेद करके मैं जीव हूँ, शरीर नहीं यह भावना भानी होगी। ओंकार ध्वनि से मन को एकाग्र करके पंच परमेष्ठी का चिंतन करना होगा। स्वयं को शांत करने, स्वयं को गुरु बन के ध्यान में स्वयं को उपदेश देना होगा। स्वयं को समझाना होगा, क्रोध, मान, माया, लोभ को छोड़ने के भाव, ध्यान में तीव्रता से बनाने होंगे।

णमोकार मंत्र के पांचों परमेष्ठी को अलग-अलग चिंतन करना होगा। श्वांसों पर सोऽहं और णमोकार मंत्र की जाप करनी होगी। कई कवियों के द्वारा बारह भावना लिखी हैं, अलग-अलग दिन में अलग-अलग बारह भावना को चिंतन में लेना पड़ेगा। इसके लिये, बारह भावनाओं का याद होना आवश्यक है। ध्यान सूत्र आचार्यों के द्वारा रचित है, उन सूत्रों को याद करके उस पर ध्यान कर सकते हैं। दिन में जो हमसे गलती हुई है, वह गलती क्यों हुई और उसे कैसे सुधारा जाये, इस पर भी चिंतन कर सकते हैं।

भगवान की मूर्ति को अपने ध्यान में लाओ। फिर उन्हें देखकर सोचो कि इन परमात्मा जैसी मेरी आत्मा भी है। ये मोक्ष में क्यों गये? इन्होंने ऐसा कौन-सा कार्य किया, जो भगवान अनंत सुखी हो गये। 10 धर्म, 12 तप, 5 महाव्रत, 5 समिति, 3 गुप्ति, षट् आवश्यक, 22 परीषह सहन किये और व्रतों का निरतिचार पालन करते हुये, ध्यान किया। जिससे भगवान कर्म बंधन से रहित हो गये। यदि मैं भी इनको करूं, तो मैं भी भगवान बन सकता हूँ। भगवान ने क्रोध, मान, माया, लोभ छोड़ा पांच पाप छोड़े, राग, द्वेष, मोह छोड़ा। फिर ध्यान में महसूस करो कि मैंने भी क्रोध, मान, माया, लोभ, छोड़ दिया। फिर शांति महसूस करो। बैठे रहो भगवान की शांत मुद्रा देखकर शांति महसूस करो।

ध्यान में स्थिरता लाने के लिये क्या करें

भगवान ने 12 तप और 22 परीषह ध्यान की स्थिरता के लिये बताये हैं, जो बारह तप का अभ्यास और 22 परीषह का अभ्यास कर लेता है, वह महायोगी, महाध्यानी बन सकता है। तप और परीषह एक दिन में नहीं हो पाते, इसके लिये भी धीरे-धीरे अभ्यास करें। बारह तपों को भावनाओं में आत्मसात करें, प्रेक्टीकल करने का प्रयास करें। बाइस परीषह याद करके पहले उन पर ध्यान करें कि मुनिराजों ने बाइस परीषह कैसे सहन किये थे। अभ्यास करने से तो असंभव भी संभव हो जाता है।

ध्यान की सिद्धि के लिये वचनों पर संयम रखें

ध्यान करने का इच्छुक प्राणी जितनी जरूरत है, उससे भी कम बोले। क्योंकि वचनों पर संयम नहीं होगा, अनर्गल प्रलाप से क्लेश होगा, क्लेश से तो ध्यान में स्थिरता आ ही नहीं सकती। इसलिये कम से कम बोलें। जन संपर्क करें। जिनसे व्यर्थ विचार मिलते हैं, उनसे दूर रहें। जिनसे बात करने पर ज्ञान वृद्धि हो, उनसे धर्म चर्चा अवश्य करें। अधिक से अधिक मौन रहें। स्वाध्याय का समय बढ़ायें।

तलवार में म्यान का
ज्ञानों में सम्यग्ज्ञान का
करने में ध्यान का
बड़ा ही महत्व है

होने में अच्छी नियत का
कार्य में महत् का
नहीं करने में मालकियत का
बड़ा ही महत्व है

परिस्थिति नहीं, मनःस्थिति बदलो

हर व्यक्ति अनेकों समस्या से घिरा है। जिसको देखो वही कहता है, मैं बहुत परेशान हूँ, मेरे बहुत समस्या है। जीवन में समस्या होना, यह मनुष्य मात्र की कहानी नहीं है, समस्या होना, यह प्राणी मात्र की कहानी है। समस्या चारों गति में है। पर समस्या का संपूर्ण समाधान मनुष्य गति में है। चारों गति के जीव परेशान हैं। जिनके पास मन है, वे परेशानी को ज्यादा महसूस करते हैं और परेशानी दूर करने का उपाय भी करते हैं, पर जिनके पास मन नहीं है, वे परेशानी को महसूस कम करते हैं पर परेशानी से बचने का उपाय कर भी सकते हैं और नहीं भी कर सकते।

हर व्यक्ति कहता है, मैं परेशान हूँ। उसे कहना चाहिये, हम सब परेशान हैं। संसार का दूसरा नाम परेशानी ही है।

जीवन है तो समस्या है

समस्या नहीं, तो जीवन का पता नहीं चलेगा। जीवन को सुखी करने के लिये, वर्तमान की पर्याय को बचाने के लिये हमारा संघर्ष प्रतिक्षण होता है। जीवन का पता तब ही चलता है, जब वह जाने लगता है। जब तक समस्या न हो, तो सामान्य जिन्दगी में सुख है, ये भी पता नहीं चलता। सुख का पता ही, दुःख के कारण चलता है। यदि दुःख न हो, तो मेहनत किसके लिये करोगे। अतः सुख के बीच में आने वाली बाधा का नाम है परेशानी, समस्या, दुःख, संकट, पीड़ा।

जैसे—एक व्यक्ति पेड़ को हरा-भरा रखने के लिये पेड़ की हर पत्ती को पानी देता है। हर पत्ती का इलाज अलग-अलग करता है, पर दूसरा व्यक्ति पेड़ को हरा-भरा रखने के लिये पेड़ की जड़ में पानी डालता है, जिससे संपूर्ण पेड़ हरा-भरा हो जाता है। ठीक इसी तरह की हर समस्या का समाधान करना, यह पेड़ की पत्तियों में पानी डालने के समान है और धर्म करके आत्मा को सुखी करना, यह जड़ में पानी डालने के समान है। संसार का हर प्राणी हर पत्ती पर पानी डालने के समान ही कार्य कर

रहा है। चारों गति में दुःख दूर करने का यही उपाय चल रहा है। जो बीमारी हुई है, उसकी दवाई खाली, फिर दूसरी बीमारी हो जाती है। दवाई ऐसी हो, जो कोई बीमारी ही पैदा न होने दे। उस दवाई का नाम है धर्म। चारों गति में छोटे-छोटे उपाय हैं, पर इसका पूरा इलाज मनुष्य गति में किया जा सकता है।

चारों गति की समस्या

नरक गति–जो लोग कहते हैं, मैं बहुत परेशान हूँ और परेशानी को दूर करने के लिये आत्महत्या के भाव बनाते हैं, उन्हें नरक गति का चिंतन अवश्य करना चाहिये। जहाँ एक क्षण को भी शांति की सांस नहीं ले पाते। हर क्षण कोई मारता है, कोई काटता है, कोई तेल में उबालता है, कोई अग्नि में जलाता है, कोई दहाड़-दहाड़ कर गालियां देता है, अपशब्द और कर्कश वचन बोलता है। इतनी लंबी आयु में कुछ पल का भी सुख नहीं है। वह है नरक। ऐसी नरक की यातनाएँ हम भोग चुके हैं। ऐसी पीड़ायें सहन करके हम मनुष्य गति में आये हैं। यहाँ पर नरक समान पीड़ा तो नहीं है। और यहाँ पर अनेक उपाय भी हैं। जितना संघर्ष नरक में है, अन्य गतियों में नहीं है।

पशु गति–तिर्यंच गति–सर्दी, गर्मी, वर्षा

हम नरकों के दुःखों को शास्त्रों से जान सकते हैं। पर पशुगति के दुःख तो हम आँखों से देख भी सकते हैं। पशुओं में ऐसा कौन सा पशु है, जिसके जीवन में कष्ट नहीं है। सर्वप्रथम तो सर्दी में ठिठुरते रहते हैं। छोटे-छोटे कुत्तों के बच्चों को देखो, एक के ऊपर एक लदकर सर्दी से बचने का प्रयास करते हैं। बंदरों के दांत किटकिटाते हैं और छींक आदि भी लेते हैं। गाय, भैंस, घोड़ा, गधा कौन से पशुओं को सर्दी से बचने को कपड़े मिलते हैं। रात्रि में कौन सा रजाई, कंबल मिलता है। गद्दा की जगह ठंडी-ठंडी जमीन पर ही बैठना पड़ता है। गर्मी के दिनों में धूप में ही घूमते हैं। पंखा, कूलर, ए.सी. कोई व्यवस्था नहीं है। मैंने एक शहर में ध्यान दिया कि दीवाल के किनारे थोड़ी सी छाया थी, वे सभी उस छाया में इकट्ठे हो जाते। इसका मतलब उन्हें पता है, छाया खत्म हो जाती तो, धूप ही सहन करते हैं। बारिश आती है, तो भी कोई स्थान नहीं कि अपने को बचा सकें, बारिश कम हो या अधिक, पूरा कष्ट झेलना पड़ता है।

बीमारी में दवा नहीं मिली

आपने किसी गाय को देखा हो कि उसके ऊपर मक्खी बैठती है, तो वह पूंछ से मक्खियां उड़ाती है। अर्थात् मक्खी, मच्छर, कीड़े आदि उन्हें काटते हैं पर उनसे बचने का कोई उपाय नहीं है। गंदगी वाले स्थान पर ही रहना पड़ता है। कई बार सांप, बिच्छू आदि भी काट लेते हैं, जिससे तड़पते-तड़पते उनकी मृत्यु भी हो जाती है। अनेक तरह की बीमारियाँ हो जाती हैं, जिस पशु का कोई मालिक हो, तो इलाज मिल जाता है और न हो तो तड़पना ही पड़ता है। गाय दूध न दे तो डंडे भी खाने पड़ते हैं और बूचड़खाना भी जाना पड़ता है। बैल को बैलगाड़ी में जोतकर उससे भार ढोने का काम करवाते हैं। जब ढो नहीं पाता, तो डंडे की मार खानी पड़ती है।

कौन पूछता है खाने को—समय पर खाना पानी मिलता हो, ये भी जरूरी नहीं है। जो पशु बिना मालिक के होते हैं, उनको भोजन मिलना भी मुश्किल होता है। मैंने कई-कई गाय आदि को देखा है कि बहुत कमजोर होती है, दुबली पतली बीमार पर उनकी तरफ ध्यान देने वाला कौन है? खाने के लिये सब्जी बाजार जाती है, तो सब्जी कम, डंडे ज्यादा खाती है। घोड़ा बने तो तांगा में लगा कर बोझा ढोया, नहीं ढोने पर वहीं कष्ट मिलते हैं। जंगल की तरफ देखें, तो निर्बल शेर चीता आदि बलवान जीवों के द्वारा खाये जाते हैं, सताये जाते हैं और कभी शेर भी मनुष्य की पकड़ में आ जाये, तो वह भी सताया जाता है। चंचल बंदर भी अनेक तरह के कष्ट सहन करते हैं। अनेक पशुओं को बूचड़खाने में मृत्यु के घाट उतार दिया जाता है। इंसान ने तो छिपकली तक को नहीं छोड़ा। अर्थात् यह बात तो केवल पंचेन्द्रिय पशु गति की है। जिनके पास मन है, जो दुःख को जानते हुये सहन करते और दुःख को दूर करने का कोई उपाय भी नहीं कर पाते। क्या ये संघर्ष नहीं है?

इसके अलावा एकेन्द्रिय, दो इंद्रिय, तीन इंद्रिय, चार इंद्रिय प्राणी के जीवन में दुःख ही नहीं, दुःख का पहाड़ है। एकेन्द्रिय पेड़ों को काटा जाता है, फूलों को तोड़ा जाता है। हवा को भी चीरा जाता है, पृथ्वी को खोदा जाता है, जल के जीवों को उपयोग करने पर, वे पीड़ित होते हैं। अग्नि को कूटा जाता है, तब इन्हें बहुत कष्ट होता है। दो इन्द्रिय लट, केंचुआ बनते हैं, तो चींटियां उन्हें काटती हैं, वे तड़पते हैं, पर वे नहीं छोड़तीं, इस दृश्य को मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है। चीटियों का झुंड लट पर चिपककर उन्हें काट रहा था, मैंने छुड़ाने का प्रयास किया, पर उन्होंने नहीं छोड़ा। अचानक एक चिड़िया आई और वह दोनों को खा गई। उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई।

बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, नदी किनारे ऐसा भी देखा गया है कि सांप के मुँह में मेंढक और मेंढक फिर मछली पकड़ने का प्रयास कर रहा है। अर्थात् उसे अपनी मृत्यु नहीं दिख रही बल्कि सामने वाला शिकार दिख रहा है। प्रकृति में ज्यादा से ज्यादा जीवन माँसाहारी हैं। वे एक दूसरे को कष्ट देते रहते हैं। सांपों को अनेक तरह के कष्ट हैं। हमें केवल अपनी परेशानी ही बड़ी लगती है। नजर उठाकर देखो कौन सा जीवन सुखी है। कुछ लोग अपने घर में तोता, मैना, कुत्ता, बिल्ली, बंदर, चूहा पालते हैं, वे अपने परिवार से दूर होते हैं, तो अत्यंत कष्ट होता है। समुद्र में बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है। घर में ऑल आउट आदि लगाकर मच्छरों को मार देते हैं।

मनुष्य भव की विपत्तियां

इष्ट वियोग, अनिष्ट संयोग, दीन का दुःख, गरीबी से दुःखी, कोई बीमारियों से परेशान, कोई लड़ाकू पत्नी से परेशान, कोई भाई से परेशान, कोई पुत्र नहीं है इसलिये परेशान, कोई पुत्र मृत्यु होने के कारण परेशान, कोई पुत्र संस्कार विहीन होने के कारण दुःखी, कुछ दुःखों की गिनती है, पर इनके भेद प्रथेद करें, तो अनंत जीवों के, अंनत दुःख हो जायेंगे। हर जीव हजारों दुःख का भार लिये घूम रहा है। जिससे जितना बनता है, दूर करने का प्रयास कर रहा है। बाहर का कष्ट जब आत्मा में चिंता रूप में होता है, तब वह दुःख बन जाता है। क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह, राग, द्वेष के हथियार से दुःख दूर करने का उपाय करता है, पर परिणाम उल्टा ही निकलता है। दुःख कम नहीं होता और बढ़ जाता है। सारी जिन्दगी हम यही करते हैं और दुःख दूर करने का वास्तविक उपाय कर ही नहीं पाते हैं। जब से थोड़ी सी समझ शुरू होती है, दुःख दूर करने के उपाय करने प्रारंभ कर देते हैं, पर बुढ़ापा आते-आते इतने दुःखों से भर जाते हैं कि भगवान से कहते हैं कि भगवान अब नहीं जिया जाता, बस बुला ले अपने पास।

गलती कहाँ हो रही है

दुःख बाहर से आता है या अंदर से? दुःख के कारण अंदर हैं या बाहर, या दोनों के मिलने पर दुःख आता है। दुःख कोई हमें देता है या दुःख हम स्वयं अपनी इच्छा से ग्रहण करते हैं? दुःख वास्तव में है या हम दुःख को व्यर्थ में दुःख मान रहे हैं? इन प्रश्नों पर चिंतन गहराई से किया जाये 75% दुःखों से दूर होने का उत्तर स्वयं के द्वारा स्वयं से मिल जायेगा। यदि चिंतन की धारा स्वयं जाग्रत नहीं हो रही

है, तो भगवान महावीर की वाणी को शास्त्रों में पढ़ो, चिंतन जाग्रत करो। संसार को अपनी आँखों से नहीं, बल्कि भगवान महावीर की आँखों से देखो, वर्तमान परिस्थिति के हिसाब से नहीं सोचो, बल्कि भगवान महावीर की कही वाणी के अनुसार सोचो। फिर देखो जीवन में कितने दुःख हैं, कितने नहीं हैं।

धर्म परिस्थिति नहीं, मनःस्थिति को ठीक करता है

सामने दिखने वाली परिस्थितियाँ यदि हमारे अनुकूल नहीं हैं, तो हम उन परिस्थितियों को बदलने में पूरी मेहनत करते हैं, जब नहीं बदलती हैं, तो हम दुःखी हो जाते हैं। हम सबको बदलना चाहते हैं। यहाँ तक कि मौसम प्रकृति को बदलने की भी इच्छा रखते हैं। अब बारिश होनी चाहिये। अब तो गर्मी कम हो जानी चाहिये। इस बार ठंड कम पड़ी, ज्यादा होनी चाहिये थी। मच्छर बहुत हो रहे हैं, इन्हें नहीं होना चाहिये और आपके अनुसार न हो, तो आप परेशान हो जाते हो। परिस्थिति को बदलने में आप समर्थ नहीं, पर मनःस्थिति को बदलने में आप समर्थ हो। हम अपने शरीर की स्थिति को अपने अनुसार नहीं कर पाते। केवल चिंता ही कर पाते हैं, बाल झड़ जाते हैं, अनेक बीमारियाँ होती हैं, रूप रंग में परिवर्तन हो जाता है। बाल सफेद हो जाते हैं, हम कुछ नहीं कर पाते, तो हमें अपनी मनःस्थिति बदलकर सही सोच को मन में स्थान देकर सुखी हो जाना चाहिये।

राजनीतिक होना था, मिला वनवास

हमारे महापुरुषों के आदर्श जीवन हमें शिक्षा दे रहे हैं। राम के जीवन की ओर देखो, राजगद्दी मिलने वाली है, राजा बनने वाले हैं, और वनवासी बन गये, ये किसी आपत्ति विपत्ति से कम नहीं है, पर सम्यग्दृष्टि राम ने धर्म की शक्ति से परिस्थिति को नहीं बदला, मनःस्थिति को बदल दिया। वनवास का भी आनंद लिया, संतों का समागम, संतों का उपदेश, प्रतिदिन ध्यान, स्वाध्याय, असहाय का सहयोग। वनवास को भी आनंद से जिया, जीत हार दोनों का आनंद लो। प्रसन्न होकर वनवास गये। वर्तमान में यदि कोई चुनाव में हार जाये, तो डिप्रेशन में आ जाता है, वो तो बीमार होता ही है, उसके पार्टी के लोग भी डिप्रेशन में आ जाते हैं। जीत और हार दोनों का आनंद लूटना चाहिये। जीत में जीत की खुशी, हार में जीतने वाले की खुशी, उसका सम्मान। मगर हार का बुरा आपको नहीं लग रहा, अहंकार को लग रहा है। हार का दुःख इसलिये महसूस करते हैं कि जीत की अपेक्षाएँ ज्यादा थी, जीत की उम्मीद लगा रखी थी। यदि हार और जीत दोनों की उम्मीद करके चलते, तो इतना कष्ट

नहीं होता। ये बात इसलिये सोचना आवश्यक है कि हमारा भविष्य अज्ञात है। हमारा भविष्य हमारे हाथ में नहीं है। हम केवल मेहनत, पुरुषार्थ कर सकते हैं फल मिलना हमारे हाथ में नहीं है।

दुःख का कारण हार नहीं, अपेक्षा है

जंगल में रहने वाले मुनिराज मोक्ष के लिये, घनघोर पुरुषार्थ करते हैं, कठोर से कठोर तपस्या करते हैं किन्तु मोक्ष की प्राप्ति न हो, तो छोड़ नहीं देते बल्कि पुरुषार्थ को और बढ़ाते हैं। एक जीवन खत्म हो जाये, तो अगले जीवन में पुरुषार्थ करते हैं। भरत चक्रवर्ती 16 भव से मुनि बनते आ रहे थे, तब जाकर उन्हें 16वें भव में मोक्ष की प्राप्ति हुई। ऐसे ही भगवान पार्श्वनाथ को 10 भव, भगवान महावीर को शेर की पर्याय के बाद 10 भव लग गये। ऐसे श्री राम को भी कई भव लगे। जब महापुरुषों को इतना श्रम और संघर्ष करना पड़ा, तो हम किस खेत की मूली हैं। क्योंकि हम पुरुषार्थ कम करते हैं और फल ज्यादा चाहते हैं।

हमारे दुःख का कारण हमारी सोच है।

जितना पैसा होगा, उतना समान ही तो मिलेगा। जितना पुण्य होगा, उतना ही संसार का सुख मिलेगा। हमारे ज्यादा चाहने से ज्यादा मिल नहीं जायेगा। अतः मेहनत करो, पर फल की इच्छा के बिना, तो दुःख कम होगा। किसी की सेवा, सहयोग करो, बदले की इच्छा बिना, तो आनंद भी आयेगा, और दुःख भी नहीं होगा। हमारे पास दुःख की परिस्थिति कम है, हम दुःख स्वयं लेते हैं। अपनी मनःस्थिति को नहीं संभालने की वजह से। हमारे दुःख का कारण हमारी सोच है। बहुत सारे दुःख, गलतफहमी की वजह से होते हैं, बहुत सारे दुःख ऐसे भी हैं, जिनको महसूस न किया जाये, तो कोई जरूरत नहीं पड़ेगी।

खाली दिमाग शैतान का घर

ये कहावत अक्सर लोगों को कहते सुना है। बिल्कुल सार्थ है भी। ये दुःख भी किसी शैतान से कम नहीं है। जिस मन में, हृदय में, आत्मा में दृढ़ श्रद्धा, हेय उपादेय का ज्ञान, आचरण में सुसंस्कार होते हैं वहाँ दुःख रूपी शैतान आ ही नहीं सकता है। भगवान की कृपा, गुरु का आशीर्वाद और सरस्वती जिह्वा पर हो तो वह जीव स्वयं सुखी रहता है तथा औरों को भी सुखी करता है। कष्टों के सागर से स्वयं तिरता है, औरों का भी सहारा बनता है। उसके दिमाग में ज्ञान का उजाला

है, दुःख रूपी शैतान प्रवेश कर ही नहीं पाता है और यही मनुष्य पर्याय की सार्थकता है। बहुत से लोग दुःख दूर करने का उपाय पूछते हैं। यही उपाय है कि अपने दिमाग को खाली मत छोड़ो, उसमें अध्यात्मिक ज्ञान भरो, तो दुःख होंगे तो, पर दुःखी नहीं होंगे।

दुःख का होना अलग बात है। दुःखी होना अलग बात है। दुःख होने के बाद, दुःखी नहीं होना यही जीवन जीने की कला धर्म सिखाता है। धर्म करने की सार्थकता यही है कि दुःखमय संसार में रहकर, दुःखों से बचते हुये, अनंत सुख के स्थान में कैसे पहुँचा जाये। संसार में घुसकर जीने पर तो दुःख महसूस होंगे ही। संसार में ''कीचड़ में कमल की भांति रहो''। जैसे कमल कीचड़ में जन्म लेता है, कीचड़ में जीवन जीता है, कीचड़ से ही भोजन प्राप्त करता है, पर कीचड़ से ऊपर उठकर रहता है, कीचड़ में लिप्त नहीं रहता। ठीक इसी दुःख के कीचड़ में हमने जन्म लिया है। ये सत्य है, दुःखमय संसार को छोड़कर भी नहीं भाग सकते क्योंकि कहीं चले जाओ, दुःख तो हर जगह है। फिर क्या करें? कीचड़ में कमल की भांति अपनी सोच को ऊपर उठाओ।

पांव धरती पर, सिर आकाश में

इंसान के शरीर की संरचना ही शिक्षा देती है। पांव जमीन पर रखो पर सोच जमीन से ऊपर उठकर आकाश की तरह होनी चाहिये। जमीन पर रहकर आकाश में कैसे जिया जाये, इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है और ज्ञान की शक्ति से हम आत्मा को आकाश की ऊँचाइयों में पहुँचा सकते हैं। ज्ञान के स्तर पर जीने वाला जीव ही सुख को प्राप्त कर सकता है। जमीन पर रहकर जमीन के स्तर की सोच वाला दुःख के बीच ही जीवन खत्म करके, अगले जन्म के दुःखों को भोगने के लिये चला जाता है। बीज यहाँ डालते हैं और फसल अगले जन्म में जाकर काटते हैं। फिर पूछते हैं भगवान से, भगवान! हमने कोई गलत तो नहीं किया, मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है। भगवान कहते हैं, ये संसार है, यहाँ ऐसा ही होता है, तू सच्चा ज्ञान प्राप्त कर, सारे दुःख दूर हो जायेंगे।

दुःख चारों गति में है। पर दुःख दूर करने का उपाय केवल मनुष्य गति में है। अनंत सुख का द्वार केवल मनुष्य गति में खुलता है। ज्ञान, दर्शन, चरित्र के द्वारा और यहाँ भी छोटे-छोटे सुखों के लिये रोते रहे तो, कहाँ जाकर सच्चा सुख पायेंगे। छोटे-छोटे दुःख न करो, पूरा दुःख दूर करने की क्षमता आप में है, अपनी शक्ति को पहचानो और आत्मा को परमात्मा बनाओ।

अर्थी के पीछे भीड़ क्यों?

रास्ते से एक अर्थी जा रही थी। चार कंधों पर चल रही थी, आगे अग्नि और पीछे भीड़ चल रही थी। अर्थी के ऊपर नये कपड़े का कफन था और उस पर फूल चढ़े थे। जिस शरीर में आत्मा नहीं, उस शरीर का इतना सम्मान, जो शरीर किसी काम का नहीं उसकी अंतिम क्रिया का इतना सम्मान क्यों? लोग रसगुल्ला खा के दोना कचरे में फेंक देते हैं, बुझे दिये को कूड़े में डाल देते हैं, पर मनुष्य के शरीर को इतना सम्मान क्यों दिया जा रहा है। वहीं रास्ते में एक कुत्ता गाड़ी के नीचे आ गया था, उसकी लाश भी रास्ते पर पड़ी थी। उसे कोई किनारे भी नहीं कर रहा था। सभी किनारे से निकल रहे थे और कुछ लोग, तो उसके ऊपर से ही गाड़ी चला रहे थे। शरीर तो उसका भी है, पर उसकी अर्थी तो दूर कोई देखने वाला भी नहीं। आत्मा तो उसके शरीर में भी रही थी, पर इसके शरीर की कीमत क्यों नहीं की जा रही है? भगवान इस प्रश्न का उत्तर देते हैं।

चार गति चौरासी लाख योनि शरीर की ही होती है, जो आत्मा के द्वारा ग्रहण की जाती है। देव गति में देवताओं की मृत्यु के पश्चात् उनका शरीर कपूर की भांति उड़ जाता है, नारकियों का भी ऐसे ही है। पशु गति के शरीर तिर्यंच के शरीर में आत्मा जीवंत तो रहती है, पर उतने कार्य उस शरीर से नहीं कर पाती, जितने मनुष्य कर सकता है। पशु पक्षियों में कार्य करने की क्षमता नहीं है, इसलिये उनकी कीमत नहीं है। अहिंसा, दया और करुणा के कारण मनुष्य इनकी कीमत करता है। पर मनुष्य अपनी स्वयं की कीमत नहीं पहचानते। कुछ पशु, पक्षियों को शिक्षित करके उनसे काम लिया जाता है, जिससे लोग उन्हें अंतिम ठिकाने तक लगा देते हैं। पर जैसी अर्थी मनुष्य की निकालते हैं, वैसी नहीं। कार्य करने वाले पशु पक्षियों की अंतिम व्यवस्था प्रकृति ने की है, 'जीवो जीवति भक्षणम्' अर्थात् जीव ही जीव का भोजन है। इसलिये संसार में इतने पशु होते हुये भी किसी का मृत शरीर नजर नहीं आता।

अर्थी के पीछे भीड़ किसकी?

अर्थी के पीछे चल रही भीड़ शरीर की नहीं बल्कि आत्मा की है। उस शरीर में रहकर उस आत्मा ने जितने कार्य अच्छे किये, जिस परिवार में जन्म लिया, उनकी सेवा की। उनसे सारी जिन्दगी रिश्तेदारी निभाई, किसी को हंसाया, किसी को रुलाया, किसी को प्रेम किया, किसी से मोह किया। आयु कर्म पूर्ण हो गया, तो शरीर छूट गया। इतने दिन जिन-जिन लोगों से संपर्क किया, अब वे उसकी अंतिम क्रिया करके सम्मान दे रहे हैं। यह सम्मान उसके कार्यों का। अर्थी के पीछे होने वाली भीड़ कितनी है, यह इस बात के संकेत हैं, उसने उतने अच्छे कार्य किये हैं। वरना भीड़ व्यर्थ से किसी के पीछे नहीं भागती। अर्थी के पीछे चल रही भीड़ उसके जीवन भर के कार्यों का फल है, जो अंतिम विदाई देने आये हैं। मात्र रिश्तेदारों का होना सामान्य बात है, क्योंकि वे रिश्तेदारी निभाने आये हैं। पर रिश्तेदार के अलावा जितने लोग आये हैं, वे उसके गुणवान होने का सबूत है। तभी तो लोग चर्चा करते हैं कि उसकी अर्थी में इतनी भीड़ थी।

रिश्तेदार क्यों आते हैं अंतिम क्रिया में?

संसार का दूसरा नाम स्वार्थ है। अर्थात् अपना काम हो, तो जायेंगे वरना नहीं जायेंगे। किसी की अंतिम विदाई में जा रहे हो, तो वह तो तुम्हारी अंतिम विदाई में आयेगा नहीं, फिर क्यों गये? यह सत्य है कि वह नहीं आयेगा, पर परंपरा है कि उसके परिवार से कोई न कोई जरूर आयेगा। किसी की मृत्यु पर उसके घर जाने का मतलब है, अपनी मृत्यु होने पर आने का निमंत्रण। तभी लोग कहते हैं यदि हम उनके घर नहीं गये, तो हमारी अंतिम क्रिया में कौन आयेगा। संसार का कितना बड़ा आश्चर्य है कि लोग बेटे को जन्म इसलिये देते हैं कि अंतिम क्रिया करेगा। यदि बेटा नहीं होगा, तो अग्नि कौन देगा, सिर कौन फोड़ेगा? संसार का मेला स्वार्थ का मेला है। यहाँ जीते जी, तो स्वार्थ रहता ही है, पर मरने के बाद का भी स्वार्थ रहता है।

बार-बार शरीर क्यों मिलता है

जिससे प्रेम करोगे, वही तुम्हारे पीछे आयेगा। जिससे प्रेम नहीं करोगे, वह तुम्हें छोड़ देगा, तुम्हारे पास नहीं आयेगा। बस बात इतनी सी है। पर इतनी सी नहीं, बहुत बड़ी है। हम अपने शरीर से बहुत प्रेम करते हैं। इसकी खूब सेवा करते हैं, ये कैसे सुखी रहे, इसका प्रयास करते हैं। सर्दी, गर्मी, बारिश, भूख, प्यास

की बाधा को दूर करते हैं, जरा सा बीमार हो जाये, तो दवा खिलाते हैं, दिन-रात चिंता करते हैं। आईना में देखकर इसे सजाते हैं, संवारते हैं। क्रीम पाउडर, लिपिस्टिक लगाते हैं, बालों को सजाने में भी कसर नहीं छोड़ते। 24 में से 24 घंटे केवल शरीर का ही ध्यान करते हैं। इतना प्रेम कोई करेगा, तो वह साथ कैसे छोड़ेगा। वह तो रूप बदल-बदल कर साथ ही रहेगा।

बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ
आत्मा हूँ और शरीर से प्यार करता हूँ।

प्रेक्टीकल की जिन्दगी में आप जिसे अपने पास नहीं बिठाना चाहते, साथ नहीं रखना चाहते, तो आप उसे अनदेखा करते हैं, उसकी बात को अनसुना करते हैं। वो जहाँ होगा, वहाँ से आप दूसरे स्थान पर बैठते हैं। कुछ दिन बाद वह स्वयं तुम्हें छोड़ देगा। आप उसे प्यार करेंगे, तो वह कभी नहीं छोड़ेगा। यही सूत्र शरीर के साथ लगाना होगा। शरीर को छोड़ने के लिये जहर नहीं खाना है, पहाड़ से नहीं गिरना है, पानी में नहीं डूबना है, जिन्दगी से नहीं ऊबना है, क्या करना है नीचे लिखी कविता के माध्यम से समझना है–

एक नुक्सा,
जन्म जिंदगी और मरण के दुःख
सदा के लिये भुलाओ
एक बार अपनी मौत खुद बुलाओ
रेल से कट कर नहीं
बम के साथ फटकार नहीं
फांसी से लटककर नहीं
ऊँचे पहाड़ से, खुद को पटक कर नहीं
पानी में डूबकर नहीं
जिन्दगी से ऊबकर नहीं
जहर खाकर नहीं
हथियार उठाकर नहीं
बस
समस्त विकल्पों से रहित
संकल्प समाधि
एक ही विधि है
अनुपम अद्वितीय अमूल्य निधि है

गेट पास है, मुक्ति धाम का
पुरुषार्थी पा सकता है
मुक्ति धाम जा सकता है।

शरीर में रहते हुये, आत्मा के द्वारा आत्मा का ध्यान, आत्मा का ज्ञान, आत्मा से प्रेम, आत्मा के प्रति समर्पण हो जाये, तो ध्यान शरीर से हट कर आत्मा में आ जायेगा, फिर वही बात, जिसे प्रेम करोगे वही मिलेगा। आत्मा का प्रेम शरीर से मुक्ति देगा। संसार के जितने दुःख हैं, वे सब शरीर के ही कारण हैं, अपना शरीर है, तो शरीर के रिश्तेदार परिवार भी हैं। परिवार रिश्तेदार हैं, तो जीवन यापन के लिये धनार्जन आदि का पुरुषार्थ भी है। संकट, दुःख, पीड़ा, परेशानी, कष्ट, चिंता, फिकर, सब शरीर की दुनिया में जन्म लेते हैं, पलते हैं, बढ़ते हैं, मरते हैं फिर नये शरीर में जीवित हो परेशान करते हैं। शरीर नहीं तो ये सब गायब हो जाते हैं।

इंसान की सोच

सामान्य इंसान जिसने आत्मा को जाना नहीं, पहचाना नहीं, वह कभी कल्पना नहीं कर सकता कि शरीर के बिना भी जीवन हो सकता है। उसे इस सत्य को जानना होगा कि आत्मा ही परमात्मा बनती है, जब तक शरीर में है, तब तक संसार में है। जब तक कर्म है, तब तक संसार है, कर्मों के छूटते ही वह आत्मा मुक्त होकर मोक्ष में जाती है। शरीर रहित होने से आत्मा परम शुद्ध हो जाती है, सिद्ध भगवान बन जाती है। आत्मा और शरीर के अलग होने का ज्ञान ही अध्यात्मिक ज्ञान कहलाता है एवं इसकी साधना निश्चय धर्म कहलाती है और आत्मा की श्रद्धा सम्यग्दर्शन कहलाती है। बिना आत्माज्ञान के जिन्दगी जीना, ऐसे है जैसे पशु पक्षी का जीवन।

उत्तम पुरुष

प्रकृति ने स्त्री की अपेक्षा पुरुष को शारीरिक बल अधिक प्रदान किया है। एक ही माँ के पेट से जन्म लेते हैं, भोजन भी एक सा करते हैं। लालन पालन एक सा होता है, उसके बावजूद शक्ति में अंतर क्यों है। यह अंतर मनुष्य के द्वारा नहीं, बल्कि प्रकृति के द्वारा किया गया है। कुछ चिंतन किया मैंने कि दो बराबर की शक्तियां एक साथ नहीं रह सकती। दोनों की शक्ति में अंतर होना आवश्यक है, बराबर की शक्तियाँ टकरायेंगी। इसलिये प्रकृति ने जन्म से ही अंतर डाल दिया। उसमें मनुष्य कुछ कर ही नहीं सकता। स्त्री कितनी ताकत की दवाई खाये, पर पुरुष की

बराबरी नहीं कर सकती। इस बात को स्वीकार करना चाहिये।

पुरुष का शरीर कठोर से कठोर तप कर सकता है। धूप, गर्मी, वर्षा को झेल सकता है। जंगल में अकेला घूम सकता हे, ऊपरी शक्तियों को वश में करके उनसे काम करवा सकता है। शक्ति हो तो साहस और निडरता साथ आ ही जाती है। साहस शक्ति निडरता को, धर्म की सही दिशा मिल जाये, तो वह शक्ति कर्म बंधन को तोड़ने में सहायक बनती है। 84 लाख योनियों में पुरुष का शरीर सबसे उत्तम है और इस शरीर से मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। अपनी आत्मा को परमात्मा बना सकता है। शरीर में रहकर आत्म प्राप्ति करके शरीर का लाभ उठा सकता है।

मृत्यु समाधि निर्वाण

मृत्यु समाधि और निर्वाण ये तीनों आत्मा के द्वारा शरीर को छोड़ने की प्रक्रिया है। जो जीव खाना-पीना, परिवार-परिग्रह को याद करते हुये छोड़ता है, वह है मृत्यु। अंतिम समय में आत्मा-परमात्मा को याद करते हुये शरीर छोड़े, वह है समाधि। जिसकी साधना सारी जिन्दगी करनी पड़ती है। एक बार समाधि का मतलब है, कम से कम 3-4 भव और अधिक से अधिक 7-8 भव में मोक्ष। कर्मो को पूर्ण रूप से छोड़कर, अकेली शुद्धात्मा का मोक्ष गमन निर्वाण कहलाता है। मृत्यु जिसकी हो उसकी अर्थी यात्रा, समाधि जिसकी हो उसका जुलूस, निर्वाण जिसका हो उसकी पूजा की जाती है और यह मनुष्य शरीर से ही संभव है। मोक्ष में अनंत सुख अनंतकाल तक है। अर्थी तो अनंत काल में कई बार निकली। अब समाधि की तैयारी करें, तो निर्वाण की प्राप्ति होगी। शरीर के कारण मिलने वाले सभी दुःख समाप्त हो जायेंगे। जीवन की, पढ़ाई की मृत्यु एक परीक्षा है, जब तक पास नहीं होओगे, तब तक परीक्षा देना पड़ेगी, एक बार समाधि होने पर कम से कम 3-4 और ज्यादा से 7-8 और परीक्षा होगी और उसके बाद पास होकर परीक्षा फल मोक्ष में पहुँच जाओगे।

होने में उदार का
गांव के सरदार का
जीवन में रिश्तेदार का
बड़ा ही महत्व है

पशुओं में खल का
समुद्र के तल का
अच्छे काम के प्रेक्टीकल का
बड़ा ही महत्व है

देश में शान्तिधारा की प्रथम प्रभावना जहाजपुर से

मंदिर में भगवान का अभिषेक, शांतिधारा श्रावक की दैनिक चर्या के अंतर्गत आता है। जिस मंदिर में अभिषेक होता है, केवल वही देख पाते हैं और जहाँ-जहाँ तक आवाज जाती है, वहाँ तक वो सुन पाते हैं। लेकिन भौतिक युग में इलेक्ट्रानिक मीडिया की उन्नति ने धर्म की प्रभावना में पूरा योगदान दिया। टी.वी. के कारण संभव हो पाया कि लोग घर में उठते-बैठते, चलते-फिरते, सोते-जागते, धर्मश्रवण कर पा रहे हैं। घर में रखा टी.वी. का डिब्बा अब डिब्बा नहीं रहा अब वह भावों को सुधारने के लिये अमृत का खजाना बन गया। इस यंत्र ने असंभव को संभव कर दिया। देश भर में होने वाले धार्मिक कार्यक्रम बिना प्रयास किये सीधा प्रसारण टी.वी. के माध्यम से घर बैठे देख सकते हैं। मेरी भावना में एक लाइन आई है,

घर-घर चर्चा रहे धरम की,
दुष्कृत दुष्कर हो जावे।

अर्थात् मेरी भावना है कि घर-घर में चर्चा धरम की हो। पहले जब इस विषय पर प्रवचन करते थे, तब अत्यंत कठिन लगता था कि भौतिक युग में लगता है, अब संभव नहीं है। पर पारस चैनल ने इस असंभव कार्य को संभव किया और आज करोड़ों घरों में दिन भर चर्चा धरम की ही हो रही है। आज घरों में प्रवचन, मंत्र, भजन, सामायिक पाठ आदि के शब्द गूंज रहे हैं। आनंद आता है, भगवान के ऐसे भक्तों को देखकर कि आज धरम ने कितना ऊँचाइयों का स्पर्श किया है।

पूर्व समय में वृद्धावस्था

जब पहले टी.वी. में जैन चैनल नहीं थे, तब वृद्ध का उपयोग निश्चित ही अशुभ में अधिक जाता होगा। अधिक बीमार होने पर आर्तध्यान, रौद्रध्यान बना रहता होगा। लंबी बीमारी उनके जीवन की एक समस्या होती थी। वे मंदिर नहीं जा पाते थे, वे अभिषेक नहीं देख पाते थे। एक तड़फन प्रतिक्षण उनके मन में होती थी। किन्तु

उनकी समस्या का निराकरण भी धार्मिक जैन चैनल ने कर दिया। वे घर बैठे ही अभिषेक, शांतिधारा देखकर संतुष्टि प्राप्त कर लेते है।

शांति धारा केवल बड़े बूढ़ों तक सीमित था

हाँ, पहले समय में टी.वी. पर अभिषेक, शांतिधारा केवल बड़े बूढ़े ही देखते थे। युवा और बच्चों में शान्तिधारा टी.वी. में देखने की ललक नहीं थी। पर जबसे भूगर्भ से प्राप्त अतिशकारी, मनोहारी भगवान 1008 मुनिसुव्रतनाथ का अभिषेक टी.वी. पर आया है, तब से अभिषेक शांतिधारा देखने वालों की 100 गुनी वृद्धि हो गई। घरों में टी.वी. खोलकर जहाजपुर वाले प्रभु का इंतजार किया जाने लगा। लाखों भक्त ऐसे हो गये कि जब टी.वी. में भगवान का अभिषेक शांतिधारा नहीं देख लेते तब तक पानी, दूध, चाय ग्रहण नहीं करते। जिस दिन जहाज पुर के भगवान की शांतिधारा नहीं आती, वे उदास हो जाते हैं। और भगवान को दिल से ही याद करते हैं।

कैसे शांतिधारा का यह रूप आया

शुरुआत में मेरे मन में भाव आये कि भगवान के दर्शन सबके प्रतिदिन कैसे हों, तब अभिषेक, शांतिधारा चलवाने का भाव आया। पारस चैनल के डायरेक्टर श्री विनोद जी टोरड़ी वाला को कहा आकाश जी के माध्यम से बात कर उन्होंने एक कैमरा और कैमरामेन दोनों की व्यवस्था कर दी। शांतिधारा का समय सुबह 6.20 से प्रारंभ हो गया। शांतिधारा देखने वाले भक्तों की संख्या बढ़ने लगी। पर लोगों की शिकायत आती कि उसमें शांतिधारा अधूरी आती है। क्योंकि चित्र यहाँ के होते थे और शांतिधारा की आवाज रिकार्डिंग की होती है। फिर मैंने विचार किया कि शांतिधारा जो यहाँ होती है, वही आये तो श्रेष्ठ होगा। ऐसा होना प्रारंभ हो गया। और भक्तों की शिकायत समाप्त हो गई।

पूरा मोहल्ला देखता है

लाखों भक्त टी.वी. में शांतिधारा देखने लगे। भगवान का रूप और स्वरूप जब टी. वी. में देखते तो लोग पलक झपकना भूल जाते और भगवान से प्रार्थना करते कि भगवान अपने दर्शन के लिये बुलाओ। भक्तों के फोन यहाँ आते कि भगवान का चेहरा थोड़ी देर ज्यादा दिखाया करो, मन को अपार शांति मिलती है। विशेष ग्वालियर के के.के. जैन कमिश्नर जी का फोन आ जाता था। धीरे-धीरे शांतिधारा देखने वालों की संख्या बढ़ने लगी। जैसे शांतिधारा आती थी, लोग टी.वी. देखने लगते। लोग

सारे काम आगे पीछे करते पर और शांतिधारा के समय टी.वी. के सामने ही होते। अब बच्चों को सुबह स्कूल भेजने के पहले निर्देश दिये जाते थे। पहले जहाजपुर वाले भगवान का अभिषेक देखो फिर दूध पीकर स्कूल जाना। छोटे-छोटे बच्चों में अभिषेक शांतिधारा देखने के संस्कार आ गये। बच्चों के हृदय में भी भगवान समा गये।

बांसवाड़ा की एक महिला ने आकर बताया हमारा घर जैन मोहल्ले में है, मैं टी.वी. में एक कलश देखकर मंदिर को निकल जाती हूँ। रास्ते में सारे जैनियों के घर में से जहाजपुर के मुनिसुव्रतनाथ भगवान की शांतिधारा की आवाज ही आती है, पूरा मोहल्ला टी.वी. के सामने होता है। सुनकर सुखद अनुभव हुआ कि प्रभु के प्रति श्रद्धा ने अभिषेक शांतिधारा की अनूठी प्रभावना की कि आज पूरा देश भगवान के दर्शन से सुबह की शुरुआत करता है क्योंकि जैन समाज के 5% से 10% लोग ही अभिषेक शांतिधारा करते हैं। और टी.वी. 15-20% लोग शांतिधारा देखते होंगे। आज 80% लोग शांतिधारा देखते हैं। देखने के संस्कार उन्हें एक दिन, करने की भी प्रेरणा करेंगे। दिल की गहराई से देखे गये चित्र प्रेरणा का सशक्त माध्यम है।

टी.वी. पर देखने वाले

शांतिधारा के समय सबके कल्याण की, स्वास्थ्य लाभ की, विश्व शांति की, भक्तों के सुखी होने, ज्ञान वृद्धि की, समृद्धि और रिद्धि-सिद्धि की भावना आयी है। सौधर्म इन्द, शांतिधारा कर्ता, देखने वाले, सुनने वाले, सबके नाम आदि लिये जाते हैं। जिससे शांतिधारा के मंत्रों का प्रभाव उनके ऊपर अधिक पड़ता है। एक दिन मेरे मन में आया कि करोड़ों लोग श्रद्धा से टी.वी. में शांतिधारा देखते हैं, तो क्यों न टी.वी. देखने वालों का नाम लेकर उन तक प्रभु की कृपा पहुँचाई जाये और मैंने टी.वी. में देखने वाले शब्द बोलना प्रारंभ किया।

मात्र इस शब्द का प्रभाव इतना हो सकता है, मुझे भी पता नहीं था। जब मैं बोलती टी.वी. में देखने वाले लोगों का रोम-रोम पुलकित हो जाता। लोग सो रहे परिवार को जगाते, उठो, अभी टी.वी. में देखने वालों को आशीर्वाद दिया जायेगा। घर में जो भी यहाँ वहाँ होता वह भागकर टी.वी. के सामने आ जाता और इस शब्द को सुनकर ऐसा महसूस करता जैसे साक्षात् भगवान ने ही आशीर्वाद दिया हो।

यह मैं नहीं बता रही, ये सब भक्त आकर मुझसे कहते थे, उनकी बात मैंने लिखी है। वे कहते थे आपने ये बहुत अच्छा किया, जो हमें घर बैठे टी.वी. से ही

आशीर्वाद दे देती है। इंदौर से प्रदीप कासलीवाल जी आये, बंबई से भूपेन्द्र रेखा जी, डॉ. अनुपम जैन इंदौर देश की अनेक बड़ी-बड़ी हस्ती यहाँ आकर बताते कि हम अभिषेक शांतिधारा नियमित देखते हैं, आनंद आता है। मेरी कल्पना से टी.वी. में शांतिधारा का प्रभाव पड़ा। बड़े-बड़े प्रशासनिक अधिकारी, जो ये कहते कि हम मंदिर नहीं जा पाते, पर शांतिधारा देखकर ऐसा लगता है कि जैसे मंदिर के दर्शन करके ही आये। कुछ लोग ऐसे शहर में रहते हैं, जहाँ मंदिर नहीं है, उन्होंने बताया कि शांतिधारा आने से पहले हम नहा धोकर टी.वी. के सामने यही सोचकर बैठते हैं कि अब भगवान घर पर आने वाले हैं और हमारा घर मंदिर बन जायेगा। वही अनुभूति हम शांतिधारा देखकर लेते हैं।

ललितपुर की एक बहन ने बताया कि वे ऊपर के कमरे में रहती हैं, कमरे से बाहर अभिषेक शांतिधारा देखकर ही निकलती हैं और जब टी.वी. में अभिषेक आता है, भजन गाते हैं, तो कमरे में ही नृत्य करने लगती हूँ आनंद आया सुनकर कि टी.वी. में होने वाली शांतिधारा क्या इतना आनंद दे सकती है। इतनी कल्पना तो मेरी नहीं थी, जितना प्रभु ने अतिशय दिखाया।

टी.वी. की आवाज तेज

शब्द वर्गणा पुद्‍गल है जो कि प्रत्यक्ष रूप से अपना प्रभाव दिखाती है। इसमें नकारात्मक और सकारात्मक दो तरह की होती है। नकारात्मक जो इंसान को कष्ट देती है और वातावरण को दूषित करती है। सकारात्मक जो जीव को सुखी शांत करती है, वातावरण को शुद्ध करती है। अभिषेक शांतिधारा के मंत्र सकारात्मक ऊर्जा से भरे होते हैं। भक्तों ने टी.वी. की आवाज तेज कर दी, जिससे मंत्र पूरे घर को पवित्र पावन बना दे। और प्रभाव भी देखने में आया।

गुलाबपुरा के कुछ लोगों ने बताया कि हम लोगों ने अपने मंदिर में अभिषेक का समय बदल दिया। मैंने पूछा क्यों? तो बोले जहाजपुर का समय बदल दिया। मैंने पूछा क्यों? तो बोले जहाजपुर वाले भगवान की शांतिधारा टी.वी. में छोड़ नहीं सकते इसलिये। हमने मंदिर का समय परिवर्तन कर दिया।

टी.वी. में देखकर हुये अतिशय

चार वर्ष में 400 अतिशय तो हो ही चुके होंगे। शुरुआत में मैंने सोचा भक्तों के साथ हुये अतिशय लिखवाऊं पर दो चार हो तो लिखवाऊं, दिन में चार जनें तो बता ही देते थे। इसलिये लिखवाने का सिस्टम नहीं रखा, जो कुछ याद है उन्हें ही

बता देती हूँ।

अभिषेक शांतिधारा देखते-देखते मन में जो भाव होते हैं भक्त उन्हें भगवान से कह देते हैं। और अतिशयकारी प्रभू से वो पूरा हो भी जाता है।

जयपुर से एक परिवार आया। माँ, बेटा, बहू, बच्चे आदि। उन्होंने बताया कि बेटे की तबीयत छह महीने से खराब थी। डॉ. ने भी मना किया कि इसका इलाज नहीं, कई दिनों से भोजन भी नहीं कर पाता था। इसलिये बेटा सुबह लेट उठता था, माँ धीमी आवाज में टी.वी. चलाकर मुनिसुव्रत भगवान का अभिषेक देखती थी। आवाज धीमी इसलिये कि बेटे की नींद न खुल जाये। इत्तफाक से एक दिन बेटे की नींद खुल गई, माँ डर गई कि बेटा नाराज होगा। पर जैसे उसकी आँख खुली, और टी.वी. में भगवान को देखा तो आकर्षित हुआ और देखता रहा। देखते-देखते मन में विचार आया कि भगवान यदि सात दिन के अंदर ठीक हो गया, तो दर्शन करने आऊंगा और सात दिनों में उसकी तबीयत स्वयं ठीक होने लगी, डॉक्टर, दवाई वही, पहले कोई असर नहीं, सात दिनों में ठीक भी हो गया। 8वें दिन वे जहाजपुर आये भगवान के दर्शन किये फिर मेरे पास आये। सारी घटना सुनाई और यहाँ क्षेत्र में अत्यधिक दान भी देकर गये।

टी.वी. में चरण छूकर चलने लगी

मंदसौर से पति-पत्नी आये, उम्र करीब 60-65 के होंगे। उन्होंने बताया कि रात को अचानक पत्नी बीमार हुई और चल भी नहीं पा रही थी। लैट-बाथ के लिये कुर्सी पर बिठाकर ले जा रहे थे। सुबह के समय जब टी.वी. पर जहाजपुर का अभिषेक प्रारंभ हुआ, तो उन्हें कुर्सी पर बिठा दिया कि आप अभिषेक देखें। अभिषेक के बीच में जैसे ही भगवान के चरण दिखे, वे कुर्सी से उठ कर टी.वी. में ही चरण छुये और बिल्कुल ठीक होकर चलने लगी। घर वालों को आश्चर्य हुआ। रात को बीमार प्रभु के चरण छूते ही ठीक हो गई। वे भी यहाँ पर आये और यह घटना हमें बताई।

सिरहाने बैठकर रात भर चालीसा पढ़ा

एक महिला के पति की तबीयत रात में खराब हुई। डॉक्टर के यहाँ लेकर गई। डॉक्टर ने कहा इन्हें पैरालिसिस हो गया और एडमिट कर लिया। पत्नी ने रात भर पति के सिरहाने बैठकर जहाजपुर वाले मुनिसुव्रतनाथ का चालीसा किया। सुबह पति स्वस्थ हुआ और सुबह पैदल चलकर घर वापस आया। यह जयपुर की है। वे

भी यहाँ आये, उन्होंने माइक पर बोलकर सबको बताया। ऊपर जिनके साथ अतिशय हुआ, उन्होंने भी माइक पर बताया, जो कि टी.वी. में भी आया था।

टी.वी. का गंधोदक लगाया

85 साल की अम्मा बीमार हुई और कॉमा में आ गई, डाक्टर को दिखाया, तो डॉक्टर ने कहा उमर बहुत हो गई, सेवा करो, इनको इलाज की जरूरत नहीं है। परिवार सुबह-सुबह जहाजपुर का अभिषेक देखता था। उनके परिवार की महिला ने ऐसा किया कि जब अभिषेक आता था, तब शुद्ध जल से हाथ गीले किये और जैसे ही भगवान के चरण दिखे, उन्हें स्पर्श करके उसे अम्माजी के सिर पर लगा दिया। तीन दिन में अम्माजी को होश आ गया और ठीक होकर चलने फिरने लगी। यह घटना मध्यप्रदेश के सागर के पास देवरी ग्राम की है। इन्होंने भी सबके सामने और पारस चैनल में भी बताया था।

विदिशा वालों ने टी.वी. से ली दिशा

एक लड़का पढ़ाई पूरी करने के बाद भी उसकी जॉब नहीं लग रही। अनेक प्रयास किया किन्तु विफल रहा। एक दिन टी.वी. में अभिषेक देखते समय भाव आया। भगवान यदि जॉव लगी, तो पहले महीने की सैलरी यहाँ दूँगा। तीसरे दिन ही उसका कॉल लेटर आया और एक महीने काम करके भक्त सैलरी 60,000 रुपये लेकर यहाँ आया और चरणों में अर्पित करके गया। एक नहीं अनेकों भक्तों के साथ अतिशय हुये, शायद कलम और कागज लिखने में असमर्थ है। मेरा यहाँ रहना भी एक अतिशय ही है।

शांतिधारा की धूम

पाँच वर्ष में शांतिधारा देखने वाले भक्तों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। भगवान का अभिषेक शांतिधारा भक्तों के जीवन की दिनचर्या में ही शामिल हो गया है। शांतिधारा देख कर अन्य क्षेत्र वालों के मन में आया कि क्यों न हम भी टी.वी. में अभिषेक शांतिधारा कराये। लाडनूं शहर की कमेटी ने आकर मुझसे कहा जहाजपुर की शांतिधारा देखकर हमने भी टी.वी. पर लाडनूं की शांतिधारा प्रारंभ करवा दी। इसके अलावा अन्य क्षेत्रों की भी शांतिधारा आना प्रारंभ हो गई। किन्तु जहाजपुर के मुनिसुव्रत नाथ भगवान की महिमा बढ़ती ही गई। और भक्तों का मेला जहाजपुर में चल रहा है। अतिशयकारी प्रभू अपने भक्तों पर अतिशय बरसा रहे हैं।

तत्वों में सात का
घर में तात का
तीर्थंकरों में मुनिसुव्रत नाथ का
बड़ा ही महत्व है।

आत्मा में एक बड़ा
मनुष्य में अनेक का
भगवान के अभिषेक का
बड़ा ही महत्व है।

आकाश में तारा का
बजाने में सितारा
करने में भगवान की शान्तिधारा का
बड़ा ही महत्व है।

मनुष्यों में वय का
गाने में लय का
भगवान के अतिशय का
बड़ा ही महत्व है

पेड़ में तने का
गर्मी में पने का
टी.वी. में शान्तिधारा देखने का,
बड़ा ही महत्व है।

दीवाली में मोदक का
शोध करने में शोधक का
लगाने में गंधोदक का
बड़ा ही महत्व है

चेहरे पर नैन का
बोलने में बैन का
सोने की चैन का
बड़ा ही महत्व है

मीटिंग में जूम का
रात्रि में मून का
शांतिधारा की धूम का
बड़ा ही महत्व है

पान में चूने का
शहरों में पूने का
प्रभु चरण को छूने का
बड़ा ही महत्व है

मिलने में दिशा का
सोने में निशा का
पढ़ने में चालीसा का
बड़ा ही महत्व है

साड़ी के पल्ले का
नन्हे मुन्ने लल्ले का
शहर में मोहल्ले का
बड़ा ही महत्व है

बुढ़ापा वरदान है, अभिशाप नहीं

चार गतियों में दो गति के जीवों की जीवन शैली में जन्म, बचपन, जवानी, बुढ़ापा, आता ही आता है। ये बात अलग है कि किसी की मृत्यु बुढ़ापा आने के पहले हो जाये। वरना मनुष्य और पशु जीवन क्रम तो यही है। बुढ़ापे को अभिव्यक्त करने वाली एक अत्यंत सुंदर कविता है—

बचपन जवानी बुढ़ापा
एक पूर्ण जिंदगी के हिस्से हैं,
तीनों के अलग-अलग ढेर सारे किस्से है,
बचपन में खेलकूद, जवानी में मस्तियां,
बुढ़ापे में रो देती है, बड़ी-बड़ी हस्तियां,
न रास होता है, न रंग होता है
बुढ़ापा जिंदगी में, लग गया जंग होता है
कोई चाहे बुढ़ापे में, जंग न लगे, उमंग जगे,
तो इसके लिये
बचपन में धर्म ध्यान हो, जवानी कर्म भान हो
तो बुढ़ापे में, मर्मज्ञान हो ही जाता है,
और मर्मज्ञान का प्राप्त होना ही, बुढ़ापे की जंग
का समाप्त होना है

बुढ़ापा क्या है?

इस प्रश्न के उत्तर दो हैं—प्रथम उम्र अधिक होने पर शरीर और इंद्रिय शिथिल होना कमजोर होना। अर्थात् संसार को देखने की इच्छा है, पर आँखों से दिखता नहीं, कानों से संसारी चर्चा सुनने की इच्छा है, पर सुनाई नहीं पड़ता, तरह-तरह के पकवान खाने की इच्छा है, पर पेट में पचाने की ताकत नहीं। दुनिया घूमने की इच्छा है,

पर पैरों ने काम करना बंद कर दिया। सबसे बातें करने की इच्छा है, पर कोई सुनने को तैयार नहीं है। अर्थात् शरीर तो बूढ़ा हो गया, पर मन बूढ़ा नहीं हुआ, अभी संसार के भोगों को भोगने की लालसा है।

वर्तमान में भोग नहीं पा रहे, तो बचपन, जवानी के दिनों को याद करके, मन से ही स्वाद ले रहे हैं। आपस में धर्म चर्चा न करके अपने इतिहास को दोहरा रहे हैं, जिसमें भोगों की कहानी है। कैसा पहनते थे, कैसा खाते थे, कैसे घूमते थे, कैसे पिक्चर जाते थे, कैसे लोगों को छेड़ते थे, कैसे मजाक करते थे। बुढ़ापे में बैठकर जवानी को याद कर रहे हैं। जवानी में कभी बुढ़ापे को याद नहीं किया। अब पुरानी यादों से वर्तमान को देखकर, दुःखी हो रहे हैं। ये हैं शरीर का बुढ़ापा, ये है अज्ञानी का बुढ़ापा, ये है मोही का बुढ़ापा।

ऐसे लोगों को बुढ़ापा दुश्मन सा लगता है। जवानी की मलकियत याद आती है। एक गिलास माँगते थे तो तीन तरफ से पानी आता था। अब तीन बार पानी माँगों तो, एक तरफ से आवाज आती है, रुक तो जाओ, ला रहे हैं, पानी नहीं आता। शरीर ठीक था, तो लड़का कहता था पिताजी, टाइम से दुकान आ जाना, तुम्हारे बिना ग्राहकी नहीं संभलती, बुढ़ापे में बेटा कहता है, पिताजी घर पर रहा करो, तुम्हारी शकल देखकर ग्राहक लौट जाता है। सासु के हाथ पैर चलते हैं, तो बहू कहती है अम्माजी, मंदिर से घर जल्दी आ जाना, मुन्ना तुम्हारे बिना रहता नहीं है। वही सासु जब अधिक बूढ़ी हो जाती है, तो वही बहू कहती है, इस बुढ़िया का मन मंदिर में नहीं लगता, जाती है और आ जाती है, ये नहीं कि दो चार घंटे मंदिर में बैठ के आये।

बच्चों को डांटना, बहू का फटकारना, पोतों का झिड़कना, जब होता है, तब बुरा लगता है, पर मोह की अधिकता वैराग्य उत्पन्न नहीं होने देती। रो लेते हैं, दुःखी रहते हैं, पर आत्मा और शरीर के अलग होने का भेद विज्ञान नहीं हो पाता। क्यों जवानी में ज्ञान ध्यान धर्म नहीं किया इसलिये बुढ़ापा भी रोते धोते कटता है। अशुभ कर्मों के कारण दुर्गति में चला जाता है। मगर इंद्रिय भोग की भावना शिथिल नहीं होती। बहू के लिये नई साड़ी आई है, तो सास भी इच्छा रखती है, न मिलने पर झगड़ा करती है। मन मुताबिक खाने न मिले, तो झगड़ा होता है। इच्छाओं सहित बुढ़ापा अज्ञानी का बुढ़ापा है। जैसे बच्चा खाने में, खेलने में खुशी मानता है, ऐसे ही उम्र वृद्ध भी खाता है और बच्चों को खिलाता है, इसमें ही खुशी मनाता है। न अनुभव लिये, न ज्ञान पाया और जिन्दगी पूरी कर दी।

अनुभव वृद्ध

जो व्यक्ति जीवन में अनेक संघर्ष करता है, धूप, गर्मी, ठंड से लड़कर अनेक महान कार्य करता है, वह अनेक अनुभव लेकर जीवन व्यतीत करता है और जीवन से कुछ शिक्षा लेकर, जीवन में संस्कार लेकर जीवन को सुधारता है, अच्छा बनाता है। लोग उसके जीवन को देखकर शिक्षा लेते हैं। वह जीवन में अनेकों को शिक्षा भी देता है कि संसार में कैसे जिया जाता है? संसार कैसे चलाया जाता है? परिवार को कैसे सुखी रखा जा सकता है? नम्र होकर परिवार में शांति कैसे प्राप्त की जा सकती है? उसके एक-एक अनुभव शिक्षाप्रद होते हैं। घर में रहकर अनेक विद्वान हुये हैं, चाहे भारत में हों या विदेशों में हर जगह अनुभव वृद्ध अपने अनुभव का लाभ दुनिया को पहुँचाते हैं। श्रीमदरायचन्द जी, पंडित दौलत राम, पंडित बनारसी दास, महात्मा गांधी, चाणक्य, मार्शल, आदि अनेक अनुभव वृद्ध हुये हैं। कुछ ने अध्यात्मिक शिक्षा दी, कुछ आर्थिक ज्ञान दिया, किसी ने सामाजिक ज्ञान दिया, किसी ने राजनीति का ज्ञान दिया। ये अनुभव वृद्ध थे, जिनके लाभ आज तक संसार ले रहा है।

घर मे रहना बुरा नहीं

सभी गृहस्थ महात्मा घर में रहकर ही महान हुये, घर में रहकर ही उत्तम विचार और उत्तम कार्य किये हैं। जिन्हें परिवार, समाज, देश कोई रोक नहीं पाया। न घर बुरा है, न घर में रहना बुरा है। घर में रहकर हमारी सोच, हमारे विचार, हमारे घर के वातावरण का निर्माण करते हैं। उत्तम विचार स्वयं को, परिवार को, समाज और देश को सभी को लाभ पहुँचाते हैं। घर में रहकर निम्न विचार, सबकी हानि करते हैं। घर में रहकर सबकी निंदा, बुराई, चुगली, ईर्ष्या, द्वेष, ग्लानि दूसरों के अपमान करने की भावना, इंसान को गिरा देती है। अनुभव वृद्ध घर में भी रहता, संसार की रिश्तेदारी भी निभाता है और धन भी कमाता है और इसके साथ ही उत्तम विचार का भी निर्माण करता रहता है।

जवानी में भी वृद्ध

'जवानी में भी वृद्ध' यह शीर्षक पढ़ने में आश्चर्य हो रहा होगा, पर बात बिल्कुल सत्य है। संसारी वृद्ध की इंद्रियाँ शिथिल होने पर भोगों को नहीं भोग पाता, पर ज्ञान वृद्ध इंद्रियों में शक्ति होते हुये भी भोगों को छोड़ देता है। भोगों की भावनाओं से आहत हो जाता है, इंद्रियों पर संयम रखता है, मन को भोगों की तरफ से शांत रखता है। उसका मन भोगों में नहीं, बल्कि ज्ञान ध्यान में लीन रहता है। भगवान महावीर ने उसे ज्ञान वृद्ध शब्द से संबोधित किया है। उम्र में भले ही छोटा है, पर इंद्रिय के भोगों की ओर से वृद्ध के समान होता है अर्थात् खाट पर पड़ा व्यक्ति जिह्वा स्वाद नहीं लेता, ऐसे ही ज्ञान का स्वाद लेने वाला जिव्हा स्वाद नहीं लेता। वृद्ध को कानों से सुनाई नहीं पड़ता इसलिये वह संसार की राग रंग और निन्दा बुराई के वचन सुन नहीं पाता। पर अनुभव वृद्ध कान से सुन सकता है, पर प्रभु वाणी का अमृत उसे इतना अच्छा लगा कि संसार की निन्दा, बुराई, राग, रंग के गाने वह अब सुनता ही नहीं है। वृद्ध को आँखों से दिखता नहीं, इसलिये मोह से मोहित व्यक्ति और वस्तु को देख नहीं पाता, पर ज्ञान वृद्ध को दिखता तो है, आँखों से जीवों की रक्षा करता है। वृद्धावस्था में जो काम सांसारिक बूढ़ा नहीं करता, ज्ञान वृद्ध जवानी में वह कार्य नहीं करता, इसलिये उसे ज्ञान वृद्ध की उपमा दी है। जो कि अति उत्तम है।

बचपन में ज्ञान नहीं था, जवानी में फुर्सत नहीं थी

इंसान जन्म के बाद दस बारह साल तक अज्ञानी अवस्था में स्वयं को, संसार को जान ही नहीं पाता है। इसलिये खेल खिलौनों के खेलने में आनंद आता है। जैसे ही चौदह पंद्रह वर्ष की कुमार अवस्था आती है, दोस्त और दोस्ती में आनंद आता है। युवा अवस्था आने पर भोगों की ओर खिंचने लगता है। तब गृहस्थी का भार उठाने, कदम बढ़ा देता है और मकड़ी जाल बनाना शुरू कर देता है। अर्थात् मकड़ी के आठ पैर होते हैं, वहाँ जाल में जन्म लेती है, सारी जिन्दगी जाल बुनती है, जाल में ही घूमती है, और उसी में फंसकर मर जाती है। ऐसे ही इंसान जन्म लेते हैं, तो दो पैर होते हैं, शादी होती है तो चार, हम दो हमारे दो होते हैं, तो आठ पैर हो जाते हैं और सारी जिन्दगी रिश्तेदारी के जाल में घूमते हैं, अर्थात् किसी के जन्म मरण शादी में जाना है, किसी के यहाँ बैठने जाना है। परिवार का पालन पोषण करना है। जीवन इतना व्यस्त रहता है कि आत्मा और परमात्मा की याद ही नहीं आती। हवा और तूफान की तरह बचपन, जवानी कैसे निकल जाती है, पता ही चलता। कैसे बुढ़ापा आ गया।

हाय बुढ़ापा

जवानी की मालकियत, जवानी का रौब बिना इस्तीफा दिये कैसे चला जाता है पता नहीं चलता। और अगली पीढ़ी घर पर मालकियत करना प्रांरभ कर देती है, जिस घर के मालिक तुम थे, आज वो मालिक है। पहले तुम्हारी हुकूमत चलती थी, अब उनकी हुकूमत चलती है। तुम्हारा नंबर घर के बूढ़ों में आ गया, घर वाले कहते हैं, शांति से बैठकर भगवान का नाम लिया करो।

शांति से बैठने के संस्कार डालिये

जवानी में शांति से बैठने का समय नहीं मिला, कभी बैठना भी चाहा, तो घर वालों ने डांटना शुरू कर दिया, कामचोर, खाली बैठा है, चल काम कर। अब बुढ़ापा है, चला जाता नहीं, पर मुख दिन भर बोलने की इच्छा रखता है, कभी खाने में, कभी बोलने में। भागने का मन करता है, पर शरीर चलने नहीं देता। अब बुढ़ापे में अंदर की अवस्था को सुधारने में हमारा पुरुषार्थ ही काम आयेगा, इसमें कोई दूसरा कुछ नहीं कर सकता। हमें स्वयं को उपदेश देना होगा।

जवानी में धर्म करने की भावना थी, पर फुर्सत नहीं, बचपन में ज्ञान नहीं था, कि धर्म कैसे किया जाये। अब बुढ़ापे में ज्ञान भी है और फुर्सत भी, अब धर्म अच्छी तरह से हो सकता है। पर लोग शरीर की टेंशन में धर्म नहीं करते। सारे दिन पाँव की चिंता करते हैं, चला नहीं जाता, इसलिये हम मंदिर नहीं जा सकते। उन्हें विचार करना चाहिये कि मंदिर पांव नहीं आत्मा जाती थी, जो कि आज भी तुम्हारे पास है, आँखें बंद करके देखो, भगवान के दर्शन करते थे, अब आँख बंद करके भगवान के दर्शन करो आनंद आयेगा। आँख बंद करके तीर्थयात्रा करो। सारे भगवान, सारे तीर्थ तुम्हारे अंदर विद्यमान हैं। बचपन और जवानी की सारी कसर बुढ़ापे में धर्म करके निकाल लो। घर वालों से मोह कम करो, तब यह संभव होगा। मोह कम नहीं किया तो तुम भी परेशान रहोगे और घर वाले भी परेशान रहेंगे। धर्म भी नहीं होगा और दुर्गति हो जायेगी। अतः बुढ़ापे को ज्ञान और ध्यान से भर दो, जीवन का रस इसी उमर में निचोड़ा जा सकता है। क्योंकि बचपन जवानी तो यूं ही बीत जाती है।

बुढ़ापा आना पुण्य का उदय

बुढ़ापा पुण्य के उदय में आता है। वरना लोग बचपन, जवानी में ही चले जाते हैं।

बुढ़ापा पुण्यवान को ही आता है। जीवन का रस निचोड़ने के लिये, आत्मा, परमात्मा को जानने के लिये, संसार का असली रूप बुढ़ापे में नजर आता है। कौन अपना कौन पराया? तभी धर्म में मन लग सकता है। यदि जवानी में चले जाते हैं तो पता ही नहीं चल पाता कि संसार की सच्चाई क्या है? सच्चाई को जानकर दुःखी मत होओ, उसे धर्म से जोड़कर सत्य की प्राप्ति करो। बुढ़ापे को अभिशाप नहीं, वरदान समझें और वरदान का पूर्ण लाभ उठायें। यदि बुढ़ापे में कुछ नहीं हो सकता था तो प्रकृति बुढ़ापा देती ही नहीं। यदि दिया है, तो प्रकृति का इशारा समझो और बुढ़ापे में जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करो। जैसे सुबह होती है, दिन में व्यापारी अपना व्यापार करता है और रात में बैठकर अपना हिसाब मिलाता है। ठीक ऐसे ही बचपन में, जवानी में जीवन में जितने कार्य किये, बुढ़ापे में बैठकर हिसाब करो कितना अच्छा किया, कितना बुरा किया। अच्छे की अनुमोदना करो और बुरे का प्रायश्चित पश्चाताप करो। जवानी की गलतियों का प्रायश्चित करने के लिये बुढ़ापा है। बिना प्रायश्चित किये चले जाओगे, तो ज्यादा भुगतना पड़ेगा। अतः यहीं का हिसाब यहीं निपटा के जाओ, आगे के लिये बोझ लेकर मत जाओ, बुढ़ापा इसलिये होता है। जिस मन से निन्दा, बुराई, क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह किया। अब बैठे-बैठे प्रायश्चित की माला फेरो ताकि अगले जन्म में साथ लेकर न जाना पड़े। प्रकृति ने जो दिया खुशी से स्वीकार करें। इसलिये बुढ़ापे को वरदान समझो अभिशाप नहीं।

**दुकान में खाते का
महिलाओं में बातें का
जीवन में बुढ़ापे का
बड़ा ही महत्व है।**

**नाश्ते में खश्ता का
स्कूल में बस्ता का
जीवन में वृद्धावस्था का
बड़ा ही महत्व है।**

**दुःख के निदान का
देने में दान का
बुढ़ापे के वरदान का,
बड़ा ही महत्व है।**

**कानून में प्रावधान का
खेत में धान का
बुढ़ापे में सावधान का
बड़ा ही महत्व है।**

अपनों से हारने का
भव से तारने का
बुढ़ापा सुधारने का
बड़ा ही महत्व है।

बनिया में तौलने का
द्वार को खोलने का
बुढ़ापे में मीठा बोलने का
बड़ा ही महत्व है।

सूरज में उजाला का
घर में ताला का
बुढ़ापे में माला
बड़ा ही महत्व है।

मुनियों में ऋद्धि का
गुणों में वृद्धि का
मनुष्यों में ज्ञानवृद्ध का
बड़ा ही महत्व है।

केवली में अनुबद्ध का
मिलने में सुबुद्धि का
मनुष्यों में अनुभव वृद्धि का
बड़ा ही महत्व है।

पुलिस की लारी का
बिहार के बिहारी का
बुढ़ापे में अगले भव की तैयारी का
बड़ा ही महत्व है।

सोने की चैन अनेकों के पास होगी, पर चैन के साथ सोना सबके नसीब में नहीं है

व्यापार करना कर्म भूमि की विशेषता है। बिना मेहनत किये, बिना कर्म किये, जीवन यापन संभव नहीं है। चाहे बच्चा हो या बूढ़ा, अपनी-अपनी तरह से सब मेहनत करते हैं। छोटा बच्चा भी, जब देखता है, मुस्कुराता है, खिलखिलाता है तो माँ भी प्रसन्न होकर सेवा करती है, घर में उसे, गोदी में उठा कर घूमते रहते हैं। यदि बच्चा मुस्कुराये न, हंसे न, तो कोई उसे खिलाना नहीं चाहता। जवान व्यक्ति पूरी मेहनत के साथ पैसा कमाता है, घर में धन कितना भी रखा हो, पर इज्जत तो तभी मिलती है, जब व्यक्ति धन कमाता है। धन न कमाने वालों को, शांति से रोटियाँ भी नसीब नहीं होती। व्यापार इंसान के जीवन का एक प्रमुख हिस्सा है, कर्म भूमि में कर्म करना ही पड़ेगा। महिलायें यदि धन कमाने बाहर न जायें, तो वे घर के सारे कार्य बड़ी मेहनत और लगन से करती हैं। कर्म भूमि के मनुष्य के शरीर की संरचना भी ऐसी है कि यदि वे मेहनत न करे, तो अनेक तरह की बीमारियों से घर कर जाती है। कर्मभूमि की हर वस्तु मेहनत करने की ओर इशारा करती है।

जो संसार मार्ग छोड़कर, त्यागमार्ग में प्रवेश करता है, वह भी धर्म पुरुषार्थ करता है, तप, साधना, संयम का पालन कर मोक्षमार्ग को प्रशस्त करना है और श्रावक उनकी सेवा भक्ति भाव से करके, संसार में उपार्जित पापों को नष्ट करता है। मोक्ष मार्ग भी, संसारी कर्म को छोड़कर आत्मध्यान की ओर ले जाता है। सच्चे सुख की प्राप्ति कराता है। संसारी संसार का पुरुषार्थ कर इंद्रिय सुख को प्राप्त करते हैं। उनका ध्यान शरीर और इंद्रिय सुखों की अधिक रहता है। वे उसके लिये धूप, गर्मी, वर्षा, ठंड को भी सहन कर लेते हैं। साधु, आत्मा के सुख के लिये धूप, गर्मी, वर्षा, ठंड को सहन कर लेता है। इसलिये संसारी का मन व्यापार में अधिक लगता है। व्यापार चारों गति में नहीं है—लेन-देन के कार्य को व्यापार कहते हैं। जिसमें एक वस्तु प्रदान करता है, दूसरा मुद्रा पैसा प्रदान करता है। व्यापार केवल मनुष्य

करता है, यह चारों गति में नहीं है। स्वर्गों में कल्पवृक्ष के माध्यम से भोगों की सामग्री मिल जाती है। नरक में इच्छा होते हुये भी वहाँ कुछ नहीं मिलता। तिर्यंच गति में पशु में आवश्कता है, पर व्यापार की योग्यता नहीं है। किन्हीं-किन्हीं पशुओं की आवश्यकता पूरी हो जाती है, किसी की नहीं। हालांकि जिन पशुओं की आवश्यकता पूरी होती है, उन्हें भी मेहनत करनी पड़ती है।

कुत्ता दिन भर गलियों में घूम-घूम कर भोजन प्राप्त करता है। कुछ पुण्यवान कुत्ते कोठियों में पूंछ हिलाकर अच्छा भोजन प्राप्त कर लेते हैं। बिल्ली को भी घूम-घूमकर दूध की खोज करनी पड़ती है। चूहे भी दांतों से वस्तु काट काट कर भोजन की प्राप्ति करते हैं। चीटियां अपने वजन से तीन गुना बोझा उठाकर अपने बिल को भरकर भोजन के लिये मेहनत करती है। मच्छर इंसान का खून चूस कर पेट भरते हैं। मक्खी वस्तु पर बैठकर भोजन करती है, वह अच्छी हो या बुरी। बंदर भी छीन झपटकर भोजन करते हैं। चिड़िया आदि पक्षी दाना की खोज में मीलों यात्रा कर लेते हैं। बड़े पेड़ जमीन की गहराई में जाकर पानी को खींचकर भोजन ग्रहण करते हैं। अर्थात् बिना मेहनत के यहाँ किसी को कुछ नहीं मिलता। पशु पक्षियों को भगाओ, तो वे फिर आ जाते हैं। डंडे भी मारो, तो भी वापस आ जाते हैं। पेट की भूख मान कषाय को भी ठंडा कर देती है। यदि कोई किसी मनुष्य को भोजन के लिये डांट देवें, तो दोबारा नहीं आता, पर पशु जीवन को न जानते हुये भी जीवन के लिये मेहनत करते हैं।

व्यापार कब से हो रहा है?

जन्म के समय इंसान कुछ साथ नहीं लाता और मरण के बाद कुछ साथ नहीं ले जाता। प्रकृति की इस व्यवस्था ने धरती को व्यवस्थित कर रखा है, वरना साथ ले जाने की व्यवस्था होती, तो आने वाली पीढ़ी के लिये कुछ भी नहीं बचता। छह काल परिवर्तन में तीन काल में भोग भूमि होती है, जिसमें भोगों की सामग्री बिना कर्म किये मिलती और चतुर्थ काल में व्यापार प्रारंभ होता है। इसकी व्यवस्था कुलकर देते हैं। किन्तु तीर्थंकर आदिनाथ ने शिक्षा दी, जिसमें असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प और वाणिज्य। अर्थात् व्यापार होते हुये एक कोड़ी-कोड़ी सागर एवं पंचम काल के 2548 साल हो गये। जो व्यापार करता है, वह ऐसे करता है। जैसे पहले किसी ने किया ही न हो। अपने आपको बहुत बुद्धिमान समझता है। अहंकार आ जाता है, मैं व्यापार करता हूँ, मैं सेठ हूँ, मैं धनवान हूँ, मैं बड़ा आदमी हूँ। अर्थात् इंसान शरीर से नहीं, आत्मा से नहीं, सुंदर गुणों से नहीं, वरन धन के कारण अपने आपको

बड़ा आदमी समझता है। धन है तो बड़ा है, धन गया, तो बड़ा आदमी छोटा आदमी हो गया। सेठ गरीब हो गया। धनवान-निर्धन हो गया, राजा रंक हो गया।

इंसान यह भूल जाता है कि न कुछ लाया न ले जाऊंगा।

संसार में आकर खूब कमाया, क्या हीरा क्या मोती
पर पगले कफन में जेब नहीं होते।

धन के मोह में, सच्चाई की, ज्ञान की आँख बंद हो जाती है। धन को ही सब कुछ समझता है। घाटा होने पर दुःखी होता है, धन चले जाने पर रोता है। मेरा धन चला गया। उस समय चिंतन करें कि साथ क्या लाया था, जो चला गया। यहीं से इकट्ठा किया था, यही चला गया। हमसे पहले बड़े-बड़े सेठ हो चुके, जिनके पास राजा से अधिक संपत्ति होती थी। वे आज कहाँ हैं। खजानों को लूटने वाला सिकन्दर कहाँ है।

सिकन्दर जब गया दुनिया से, सभी हाली बहाली थे
थी सारी साथ में दौलत, मगर दो हाथ खाली थी।

वर्तमान में इतिहास को दिल से पढ़ लिया जाये, तो वैराग्य आये बिना नहीं रह सकता। अर्थात् राजाओं ने दूसरे राज्य को अपने राज्य में मिलाने के लिये कितने युद्ध किये। सारी जिन्दगी स्वयं चिंता अशांति में रहे और दूसरों को चिंता अशांति देते रहे। कहाँ वे राजा, उनका राज्य यही रह गया और वे चले गये। जब तक जिये, इकट्ठा ही करते रहे।

जीवन यापन के लिये व्यापार करना ठीक है, पर उसे अपना गौरव ही मान लेना, ये बात इंसान को धर्म से और स्वयं से दूर कर देती हे।

व्यापार किसका?
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति का

इंसान व्यापार करता है, वे वस्तुएं यही आकर मिली हैं। प्रकृति दत्त है, यदि वे हैं, तो व्यापार है, वे नहीं तो व्यापार भी नहीं। व्यापार भी इंसान के हाथ में नहीं है, व्यापार भी वस्तु के हाथ में है। जिसे हम प्रकृति 'नेचर' कहते हैं वह भी जीवों का समूह है। जिसे भगवान महावीर ने एकेन्द्रिय जीव कहा है। इससे ही जीवों का पालन पोषण होता। जो पूर्ण अहिंसा का पालन करता है, वे व्यापार के त्यागी होते हैं। एकेन्द्रिय की हिंसा में सूक्ष्म पाप लगता है। क्योंकि इसके बिना मनुष्य का जीवन नहीं है।

पृथ्वी का व्यापार

इंसान धरती, जमीन, भूमि, वसुधा, वसुंधरा का व्यापार करता है। करोड़ों लोगों का जीवन जमीन के व्यापार से चलता है। करोड़ों परिवारों का पेट जमीन के कारण ही भर रहा है। कोई बेच रहा है, कोई खरीद रहा है। इस बेचने और खरीदने के बीच करोड़ों लोगों का हाथ होता है। पहले तो यही सुना था, जमीन बिकती है। वर्तमान समय में तो, इंसान धरती बनाकर बेच रहा है अर्थात् छत भी बिक रही है। धरती पर मकान बनाया, नीचे किसी ने खरीद लिया, छत किसी और ने खरीद ली। इंसान बेचकर खुश हो गया, दूसरा खरीद कर खुश हो गया।

लोग मकान किराये पर देते हैं। मैदान किराये पर देते हैं। बड़ी-बड़ी बिल्डिंग बनाकर बेचते हैं। मकान बनाकर कहते हैं कि मैंने बनाया है, मैं इसका मालिक हूँ। सूक्ष्म दृष्टि से देखे, तो मकान किसने बनाया? ईंट, रेत, सीमेंट से ढांचा खड़ा हुआ। ये ईंट, रेत, सीमेंट कहाँ से मिली, इसी धरती से। ऊपर पेंटिंग खिड़की, दरवाजे लगाये, ये वस्तुएं कहाँ से मिलीं, इसी धरती से मिले। मकान बनाने का काम तो मजदूर कारीगर ने किया। सब भ्रम में हैं, मैंने मकान बनाया इंसान ने तो जमाने का काम किया, अहंकार आ जाता है। व्यापार में भी अहंकार। व्यापार जीवन यापन का कारण है, इसे अहंकार या दीनता-हीनता का कारण बना लिया।

भगवान महावीर ने पृथ्वी के 36 भेद कहे हैं। सोना-चांदी, हीरा-मोती सभी तरह के रतन, लोहा, पीतल, एल्युमीनियम, जस्ता, अभ्रक, कांसा, तांबा सभी तरह की मेटल धातु। सभी तरह के पत्थर। पृथ्वी कई रूप में है, इनका व्यापार भी पृथ्वी का ही व्यापार कहलायेगा। इंसान तो केवल लेना और देना करता है, सारी वस्तुएं तो इसी दुनिया से मिली हैं। उन्हीं वस्तुओं को इकट्ठा करके मालिक बनता है और अहंकार करता है। आयु पूर्ण होने पर सब कुछ छोड़कर चला जाता है। अहंकार में किया कर्म साथ चला जाता है, जिसका फल भोगना ही पड़ता है।

जल ही जीवन है

तिर्यंच और मनुष्य का जीवन जल के बिना संभव नहीं है। अमीर हो, गरीब हो, पशु-पक्षी हो या कीड़े-मकोड़े सब पानी का उपयोग कर जीवन धारण करते हैं। जंगल में रहने वाले शेर-चीते के लिये भी प्रकृति ने पानी की व्यवस्था की। नदी और झरने के रूप में की है। पहाड़ों पर यदि जीव जन्तु है, पहाड़ों पर भी झरने बहते हैं, पानी कहाँ से आता है, पता नहीं जैसे धरती सबके लिये है, वैसे ही जल सबके लिये समान रूप से है।

वर्तमान में इंसान बौद्धिक स्तर पर आगे बढ़ रहा है। उसका परिणाम यह है कि जल को भी व्यापार बना दिया। पानी की किन-किन विशेषताओं को बताकर व्यापार होता है बात अलग है। पहले के समय में मेला में, बाजार में, अपने घर के सामने, सड़कों पर लोग प्याऊ लगाते थे, और सबको सेवा भाव से पानी पिलाकर पुण्य का काम मानते थे। किन्तु आज पानी भी पैसे में बिक रहा है। पानी के व्यापार ने सबके हाथ में बोतल पकड़ा दी। हर व्यक्ति बच्चा बोतल लिये घूम रहा है। पहले शराब के अलावा बोतल में कुछ नहीं आता था। आज पानी का भी टैक्स देना पड़ता है।

पहले जिस तरीके से प्राप्त होता था, तो लोग पानी का प्रयोग सीमित करते हैं। पानी कुएं, नदी, झरने, तालाब, बावड़ी से भरकर, सम्मान से सिर पर रखकर घर लाते हैं। पानी मेहनत से घर पर आता था। लोग कुएं, तालाब, बावड़ी बनवाकर अपने द्रव्य का सहयोग करते थे। पर पैसा किसी से नहीं लेते। मेहनत से मिली चीज का प्रयोग इंसान संभाल कर करता है। मंजन करता था, तो एक लोटे पानी में हो जाता था। अब नल खोलकर मंजन करने में एक बाल्टी पानी खर्च होता है। क्योंकि पानी लाने में मेहनत नहीं लगी। पहले एक बाल्टी पानी में नहा लेते थे, अब नल सावर चलता रहता है और कई बाल्टी पानी बह जाता है। जल जीव है, उसका प्रयोग उतना ही करो, जितनी आवश्यकता है। पहले लोग जल क्रीड़ा करते थे पर पानी का दुरुपयोग नहीं होता था। पहले जल नीचे से ऊपर आता था। अब ऊपर से नीचे आता है। टंकी भरने के लिये बटन खोलकर भूल जाते हैं। हजारों करोड़ो लीटर पानी टंकी भरने के माध्यम से नष्ट होता है। पहले एक गिलास पानी भी सोचकर फेंकते थे। अब नल आने पर कल का पानी, ऐसे फेंक देते हैं, जैसे किसी का है ही नहीं। इसी कारण वर्तमान में लोग पानी के संकट से गुजर रहे हैं। और परेशान होते हैं। आने वाली हमारी ही पीढ़ी को इसका सामना करना पड़ेगा।

अग्नि ऊर्जा है उपयोग करो

मानव जीवन में अग्नि का भी प्रमुख स्थान है। जैसे जीवन जल के बिना नहीं चल सकता, वैसे ही अग्नि के बिना नहीं चल सकता। अग्नि ऊर्जा है, शक्ति है। क्रोध को भी अग्नि कहा जाता है। सारी अग्नि कर स्रोत सूर्य की किरणें हैं। जब तक सूर्य चमकता रहेगा, तब तक अग्नि धरती पर कायम रहेगी। अग्नि भी कई तरह की होती है–

1. सूर्याग्नि
2. बड़वाग्नि

3. दावाग्नि

4. उदराग्नि

5. क्रोधाग्नि

6. सामान्य अग्नि—सूर्य की धूप के फायदे

सूर्याग्नि—जेठ के महीने में जब सूर्य का रूप प्रचंड होता है, तब बड़े-बड़े जंगल में आग लग जाती है और सारे पेड़ जलकर नष्ट हो जाते हैं। लैंस के माध्यम से सूर्य की किरणों को इकट्ठा करके किसी कागज या कपड़े पर डाली जाये, तो वह जल जाता है। सूर्य से निकलने वाली किरणों में अनेक तरह के विटामिन्स पाये जाते हैं। आपने देखा होगा, जो व्यक्ति सूर्य की धूप ग्रहण नहीं करते, उन्हें खांसी, खुजली कैल्सियम की कमी आदि अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं। कुछ बीमारी का इलाज तो सूर्य की धूप ही है। महिलाएँ गेहूं, दाल, मसाला आदि सब धूप में सुखाती हैं। फसल भी धूप में पकती है तभी वह उत्तम क्वालिटी की बनती है। सूर्य की धूप खरीदनी नहीं पड़ती, बिना शुल्क दिये प्राप्त हो जाती है। अतः इसे अवश्य ग्रहण करना चाहिये।

सूर्य की धूप में जब मुनिराज ध्यान लगाते हैं, तो आत्मा शुद्ध होती है। कर्मों का, पापों का नाश होता है। आयुर्वेद में सूर्य स्नान भी बताया है, जिससे शरीर की शुद्धि होती है। सूर्य की रोशनी में दिन व्यतीत करने वालों की, आँखों की रोशनी खराब नहीं होती। स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। पहले लाइट नहीं थी तो मकान भी ऐसे बनाये जाते थे कि सूर्य की रोशनी दिन भर मिलती रहे। अब लाइट के कारण घर को बॉक्स के जैसे बना दिया और यदि खिड़की हो भी तो ए.सी. के कारण खिड़की वर्षों तक नहीं खुलती जिससे धूप, वायु प्रवेश कर सके। वास्तु में बताया जाता है कि जिस कमरे में सूर्य धूप आती है, वहाँ बैक्टीरिया और कीटाणु नहीं होते। सडांध नहीं फैलती, दुर्गंध आदि नहीं आती। जो कि स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है। वर्तमान में वैज्ञानिकों ने सूर्य की किरणों को मशीनों से इकट्ठा करके लाइट जला दी और अनेकों कार्यों में उपयोग में लिया है। भोजन भी सूर्य किरणों से बन सकता है। अतः जब तक सूरज है, तब तक धरती पर अग्नि है। सौर ऊर्जा के माध्यम से इंसान ने इसे व्यापार का साधन बना लिया।

समुद्र में अग्नि कैसे लगती है

जल अग्नि को बुझाता है, किन्तु जब समुद्र में भंवर आती है, पानी का घर्षण होता है, तब पानी में आग लग जाती है। इस बात का अंदाजा नहीं है कि इंसान ने

इसे व्यापार का साधन बनाया हो। क्योंकि यह एक बहुत खतरनाक स्थिति होती है। यदि कोई उस समय वहाँ हो, तो वह जीवित नहीं बच सकता है।

जंगल में अग्नि लगाते नहीं, लग जाती है

लकड़ी ईंनाग्नि कहा जाता है। अग्नि लकड़ी को सहजता से जला देती है। इसीलिए पहले के समय में लकड़ी जलाकर ही भोजन आदि बनाया जाता था। थोड़ा विकास हुआ तो लकड़ी का कोयला बनाकर बेचने लगे। और अग्नि के लिये लकड़ी का व्यापार भी लंबे समय से हो रहा है। घर बनाते समय एक कमरा लकड़ी रखने के लिये बनाया जाता था। लकड़ियों पर भोजन बनने के बाद भी, घने-घने जंगल हुआ करते थे। लकड़ी प्राप्त करने का साधन जंगल, झाड़ी ही होती थी।

कभी-कभी जंगल में स्वयंमेव आग लग जाती थी, उसका कारण था सूर्य की अग्नि। आचार्यों ने उसे दावाग्नि, दावानल भी कहा है।

क्रोधाग्नि कैसे जलाती है?

शरीर का थोड़ा सा हिस्सा भी जल जाये, तो जलन की तकलीफ में, मन बार-बार वहाँ जाता है। आँख बार-बार उसे देखती है, हाथ भी उस स्थान पर बार-बार जाता है तथा तब किसी अपनों से चर्चा हो, तो बार-बार मुँह से निकलता है, बहुत जलन हो रही है। ऐसे ही जब कोई क्रोध के अंगारे दूसरे पर बरसाता है, तब भी व्यक्ति ही परेशान उतना ही होता जितना बाहर के जलने से हुआ था। टेंशन हो जाती है, सिर गरम हो जाता है। मन बार-बार उन्हीं शब्दों को याद करके पीड़ा महसूस करता है। जिसने क्रोध किया, अग्नि उसके अंदर उत्पन्न हुई है और उसके कारण जहाँ-जहाँ ईंधन होता है आग वहाँ-वहाँ लग जाती है। अर्थात् एक का क्रोध अनेक लोगों के क्रोध का कारण बन जाता है।

आज हर व्यक्ति इस अग्नि को एवं ईंधन को साथ लिये बैठा है। इसलिये चारों तरफ क्रोध की आग ही आग दिखाई देती है। इसकी जलन से पीड़ित मानव दुःखी दिखाई देते हैं। इसकी जलन से पीड़ित दुःखी मानव इसका इलाज इसकी दवाई भी सही नहीं लेता। वे क्रोध के बदले में बदले की भावना रखकर इलाज करना चाहते हैं। पर जैसे अग्नि जल से बुझती है, वैसे ही क्रोध क्षमा से मिटता है। अतः क्षमा के जल से अंदर क्रोधााग्नि को शांत करें।

अग्नि ने दुनिया का नक्शा बदल दिया

बिजली पैट्रोल, डीजल, गैस, एसिड, तेजाब, मिट्टी तेल, घासलेट ये सारी चीजें

अग्नि उत्पन्न करने के साधन हैं। अग्नि दूसरे रूप विद्यमान है। ये अग्नि नहीं है। पर अग्नि से कम भी नहीं है। आज दुनिया से बिजली, पैट्रोल, डीजल को निकाल दिया जाये तो वही पुराना समय आ जायेगा। हाथों से पंखा करेंगे, कुएं का पानी खीचेंगे, हाथ चक्की की व्यवस्था होगी और इंसान के पास समय ही समय रहेगा धर्म करने के लिये। अग्नि के इन दो ऊर्जा स्रोतों ने सारी दुनिया का नक्शा बदल दिया है।

पैट्रोल, डीजल न हो, तो सारी गाड़िया, एरोप्लेन बंद हो जायें, सारी मशीनें बंद हो जायें। मशीनी युग ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जो मशीनों का प्रयोग न करता हो। कुछ न हो, तो मोबाइल तो होगा ही होगा। चाहे वह भिखारी क्यों न हो अंधा, लंगड़ा, लूला मोबाइल ने सबको अपना बना लिया। इंसान का दिमाग एक डिब्बी में कैद हो गया। मशीनी मानव तैयार हो गये काम करने के लिये। हीटर आदि भी अग्नि के व्यापार में आयेंगे या गैस, लकड़ी, माचिस सब अग्नि व्यापार ही कहलायेगा। गैस में भोजन बनाते हैं, लकड़ी, कोयला चला गया। गैस का भोजन कर-करके सबको गैस बनने लगी। अब घरों में धुआं देखने नहीं मिलता। धुआं होता था, तो आँखें साफ हो जाती थीं। धुआं होता था, तो घर के मच्छर भाग जाते थे। अग्नि जीवन की प्रमुख आवश्यकताओं में से एक आवश्यकता है। पर इसकी सीमा है, सीमा टूटते ही जो अग्नि सुख दे रही थी वही दुःख का कारण बन जाती है। जो अग्नि भोजन बनाती है, वह सब कुछ जला देती है। अतः अग्नि उपयोग दूर से ही किया जाता है।

जब तक वायु; तब तक आयु

जल और अग्नि का प्रयोग हम जब तक जाग रहे हैं, तभी तक करते हैं। लेकिन वायु का उपयोग तो हम एक क्षण के लिये नहीं रोक सकते। सांस का आना-जाना वायु के कारण है। श्वांस लेना दस प्राणों में से एक प्राण है। इसीलिये कहा है जब तक वायु, तब तक आयु। पहाड़ों की अधिक ऊँचाई पर वायु कम होती है, तो वहाँ कई लोगों की इसी कारण से मृत्यु तक हो जाती है। और इंसान की मृत्यु का कारण वायु बन जाती है। कहने को तो वायु की कीमत कुछ नहीं पर वायु से अधिक कीमती भी कुछ नहीं है।

जब गर्मी का मौसम आता है, तो लोगों को गर्मी लगती है तो हवा खाते हैं। और गर्मी को शांत करते हैं। पर जब हवा बंद हो जाये और गर्मी लगे तो पंखा से हवा को निकालते हैं और हवा खाते हैं। पहले के समय में जब बिजली नहीं

थी, तब पंखा हाथ से करते थे परंतु अब बिजली के कारण साधन सुविधाओं के कारण हाथ के पंखे चले गये और हर कमरे में पंखे लटक गये। कहीं-कहीं टेबिल फेन भी प्रयोग करते हैं। हवा में ठंडक बढ़ाने के लिये कूलर तैयार हो गये जिससे ठंडक पानी के माध्यम से आती है। ठंडक में जब पानी नहीं चाहिये तो ए.सी. तैयार हो गया। सर्दी में गरम चाहिये, तो हीटर बन गये। इस तरह सारे संसार में हवा का व्यापार प्रारंभ हो गया। हवा लोगों की रोजी-रोटी का कारण बन गई। किन्तु इंसान रोजी रोटी तक सीमित नहीं है, वह इससे धनवान बनना चाहता है। हवा जब तक शांत रूप में है, तब तक जीवन देती है और इसका रूप उग्र हो जाये, तूफान बन जाये तो जान ले भी लेती है। शास्त्रों में प्रलय काल की वायु का उल्लेख किया है कि धरती पर प्रलय वायु से आयेगी। बड़े-बड़े पर्वतों को जब वायु गिरा सकती है, तो इंसान के बनाये मकान क्या चीज हैं। पचासों हजारों वर्षों में इंसान जो मेहनत करके बनाता है, उसे प्रलय वायु कुछ समय में ध्वस्त करने में समर्थ है। इसी तरह जल के लिये भी लागू होता है। जल जलाता नहीं है, पर गला जरूर देता है।

वृक्ष इंसान के बिना रह सकते हैं, पर इंसान वृक्ष के बिना नहीं

इंसान के जीवन में वृक्षों का (वनस्पति का) उतना ही स्थान है जितना पृथ्वी जल अग्नि और वायु का। मनुष्य और पशुओं के भोजन का आधार वनस्पति है। वनस्पति ही समस्त तरह की खाद्य सामग्री प्रदान करती है। अन्न हो या सब्जियाँ, हरे फल हों या सूखे फल तथा मसाले सब कुछ वनस्पति से प्राप्त होता है। सागार धर्मामृत में लिखा है—

देहचान्नादि कीटकम्

अर्थात् जैसे अन्ना कीड़ा अन्न से अलग कर दिया जाये, तो मर जाता है, वैसे इंसान और पशु को भोजन न मिले, तो वह भी जीवित नहीं रह सकता। समस्त प्रकार के खाद्य सामग्री का माध्यम वृक्ष ही है। इंसान की बीमारी का इलाज भी वृक्ष ही करते हैं। अर्थात् धरती पर यदि बीमारियाँ हैं, तो प्रकृति ने उसकी औषधियां भी दी हैं। हर घर के बाहर जो भी पेड़ लगा है, औषधि है, बस जानने के लिये जानकार चाहिये।

अनाज किसने उगाया—लोग कहते हैं, हमने अनाज उगाया है, हम किसान ही अन्न पैदा करते हैं। जरा चिंतन की गहराई में जायें, तो पता चलेगा। हमने तो केवल जमीन में बीज डाला था। बाकी धरती ने एक बीज के 20 बीज किये, उस बीज

की सुरक्षा के लिये हर अन्न के दाने पर खोल चढ़ाया। पानी ने उसे अंकुरित किया। हवा में हिला हिला के व्यायाम कराके उसे मजबूत बनाया। सूरज ने उसमें शक्ति पैदा की। और इंसान कहता है अनाज हमने पैदा किया है। हाँ, इंसान के बिना भी नहीं हो सकता और इसांन ने ही किया है ये भी झूठ है। सबने निमित्त मिलाया और सारा काम प्रकृति ने ही किया। अनाज का व्यापारी समझता है, मैंने मेहनत की है, अगर अनाज नहीं होता, तो वह किस पर मेहनत करता।

आज अनाज मंडी, सब्जी मंडी, फल मंडी, भोजनशाला, होटल, ढाबा, छोटी भोजन की दुकानें, वनस्पति का बाजार फैला पड़ा है। भोजन इंसान की मूलभूत आवश्यकता है। जैसे जल, वायु, खाली पृथ्वी, सूरज की धूप बिना पैसे भी मिल सकती है, वैसे भोजन की सामग्री बिना धन के नहीं मिलती, और खाली बैठे व्यक्ति को चार गालियाँ सुनाकर भोजन दिया है। अनाज का, भोजन के व्यापार ने आज वृहत रूप धारण कर लिया है।

अपने आपको अच्छा दिखाने के लिये इंसान वस्त्रों को धारण करता है। मूलभूत आवश्यकता, तो प्रकृति से तन की रक्षा है, परन्तु आज आवश्यकता का स्थान फैशन ने ले लिया। वस्त्रों का व्यापार चरम सीमा पर पहुँच गया है। व्यापार में प्रतियोगिता प्रारंभ हो गई है। अब देखा जाये, तो वस्त्र कहाँ से आये? रूई से, रूई कहाँ से आई पेड़ों से, पेड़ कहाँ से आये प्रकृति से अर्थात् कच्चा माल हो, तो कुछ बनाया जा सकता है और कच्चा हो ही नहीं, तो इंसान कुछ नहीं कर सकता। जैसे संसार में बहुत सारे कार्यों के लिये कागज की डायरी, कागज के फूल, कागज से संबंधित सभी तरह की वस्तु कहाँ से आई? कागज भी पेड़ से बनता है। यदि पेड़ न हो तो कागज भी न हो। अतः कागज का व्यापार भी पेड़ों पर आधारित है।

इंसान एक मकान भी बनाये तो भी उसमें इन पांचों वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है। पृथ्वी, जिस पर मकान बनाया गया है। मकान का ढांचा—ईंट, सीमेंट, रेत का है। इनको मिलने का या फेवीकॉल का काम पानी करता है। अर्थात् बिना पानी के मकान नहीं बनता, हवा और अग्नि (धूप) के बिना सूख नहीं सकता, खिड़की दरवाजे पर लगने वाली खिड़की, दरवाजे, लकड़ी, फर्नीचर लकड़ी के होते हैं और बाहर नेम प्लेट लगाता है, मैं मालिक हूँ। वर्तमान में प्लास्टिक से बनने वाली वस्तुएं भी जमीन से ही प्राप्त होती हैं। पैट्रोल जमीन से निकलता है। उसकी सफाई के बाद जो माल बचता है, उससे इन सब वस्तुओं को तैयार किया जाता है। इंसान अपना लेबल लगा कर अपना नाम डाल देता है और मालिक बन जाता है।

किसी भी कार्य को पूर्ण करने में अनेक कारण होते हैं, वैसे ही कार्य होने

में मनुष्य भी एक कारण है। जैसे मनुष्य के बिना कार्य नहीं हो सकता, तो अन्य कारणों के बिना भी कार्य नहीं हो सकता। घड़ा बनाने इंसान के साथ, धूप, पानी, अग्नि भी प्रमुख कारण है। पर अन्य कारणों के पास बोलने के लिये नहीं है और मनुष्य का अहंकार उसकी वाणी से ये बुलवाता है कि मैं मालिक हूँ मैंने किया। यह भ्रम ही भ्रमण का कारण है। जिस दिन कार्य होने के सभी कारण दिखने लगेंगे उस दिन अभिमान दूर होकर मार्दव धर्म आ जायेगा।

देवताओं का व्यापार

मनुष्य ने व्यापार करने में किसी को नहीं छोड़ा। देवी देवताओं को भी आय का साधन बना लिया। देवी देवताओं की सिद्धि करके उनसे कार्य कराते हैं और पैसा कमाते हैं। इंसान ने सारी दुनिया के जीव जन्तुओं को अपने वश में किया है। तंत्र मंत्र को सिद्ध करके देवताओं को अपने वश में कर लेते हैं और फिर उनका उपयोग संसार के अच्छे बुरे कार्यों में करते हैं। आँखों से नहीं दिखने वाले देवी-देवताओं को मनुष्य ने अपने अधीन बना लिया तथा रूप जानकर उनका आकार भी बनाया है और अपनी समझ से उनकी मूर्तियाँ बनाकर, उनका व्यापार प्रारंभ कर दिया है।

नारकियों का व्यापार

नरक धरती के नीचे है। जहाँ अत्यंत बुरे कार्य करने वाले वहाँ जाकर भयंकर दुःखों को भोगते हैं। देवता तो फिर भी इस धरती पर विचरण करते हैं पर नारकी तो आ नहीं सकते फिर भी मनुष्य की बुद्धि ने उनका व्यापार प्रारंभ कर दिया है। अर्थात् लोगों को नरक का भय दिखाते हैं। हम जैसे कह रहे हैं वैसा करो वरना तुम्हें नरक में जाना पड़ेगा और इसी भय से वो करोड़ों का व्यापार करते हैं। वे कहते हैं तो नरक में जाकर सड़ना पड़ेगा, कटना पड़ेगा, उबलते तेल में तले जाओगे। वो जो कह रहे हैं, बात सही है, नरक में असहनीय दुःख और कष्ट होता है। पाप करने से नरक जाना पड़ता है, ये बात भी सही है, पर बताने वाले का उद्देश्य उसे नरक से बचाना है या पैसा कमाना है। यदि पैसा कमाना है, तो वह स्वयं नरक जाने का रास्ता खोल रहा है।

मनुष्य मनुष्य का व्यापार करता है

मनुष्य की व्यापारी बुद्धि हर वस्तु का व्यापार करती है। व्यापार स्वार्थ है, यदि कुछ मिले, तो काम करें वरना न करें। इंसान-इंसान को दास बना कर खरीदने और

बेचने का काम भी करता। जिसमें इंसान की स्वतंत्रता खत्म हो जाती है। उसका मालिक जो कहेगा, वही करना पड़ेगा। वेश्यावृत्ति भी इंसान का ही व्यापार है। पैसा देकर शरीर का सुख खरीदते हैं। छोटे-छोटे बच्चों से काम कराते हैं। जिसे भी इंसान खरीदता है, उसके प्रति दया, करुणा की भावना खत्म हो जाती है, कठोरता जन्म लेती है। खरीदा है, पूरा उपयोग करके पैसा वसूलता है। मालिक होने पर क्रोध की तीव्रता भी बढ़ जाती है। उस वस्तु का प्रयोग वह निर्दयी बनकर भी कर सकता है।

पशु पक्षियों एवं कीड़े मकोड़े का व्यापार

पशु, पशु का उपयोग नहीं कर पाया पर मनुष्य ने पशु का उपयोग और दुरुपयोग दोनों ही किये हैं। उपयोग करने पर पशु का जीवन सुरक्षित रहता और इंसान को संसार के अनेक कार्य करने में सहयोग प्राप्त होता है। पशुओं को समय पर भोजन पानी मिलता है एवं मालिक की प्रेम भरी दृष्टि और प्रेम से पशु की पीठ पर फेरा हाथ, पशु को अत्यंत सुख देता है। जैसे मालिक अपने बच्चों का ध्यान रखता है। एक मौन पशु की सेवा इंसान के अंदर दया और करुणा को जन्म देता है। इसके बदले में पशु भी इंसान के साथ पूरी वफादारी निभाते हैं और अनेक तरह के सुख योग्यतानुसार सुख देने का प्रयास करता है एवं मालिक की रक्षा भी करता है। इंसान को दूध देते हैं, खेत में काम करते हैं। बैलगाड़ी खींचकर यात्रा करवाते हैं। तांगा में लगकर सवारी को सुविधा देते हैं। हाथी पर बैठकर इंसान सम्मान को पाता है। कुत्ता रात-रातभर जागकर घर की रक्षा करता है। गाय, भैंस पौष्टिक तृप्ति कारक दूध देकर इंसान के संपूर्ण परिवार के शरीर को मजबूत बनाते हैं। दूध, दही, मक्खन, घी आदि के द्वारा रस प्राप्त होता है। स्वादिष्ट मिठाइयां भी उन्हीं से प्राप्त होती हैं। दूध के बिना इंसान का भोजन अधूरा है।

गाँव शहरों में बड़े-बड़े पशु बाजार होते हैं। पशुओं का धन देकर लेन देन करते हैं। पशुओं की कीमत ऐसे ही होती है, जैसे कपड़ा मशीन आदि अन्य वस्तुओं की होती है। पशु एक जाग्रत प्राणी है, पाँचों इंद्रियाँ हैं, मन है, सोचता है, समझता है। डंडा देखकर भागता है, हाथ फेरने पर रोमाँचित होता है। अत्यंत जाग्रत आत्मा है, पर इतनी योग्यता नहीं कि स्वयं के द्वारा स्वयं के दुःख दूर कर पाये। जो मिलता है, उसे भोगता है, पुरुषार्थ करके दुःख दूर नहीं कर पाता। पहले कर्म के आधीन है, दूसरा मालिक के अधीन है। यदि गर्मी के दिन में मालिक पानी देना भूल जाये, तो प्यासे ही रहना पड़ता है। लेकिन जो पशु किसी के पास न रहे, तो वे भी अत्यंत कष्ट प्राप्त करते हैं।

पशु भी धरम कर सकते हैं

पशु मनुष्यों के समान लड़ते-झगड़ते हैं, प्रेम करते हैं, खेलते हैं, जैसे मनुष्य का बच्चा खेलता है, वैसे पशु पक्षियों के बच्चे खेलते हैं। क्रोध, मान, मायाचारी, लोभ सब करते हैं, भगवान महावीर ने बताया कि वे इतना धरम कर सकते हैं कि चौथा गुणस्थान एवं अणुव्रत आदि ग्रहण करके पाँचवा गुणस्थान प्राप्त कर सकते हैं। भगवान पारसनाथ हाथी की पर्याय में धर्म मार्ग में आगे बढ़े थे। शेर की पर्याय से भगवान महावीर ने धर्म का प्रारंभ किया और भगवान बने। सदुपदेश मिल जाये, तो पशु भी सुधर जाये। बैल की पर्याय में समाधिमरण किया। पशु श्रावक बन सकता है पर दीक्षा लेकर मोक्ष नहीं जा सकता। शास्त्रों में अनेकों उदाहरण हैं, जिसमें पशुओं का समाधिमरण हुआ। कुत्ता, बकरा, बैल, हाथी, शेर, गिद्ध पक्षी जटायु, तोता, बंदर आदि।

पशुओं का परिवार

जैसे मनुष्य का परिवार होता है, वैसे ही पशुओं का परिवार होता है। जैसे किसी मनुष्य में किसी माँ के बच्चे को अलग करने पर पाप लगता है, वैसे ही पशु के बच्चे को उससे दूर करने पर पाप लगता है। इसलिये घर में कुत्ता, तोता, चूहा आदि नहीं पालने चाहिए। जो इनका व्यापार करता है, वो बच्चे को भी बेचता है जो कि उसकी माँ को सहन नहीं होता, वह रोती है, तड़पती है। रुक्मणी, कृष्ण की पटरानी ने पूर्वजन्म में मोर के बच्चे को उससे अलग किया था, उसके प्रतिफल में, जन्म होते ही उसके बच्चे का अपहरण हुआ और 16 वर्ष तक वह उससे दूर रहा।

आकाश में उड़ते पक्षियों को अपनी खुशी के लिए उसे पिंजरे में कैद करना ठीक नहीं है। उसकी जगह स्वयं को रखकर देखो। एक छोटे कमरे में बंद करें, तो रहना मुश्किल फिर पिंजरा कितना छोटा होता है।

पिंजरे के पंछी रे...

मैं एक गाँव के बाहर साधु को लेने गई। वो विहार करके आ रहे थे। उन्हें आते समय पेड़ के बीच में एक रस्सी बंधी थी, उसमें पिंजरा टंगा था, जिसमें तोता बंद था, अचानक 15-20 तोते उड़कर आये रस्सी पर पिंजरे के आसपास बैठ गये, और पिंजरे के अंदर वाले तोते को देखकर जोर-जोर से आवाजें लगाने लगे, अंदर वाला तोता, बाहर वाले तोतों को देखकर छटपटा रहा था, पिंजरे से बाहर निकलने के

लिए तड़प रहा था। मालिक डंडा लेकर आया और बाहर के तोतों को भगा दिया। सभी तोते पेड़ पर जाकर बैठकर आवाजें लगाने लगे। आप महसूस कीजिये कि वह तोता कितना कष्ट में होगा। पिंजरा तो पिंजरा है, चाहे सोने का क्यों न हो। इसलिये पक्षियों को घर में नहीं पालना चाहिये। महत्व इस बात का नहीं कि आप अच्छा खिलाते हो, महत्व की बात ये है कि बंधन में रहकर हलवा पूड़ी भी नहीं सुहाती।

गाँव के पशु की दिनचर्या—पहले के समय में हर घर में पशु होते थे। पशु को धन कहा जाता था। जिस घर में पशु न हो, वह सबसे गरीब माना जाता था। लेकिन उन पशुओं की दिनचर्या क्या होती। यह बात समझना अत्यंत जरूरी है। प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उनका दूध निकाला जाता था। फिर उन्हें भोजन पानी दिया जाता था। फिर गाँव का ग्वाला आता था, सभी गाय, बैल, भैंसों के बंधन खोल दिये जाते थे। सारे गाँव के पशु एक साथ मिलकर जंगल में जाते थे और सारे दिन घास चरते थे। वहाँ खुले आकाश के नीचे पूरे दिन आनंद उठाते थे और शाम होते ही, ग्वाला एक आवाज लगाता था और वे इकट्ठे हो जाते थे और वापस घरों में आ जाते थे। वापस घर में घुसने पर ग्वाले को देखना नहीं पड़ता था कि किसका घर कौन सा है, उन्हें अपने-अपने घरों की पहचान होती थी और अपने उसी कमरे में जाते थे, जहाँ वे रात्रि विश्राम करते थे। शाम के बाद उनका दूध आदि निकाल कर फिर भोजन पानी दिया जाता था।

पशुओं की पिकनिक पार्टी

पशु इकट्ठे होकर जब जंगल में जाते थे, तो यह उनका आनंददायी सुख का समय होता था। दिन भर जंगल में स्वतंत्र घूमना और शाम को सुरक्षित वापस आना किसी पिकनिक पार्टी से कम नहीं होता था। राजा पशुओं के लिये चारागाह की जमीन को सुरक्षित रखता था। आज भी सरकार ने चारागाह की जमीन गाँव में रखी है, पर मनुष्यों ने उस पर कब्जे कर लिये।

कृष्ण को ग्वाला भी कहा जाता है। गाँव में जब रहते थे, तब गायें चराने जाते थे। बांसुरी बजाते थे। सारी गाय उनकी बांसुरी सुन कर इकट्ठी हो जाती थी। पशु खुश भी होते हैं, पशु दुःखी भी होते हैं, पशु रोते भी हैं, पशु हंसते भी हैं पर उनके चेहरे पर भाव व्यक्त सूक्ष्म रूप में होते हैं, इसीलिये उनके भाव को पढ़ने के लिये गहरी सूक्ष्म दृष्टि चाहिये। वे जंगल जाकर खुश होते थे और रात्रि खुशी-खुशी घर भी लौटते थे।

प्रसन्न गाय भैंस का दूध प्रसन्नता देता है

जो गाय भैंस प्रसन्न रहती हैं, उसका दूध विशेष लाभदायक एवं गुणकारी होता है। जो पीता है, उसे भी प्रसन्नता देता है। वर्तमान में डेयरी में पशुओं को बाहर नहीं निकाला जाता। क्योंकि शहरों में पशुओं के लिये चारागाह का स्थान नहीं है। वे एक ही स्थान पर बंधे-बंधे घुट जाते हैं और दुःखी हो जाते हैं। जैसे मनुष्य को घूमने फिरने में आनंद आता है, वैसे ही, पशुओं को भी आता है। जिस पशु को आपने भोजन, पानी और प्रेम दे दिया, वह आपको छोड़कर नहीं जायेगा, ये विश्वास रखना।

जहाजपुर में एक परिवार के यहाँ दो गायें हैं, वे दूध निकालने के बाद बिना ग्वाले के चरने के लिये बाहर भेज देते थे। एक दिन उनकी गाय वापस नहीं आई, उन्होंने बहुत ढूंढा नहीं मिली, कोई व्यक्ति उसे पकड़ कर ले गया था। कई दिन बाद मौका मिलते ही भाग कर, घर वापस आ गई। मालिक ने देखा, तो प्रसन्न हो गया। अतः बंधन में मनुष्य तो क्या पशु पक्षी भी नहीं रहना चाहते। सबको स्वतंत्रता प्रिय है। मनुष्य पर्याय से परम स्वतंत्र होने का मार्ग खुलता है। कुत्तों की अनेक कहानियाँ तो आपने सुनी होगी और देखी होगी।

पशुओं के नाम इंसान के लिये काम आये

सभी भाषाओं में पशुओं को अलग-अलग नाम से पुकारा गया है। किन्तु मनुष्यों ने पशुओं से इतना प्रेम किया कि उसने अपना नाम भी उसी शब्द पर रख लिया। जैसे—मैंनाबाई, तोताराम, शेरसिंह गजराज, गजकुमार मृगनयनी, आदि-आदि।

मनुष्य की अपनी पहचान दूसरों से

पहले लोग भगवान से प्रेम करते थे, तो नाम रखते थे, महावीर, अजित कुमार, नेमचंद ऋषभ कुमार, चंद्रकुमार। कुछ ज्योतिष के नाम पर रखते थे चंदाबाई, सूरजकुमार, ताराचंद, आदि। कभी रत्नों से प्रेम किया तो नाम रखा—हीरा लाल, पन्ना लाल, मोतीलाल, माणिकचंद, पुखराज कुमार। कभी इंसान ने पहाड़ों से प्रेम किया तो कैलाश चंद, शिखरचंद, गिरिराज, सुमेरचंद, पहाड़िया, आदि-आदि। देवों से प्रेम करने वाले, सुरेन्द्र राजेन्द्र, देवेन्द्र, धर्मेन्द्र, आदि नाम रखने लगे। फूलों से प्रेम करने वाले, फूलचंद, गुलाबचन्द्र, चंपादेवी, चमेली, कमला, कमलचन्द्र, गेंदालाल आदि नाम रखने लगे। पहले नाम कुछ भी हो, पर काम बढ़िया होता था, अब नाम छोटे-छोटे

रखे जाते रहे हैं, पर काम का पता नहीं। महावीर भगवान का यथा नाम तथा काम था। अन्य तीर्थंकर के काम भी उनके नाम से ज्यादा उत्तम थे। इंसान की अपनी पहचान न तो नाम से है, न शरीर से बल्कि उसकी पहचान उसके काम से होती है। किन्तु नाम से इतना प्रेम करता है कि उसके लिये लड़ने को भी तैयार हो जाता है।

मनुष्य का व्यापार पराधीन है

इंसान व्यापार जिन वस्तुओं का करता है, वे सब प्रकृति से प्राप्त होती हैं। अतः इंसान अपने आपको व्यापार का कर्त्ता न माने, बल्कि जीवन यापन के लिये सबके सहयोग से किया हुआ कार्य माने। तभी वह चिन्ता मुक्त होकर धर्म कार्य कर सकता है, वरना कर्ता मानकर अहंकार से भरकर, अपना पतन कर सकता है। व्यापार जीवन जीने का साधन है, जीवन नहीं। अन्य गतियों में व्यापार नहीं है, पर जीवन है। कर्म भूमि में बिना कर्म किये, जीवन धारण के साधन प्राप्त नहीं होते हैं। आवश्यकता पूर्ति व्यापार में धर्म के साथ संभव है, पर इच्छा पूर्ति के लिये लोग धर्म को छोड़ देते हैं।

नदिया के पार का
गांव में सार का
मनुष्य के व्यापार का
बड़ा ही महत्व है

सुबह-2 नल का
बाग में फल का
जीवन में जल का
बड़ा ही महत्व है

दिल में अरमान का
देवों के विमान का
इंसान की पहचान का
बड़ा ही महत्व है

समुद्र में बड़वाग्नि का
जंगल में दावाग्नि का
पेट में उदराग्नि का
बड़ा ही महत्व है

यथा राजा तथा प्रजा

देश कैसा है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वहाँ का राजा कैसा है? राजा की हर क्रिया का प्रभाव देश की प्रजा पर पड़ता है। कहा भी है—यथा राजा तथा प्रजा। 'महाजनाःगताः सो पंथः', अर्थात् महापुरुष जिस राज पर चलते हैं सामान्य पुरुष भी उनका अनुसरण करते हैं। इसलिये राजा का धर्मात्मा होना आवश्यक है। धर्म निष्ठ राजा, प्रजा का आदर्श माना जायेगा।

धर्मात्मा राजा के राज्य में धर्मात्मा को पूर्ण संरक्षण प्राप्त होता है। धर्म के उत्सव में धार्मिक पर्वों पर पूर्ण भक्ति और उत्साह के मनाये जाते हैं, क्योंकि राजा स्वयं उनका समर्थक है। ऋषि, मुनि, यति, साधु की सेवा भी अच्छी प्रकार से होती है। ऋषियों के आशीर्वाद और उनकी प्रेरणा, दिशा निर्देशन भी राज्य को प्राप्त होता है। धर्मात्मा होने के कारण राजा भी न्याय उचित प्रकार से करता है।

राजा जब व्रत, संयम, पूजा, भक्ति स्वयं करता है, तो प्रजा भी व्रत, संयम, पूजा की ओर अग्रसर रहती है। जिससे असंयम के द्वारा होने वाले पापों में कमी आती है। धर्मात्मा बनने के बाद इंद्रियों पर, वाणी पर संयम होता है, विचार उत्तम होते हैं। जिससे व्यर्थ का क्लेश और लड़ाई-झगड़े नहीं होते। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील आदि पाप लोगों के द्वारा छोड़ दिया जाता है। जिससे देश में शांति होती है और जब लड़ाई विवाद नहीं होंगे, तो राजा की शक्ति व्यर्थ के विवाद सुलझाने में खर्च नहीं होगी। धर्मात्मा राजा को लोग भगवान के समान मानते हैं। राजा के द्वारा बोला गया वचन, उनके लिये पत्थर की लकीर होती है? इसीलिये देश में बिना मेहनत के अनुशासन और व्यवस्था पर होने वाला समय खर्च नहीं होता।

राजा जब स्वयं शांत स्वभावी होगा, तो उसका प्रभाव प्रजा पर भी पड़ेगा। साथ ये वीरता का गुण भी राजा में होना चाहिये, इसके बिना राजा के सम्मान की रक्षा नहीं हो सकती। जिस समय जिसकी आवश्यक हो, उसका प्रयोग करे। धर्मात्मा राजा जब बुद्धिमान होगा तो देश के लोगों की उन्नति के लिये भी बड़े-बड़े काम

करेगा। राजा शक्तिमान शूरवीर होगा, तो देश के शत्रुओं से देश की रक्षा करेगा।

राजा का पद इस प्रकार होता है, जैसे घर में पिता का। राजा प्रजा का संचालन अपनी संतान के समान करता है। जैसे पिता प्रेम करता है, तो संस्कार डालने के लिये डांटता भी है। नहीं मानने पर सजा भी देता है। लालन-पालन भी करता है।

आचार्यों ने भी भगवान की भक्ति करते हुये देवों का राजा सौधर्म इन्द्र और चक्रवर्ती आदि का वर्णन करते हुये कहा है—मैं उन भगवान की वंदना करता हूँ, जिनकी वंदना स्वर्गों के देव भी करते हैं। द्रव्यसंग्रह ग्रंथ के मंगलाचरण में सिद्धांत चक्रवर्ती आ. नेमिचंद्र स्वामी ने कहा है—

जीवमजीवं दव्वं, जिणवर वसहेण जेण विद्दिट्ठं।
देविंदविंदवंदं, वंदे तं सबदा सिरसा।

अर्थात् सौ इंद्रों से जो वंदित है, ऐसे जिनवर की मैं सदा वंदना करता हूँ। सौ इंद्र।

भवणालयचालीसा, विंतरदेवाण हांति बतीसा।
कप्पामरचउवीसा, चंदो सूरो णरो तिरियो।

भवन वासियों के 40 इंद्र, व्यंतरों के बत्तीस इंद्र, कल्पवासियों के 24 इंद्र, चंद्रमा सूर्य, मनुष्यों में चक्रवर्ती, तिर्यञ्चों का राजा शेर 40+32+24+1+1+1=100।

आ. पूज्यपाद स्वामी शान्तिभक्ति, चतुर्विंशति तीर्थंकर भक्ति, अंचलिका में लिखते है बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्ती, ऋषि, मुनि, यति से वंदनीय तीर्थंकरों की मैं अर्चना पूजा, वंदना और नमस्कार करता हूँ। भक्तामर स्तोत्र का पहला शब्द है, भक्तामर अर्थात् भक्त देवता जिनकी स्तुति करते हैं। उन चरण कमलों की वंदना मैं भी करता हूँ।

आखिर कारण क्या था, जो राजा महाराजा चक्रवर्ती का वर्णन किया, उनका नाम लिया। बस कारण यही है, जब राजा, महाराजा जिनकी पूजा करते हैं अर्थात् मुझे भी उनकी वंदना करना चाहिये। वे भगवान कितने उत्कृष्ट होंगे, जिनके चरणों में सौधर्म इन्द्र अपना मस्तक झुका देता है। अर्थात् अब मुझे देखने परखने की जरूरत नहीं है, उन्होंने वंदना की, इसीलिये मुझे भी करना चाहिये। चक्रवर्ती जब अपनी सेना लेकर प्रभु के दर्शन को जाता है, तो सामान्य प्राणी तो पीछे-पीछे स्वयंमेव भागने लगते हैं।

अर्थात् महापुरुषों के द्वारा की गई पूजा लोगों के हृदय में प्रभावना का कारण बनती है। लोगों की श्रद्धा मजबूत करने में कारण बनती है। इसलिये राजा का

धर्मात्मा होना आवश्यक है। जो राजा स्वयं शराब पीकर नशे में पड़ा रहेगा, वह अपनी प्रजा को कहाँ सत्पथ का रास्ता दिखा पायेगा।

आपका प्रश्न होगा वर्तमान में तो राजा नहीं है। फिर आप किसकी बात कर रहे हैं। जो जहाँ का संचालन कर रहा है। वह वहाँ का राजा है। अर्थात् परिवार में पति-पत्नी घर का संचालन कर रहे हैं, तो आप अपने घर के राजा-रानी हैं। मुहल्ले के राजा पार्षद हैं, गाँव का राजा एसडीएम है। कोर्ट का राजा जज है। जिलों का राजा कलेक्टर है। विधायक है। सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री जो जहाँ शासन कर रहा है, वह वहीं का राजा है। समाज के राजा अध्यक्ष, मंत्री एवं अन्य कार्यकर्ता हैं। जितने पद बताये, यदि इतने लोग धर्मात्मा बन जायें, तो देश को सुधरने में समय नहीं लगेगा। इसलिये मेरी भावना में कहा है—

धर्मनिष्ठ होकर राजा भी।
न्याय प्रजा का किया करे॥

बच्चों में मजा का
फलों में ताजा का
देश में राजा का
बड़ा ही महत्व है

सर्दी में साजा का
बजाने में बाजा का
यथा राजा तथा प्रजा का
बड़ा ही महत्व है

कार्यक्रम में सेशन का
रसोई में बेसन का
बड़ों के प्रेरणा निर्देशन का
बड़ा ही महत्व है

उम्र में साठ का
सेठों में ठाठ का
मां बाप की डांट का
बड़ा ही महत्व है

भक्ति में इष्ट का
सामान की लिस्ट का
राजा में धर्म निष्ठ का
बड़ा ही महत्व है

कमरे में कोना का
वस्तु में नोना का
चैन से सोना का
बड़ा ही महत्व है

सुख का रास्ता अलग है, शान्ति का रास्ता अलग है

संसार का हर जीव सुख और शांति के अथक प्रयास करता है। सुख और शांति को समझ कर प्रयास किया जाये, तो गाड़ी सही रास्ते पर चलेगी। सुख का रास्ता अलग है, शांति का रास्ता अलग है। परिचय न होने की वजह से हम सुख की जगह पर शान्ति ढूंढते हैं, जबकि वह वहाँ है ही नहीं।

इंद्रिय विषयों की इच्छापूर्ति सुख है। आत्मा के परिणामों में होने वाली निर्विकल्पता शान्ति है। सुख के साथ शान्ति का संबंध नहीं है। सुख सातावेदनीय कर्म के उदय में मिलता है। शान्ति आत्मा के भावों को शांत करने पर अर्थात क्रोध मान, माया, लोभ के परिणाम को शांत करने पर मिलती है। सुख पाने में हम पराधीन है। कर्म होगा, तो सुख मिलेगा, नहीं होगा, तो नहीं मिलेगा। धर्म और ज्ञान के द्वारा किया गया पुरुषार्थ का फल शान्ति है।

सुख उन वस्तुओं से मिलता है, जो आँखों से दिखाई पड़ती हैं, शान्ति उनसे मिलती है, जिसमें सुख दिखाई नहीं पड़ता। इसलिये सारा संसार उन वस्तुओं को पकड़ता है, जिन्हें ताले में बंद किया जा सके। जिसे हाथों से गिना जा सके। जिसे देखा और दिखाया जा सके। जिसे सजा संवार सके। इंसान सुख प्राप्ति के लिये हर पल सावधान है। सुख की कमी न हो जाये, इसलिये हर वस्तु समय पर और हर स्थान पर जमा कर रखता है। ज्यादा से ज्यादा वस्तुएँ इकट्ठी करके सुख पाने की कोशिश करता है। अधिक से अधिक कपड़े अधिक से अधिक जमीन जायदाद, दुकान, मकान, सोना, चांदी, रत्न, गाड़ी, साड़ी, लाड़ी इकट्ठी करता है। सोचता है, इतना सब कुछ होगा तब शान्ति मिलेगी। पर पता चलता है, सुख इकट्ठा करने में शान्ति चली गई।

सुख और शान्ति साथ रहे, यह आवश्यक नहीं है। क्योंकि सुख इकट्ठा करने में आकुलता व्याकुलता करनी पड़ती है और शान्ति आकुलता रहित भावों के द्वारा प्राप्त होती है। संसार इंद्रिय सुख को ही शान्ति मान लेता है, इसलिये वह सुख

का उपाय तो करता है, शान्ति का नहीं। सुख प्राप्त करने के लिये क्रोध करना पड़ता है और शान्ति प्राप्ति के लिये क्षमा करना पड़ता है। वस्तु इकट्ठी करने के बाद अभिमान करने से सुख मिलता है पर शान्ति के लिये भावों को मुलायम, मृदु और कोमल बनाना पड़ता है। सुख की प्राप्ति के लिये मायाचारी करनी पड़ती है, जबकि शान्ति के लिये सरल होना पड़ता है। लोभ इकट्ठा कराकर सुख का स्वाद लेता है जबकि संतोष रखने पर शान्ति की प्राप्ति होती है। सुख का रास्ता अलग और शान्ति का रास्ता अलग है। दोनों को अलग-अलग जानना, पहचानना आवश्यक है। वरना शान्ति के नाम पर सुख इकट्ठा करके परेशान होता रहेगा और शान्ति को बदनाम करता रहेगा।

आप तीर्थंकर भगवान को देखिये जब वे घर में थे, तब उनके पास सुख की कमी नहीं थी। शान्ति, कुंथु, अरहनाथ भगवान तो छह खंड के चक्रवर्ती थे। 96 हजार रानियां थीं। सोने के महल में रहते थे। उनके सुख तो उत्कृष्ट थे, पर परम शान्ति नहीं थी, उन्हें परम शान्ति की पहचान थी, इसीलिये इंद्रिय सुख छोड़कर परम शान्ति की प्राप्ति में, जंगल में चले गये और परम उत्कृष्ट शान्ति को प्राप्त किया। जिनके पास शान्ति है, हमें उनसे सुख का स्वाद फीका लगने लगता है। प्रभु के पास शान्ति बरस रही है, पर सुख नहीं। इसलिये शायद मंदिर में आकर भी शान्ति नहीं मिल पाती।

वर्तमान में लोगों के पास सुख के साधन घर में भरे पड़े हैं, पर कषायों की तीव्रता के कारण शान्ति न होने से सारे साधन भी सुख नहीं दे पाते। शान्ति के बिना संसार की वस्तुएँ सुख देने में असमर्थ है। सुख थोड़ा हो और शान्ति अधिक हो, तो जीवन अच्छा लगता है। लेकिन शान्ति के बिना सुख बेकार है।

शान्ति प्राप्ति के उपाय

तीर्थंकर भगवान ने जहाँ से शान्ति प्राप्त की है, बस वहीं से हमें प्राप्त होगी। घर में रहकर भी बहुत अधिक धर्म किया जा सकता है। घर में रहकर तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो सकता है। अर्थात् घर में रहकर सोलह कारण भावनाओं को इतनी उत्कृष्ट अवस्था में भाया जा सकता है कि तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो सके। राजा श्रेणिक भी एक राजा थे, घर में रहते थे। भगवान महावीर के चरण सान्निध्य में तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया। छहढाला में पंडित दौलत राम जी ने लिखा है–

यो श्रावक व्रत पाल, स्वर्ग सोलम उपजावे

अर्थात् घर में रहने वाला श्रावक यदि व्रतों का पालन निर्दोष करता है, तो

वह सोलहवें स्वर्ग तक जा सकता है। घर में रहना बुरा नहीं है, पर घर में रहकर क्रोध, मान, माया, लोभ की तीव्रता खतरनाक है तथा हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह को सीमित नहीं करना ये असंयम में कारण है। यही निमित्त जीव के दुर्गति के कारण बन जाते हैं। आपने इतनी मेहनत से सुख इकट्ठा किया है, उसका सुख भी नहीं लेने देते। अतः शान्ति का उपाय धर्म के अलावा कुछ नहीं हो सकता। प्रभु का दर्शन करते समय उनकी शान्ति का अनुभव स्वयं भी करें। कषाय और पाप रहित भाव को भाकर। पूजा से प्रभु के गुणों को स्वयं में खोजने का प्रयास करें। स्वाध्याय के माध्यम से शास्त्रों को पढ़कर, महापुरुषों के जीवन चरित्र से, सीखे कि दुःख में भी शान्ति का अनुभव कैसे किया जाता है। कर्मों की आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा कैसे होती है? समझकर कर्मों से बचने का प्रयास करें। अध्यात्मिक ग्रंथों को पढ़कर आत्मा के सच्चे स्वरूप को जानकर, ध्यान के माध्यम से अनुभव करें। फिर देखिये शांति कैसे नहीं आती है। शान्ति आपके पास तो आयेगी ही, आपके साथ जो लोग रहते हैं, आपको देखकर उन्हें भी शांति मिलेगी। क्योंकि शांति भी फैलती है। दूसरों पर प्रभाव डालती है। आपकी शांति को देखकर लोग धार्मिक बनने की शिक्षा लेंगे। अतः दर्शन, पूजा, स्वाध्याय, व्रत, उपवास आदि अवश्य करें। सुख प्राप्ति में बहुत मेहनत है। पर शान्ति बिना मेहनत किसे मिलती है। लोग एक करोड़ की गाड़ी में बैठकर भी अशान्त रहते हैं। लोग करोड़ों की कोठी में रहकर भी दुःखी रहते हैं। लोग सोना-चांदी और महंगे वस्त्र पहनकर भी दुःखी रहते हैं। पर जंगल में रह कर भी शान्ति को प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि शान्ति आत्मा की वस्तु है और सुख, इंद्रिय, विषय शरीर की वस्तु हैं। शरीर सुख के पीछे जितना भागोगे, उतना दुःख आयेगा, क्योंकि सुख पराधीन है और शान्ति स्वाधीन है, स्वयं से स्वयं को मिलनी है। जो चीज हमारे पास से मिलेगी, उस तरफ पुरुषार्थ करो, तो शान्ति ही शान्ति फैल जायेगी।

चेहरे की कान्ति का
टूटने में भ्रांति का
जीवन में शांति का
बड़ा ही महत्व है

बच्चों में इन्जॉय का
छोड़ने में हाय का
शांति प्राप्ति के उपाय का
बड़ा ही महत्व है

वर्तमान की शिक्षा सप्त व्यसन सिखाती है

वर्तमान समय में ज्ञान उन्नति के शिखर पर पहुँच रहा है। सरकार जागरूक है, देश के हर बच्चे को शिक्षित करने के लिये अरबों रुपये खर्च कर रही है। खाना भी खिलाती है, किताबें, ड्रेस, समय-समय पर इनाम भी देती है। किसी तरह से साक्षर हो जायें। बच्चों के माता-पिता अत्यंत जागरूक हैं कि बच्चे को किस स्कूल में एडमीशन करायें, कहाँ कोचिंग और ट्यूशन पढ़ाई जाये। इसके लिये वे लाखों रुपये खर्च करते हैं। स्वयं पढ़ाते हैं, स्कूल में टीचर पढ़ाती है, सब पर ध्यान देती है। बड़े-बड़े कॉलेज स्कूलों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जहाँ पहले गाँव में एक स्कूल हुआ करता था, आज हर गली और हर मोहल्ले में कई स्कूल है। जितने स्कूल हैं उतने मंदिर नहीं है।

इतना सब कुछ होते हुये भी दुःख बढ़ता हुआ नजर आ रहा है। संस्कार विहीन पीढ़ी होती जा रही है। बच्चे पढ़ाई करने बाहर जाते हैं और वहाँ पढ़ाई के साथ सप्त व्यसन के सेवन की शिक्षा साथ ले आते हैं। शराब, जुआँ, स्त्री सेवन, चोरी आदि के अवगुण साथ आ जाते हैं। अक्षर ज्ञान से शिक्षित होने मात्र से सुख की प्राप्ति नहीं होती। वर्तमान की शिक्षा तो पेट भरनी विद्या है। पैसे कमाने की विद्या है। भोग, उपभोग की सामग्री इकट्ठी करने की विद्या है। अहंकार बढ़ाने वाली विद्या है। इससे सच्ची शांति और सच्चा सुख प्राप्त नहीं हो सकता। शरीर के सुख की विद्या शरीर को सुखी करे, इस बात की कोई गारंटी नहीं।

किन्तु भगवान महावीर ने जो ज्ञान दिया है, उसमें संस्कार भी है, साधना भी है, त्याग से होने वाला सुख भी है, और आत्मिक ज्ञान की उपलब्धि भी है। भगवान महावीर का एक-एक शब्द जीवन की प्रयोगशाला में खरा उतरता है। प्रभु की शिक्षाएँ शास्त्रों में आचार्यों के द्वारा लिपिबद्ध है। उन्हें विनयपूर्वक पढ़ने को स्वाध्याय कहते हैं।

स्वाध्याय के पाँच भेद हैं–1. वाचना, 2. पृच्छना, 3. अनुप्रेक्षा, 4. आम्नाय, 5. धर्मोपदेश

वाचना–शास्त्र को विनयपूर्वक पढ़ना, सबको सुनाना, समझाना और स्वयं भी समझने की कोशिश करना। यह वाचना कहलाती है।

पृच्छना–मन में कोई जिज्ञासा होने पर गुरु से अथवा किसी ज्ञानी से पूछना पृच्छना कहलाती है। वर्तमान में प्रश्न आपसे पूछे जाते हैं, कि शास्त्रों में से उत्तर खोज के लायें, ताकि आप शास्त्रों का अध्ययन कर सकें और ज्ञान की प्राप्ति कर सकें।

अनुप्रेक्षा–पढ़े हुये विषय पर बार-बार चिन्तन करना अनुप्रेक्षा कहलाती है।

आम्नाय–किसी भी शास्त्र की गाथा आदि कोई पाठ स्तोत्र आदि को याद करना आम्नाय कहलाता है।

धर्मोपदेश–जिनधर्म के ज्ञानी, साधु संतों के द्वारा धर्मात्मा के हित में बताया गया मार्ग धर्मोपदेश कहलाता है।

इस तरह भगवान महावीर की वाणी समझने के लिये ये पाँच भेद हैं। जीवन में स्वाध्याय की पूर्णता पांचों के माध्यम से पूर्ण होती है।

भोजन में खीर कर
पीने में नीर का
तीर्थंकरों में महावीर का
बड़ा ही महत्व है

शहरों में रिक्शा का
घूमने में नक्शा का
भावनाओं में अनुप्रेक्षा का
बड़ा ही महत्व है

मकड़ी में जाला का
फेरने में माला का
वीर प्रभु की प्रयोगशाला का
बड़ा ही महत्व है

किताब में अध्याय का
पंचपरमेष्ठी में उपाध्याय का
करने में स्वाध्याय का
बड़ा ही महत्व है

पशुओं में चरने का
कर्म के हरने का
ध्यान में विचरने का
बड़ा ही महत्व है

सावन में बने पावन, भादों में बने भद्र

गर्मी से तपी धरती पर जब सावन की फुहार पड़ती है, तब संसार के सभी जीवों को आनंद से भर देती है। रोम रोम पुलकित कर देती है। चारों तरफ हरे-हरे पहाड़, मैदान में बिछी हरी घास, वृक्षों की हरियाली, आँखों को बड़ा सुकून देती है। मन को शांति देती है। लोग पिकनिक मनाने जाते हैं, झूला झूलते हैं। जीवन के आनंद को उठाकर कुछ समय संसार के दुःखों को भूल जाते हैं। पर सावन को अध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाये, तो इस महीने में व्रत, उपवास करने के अनेक अवसर आते हैं। सावन सुदी सप्तमी को भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक व्रत, उपवास कर मनाया जाता है। इस समय पर अनेक शहरों में अनेक साधु संतों की चतुर्मास स्थापित हो जाते हैं। जिससे श्रावकों के दिनचर्या में परिवर्तन आ जाता है और दैनिक गतिविधि पूर्ण रूप से धार्मिक हो जाती है। लोग बाजार का भोजन छोड़ देते हैं, रात्रि भोजन छोड़ देते हैं। आलू प्याज आदि अशुद्ध पदार्थ छोड़ देते हैं। सावन में पावन बनने की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। या यों कहें कि भादों की तैयारी सावन से प्रारंभ हो जाती है।

सावन के बाद भादों का महीना, तो हर व्यक्ति के मन को धर्म के प्रति समर्पण करने की भावना जाग्रत कर देता है। त्याग की भावनाएँ स्वयमेव जाग्रत हो जाती है, भादो लगते ही दशलक्षण पर्व की तैयारी प्रारंभ हो जाती है। मानसिक तैयारी कम होती है श्रृंगार और भोजन की तैयारी ही अधिक होती है। भोजन की तैयारी के साथ मानसिक धर्म की तैयारी भी अवश्य करनी चाहिये, जिससे जीवन में परिवर्तन आता है।

दश धर्मों की व्याख्या अनेक बार पढ़ी है और सुनी है, पर अनुभव में नहीं आई है। दशलक्षण धर्म की पूजा जीवन में अनेक बार की है। धर्म केवल पूजा के लिये नहीं, वरन पूजा के साथ-साथ जीवन में उतारने के लिये है। संसार के दुःख से निकाल कर सुख में रखने के लिये है। मगर हम दशधर्मों की उपयोगिता समझ ही नहीं पाते हैं। सुख का खजाना लेकर, हम सुख को संसार से माँगते हैं।

सावन पावन बनाने आता है और भादों भद्र बनाने आता है, अवश्य बनें।

बंधन से मिलेगी स्वतंत्रता

भारत एक ऐसा देश है जहाँ स्वतंत्रता दिवस भी मनाया जाता है, रक्षाबंधन पर्व भी मनाया जाता है। अद्भुत संयोग है इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस और रक्षाबंधन पर्व एक ही दिन मनाया जा रहा है। देश को अंग्रेजों के बंधन से मुक्ति मिली, दूसरी तरफ विष्णु कुमार ने मुनिराजों का उपसर्ग दूर किया था। धर्मात्मा के द्वारा धर्मात्मा की रक्षा की गई थी। वही रक्षा पर्व भाई बहन की रक्षा के बंधन में सिमट कर रह गया। सदियों से चला आ रहा पर्व पंद्रह अगस्त को आया।

तिथि आगे पीछे होती रहती है, पर स्वतंत्रता दिवस तो पंद्रह अगस्त को ही मनाया जाता है। दोनों का संयोग सन् 1994 के बाद यह संयोग 2019 में आया है। 25 वर्ष बाद। देश की आजादी एक महत्वपूर्ण कार्य है। अपने देश में रहकर हमें दूसरे के आदेशों का पालन करना पड़े, अपनी इच्छा धर्म-कर्म न कर पाये, तो यह बड़े कष्ट की बात है। 200 वर्षों तक देश गुलाम रहा पर 1947 में पंद्रह अगस्त को देश ने स्वतंत्रता का झंडा लहराया था। स्वतंत्र देश में सुख की सांस ली थी। धर्म-कर्म करने का स्वतंत्र अधिकार मिला था।

दुर्जन और सज्जन कर्म भूमि के हर काल में पैदा होते हैं। दुर्जनों के द्वारा सज्जनों को कष्ट दिया जाना, हर काल की घटना है। अकंपनाचार्यादि मुनिराजों पर बलि आदि मंत्रियों के द्वारा जो उपसर्ग हुआ था, वह बड़ा ही कष्टप्रद था। पर जहाँ उपसर्ग करने वाले होते हैं, वही उपसर्ग दूर करने वाले भी होते हैं। कहा जाता है कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है।

वही घटना समय के साथ परिवर्तित होते-होते रक्षा बधंन का त्योहार बन गया। जिसमें बहन के द्वारा भाई को राखी बांधना एवं भाई के द्वारा बहन की रक्षा का संकल्प लिया जाता है। संकल्प को हर वर्ष दोहराया जाता है। जो जीवन में नई उमंग और उत्साह को भर देता है।

वर्तमान में सम्पत्ति को लेकर भाई बहन के बीच तनाव और संबंधों में दरार

आ रही है। संबंधों में जब धन बीच में आ जाता है, तब प्रेम में कमी आ ही जाती है। धन भाई से भाई को अलग कर देता है। धन पिता-पुत्र में झगड़ा करवा देता है। धन पति-पत्नी में लड़ाई करवा देता है। रिश्तों को मजबूत बनाने के लिये ईमानदार होना आवश्यक है। रिश्तों को निभाने के लिये समर्पण जरूरी है।

प्रभु के सेवादार का
कुत्ते में वफादार का
मनुष्यों में ईमानदार का
बड़ा ही महत्व है

मध्य प्रदेश में सादों का
गांव में कोदो का
महीनों में भादो का
बड़ा ही महत्व है

जीव को नहीं सताने का
अच्छे से जीवन बिताने का
रिश्तों को निभाने का
बड़ा ही महत्व है

सुबह-2 मंजन का
आंखों में अंजन का
धरती पर सज्जन का
बड़ा ही महत्व है

करने में मनपावन का
वस्तुओं में मनभावन का
महीनों में सावन का
बड़ा ही महत्व है

काशी में पंडा का
गांव में कंज का
स्वतंत्रता दिवस पर झंडा का
बड़ा ही महत्व है

हिमाचल में नाहन का
पर्वत पर पाहन का
रक्षाबंधन में भाई बहन का
बड़ा ही महत्व है

शरीर को सुखी, मशीन कर सकती है, पर

v kRe k d ks l {qkh d j usd h d kbZ e' khu u gha gS

आपकी दृष्टि में सुख क्या है? यदि आपकी लड़की की शादी हो गई तो आप, उसे सुखी देखने के लिये, क्या-क्या सुख की अपेक्षा रहेगी अर्थात् लड़की के घर में बर्तन साफ करने वाली हो, कपड़े धोने वाली हो, झाडू पोछा लगाने वाली हो, भोजन बनाने वाली हो। उसे कोई काम न करना पड़े। नहाने जाये, तो गरम पानी की बाल्टी भरी मिले। कपड़े तौलिया हाथ में मिले। सोना चांदी के आभूषण के भंडार हो। तब आप कहेंगी कि मेरी बेटी बहुत सुखी है। सारी दुनिया के सुख उसके घर में है। यदि वो घर में सारा काम करती है, तो आपको कहीं न कहीं कष्ट होगा कि मेरी बेटी को इतना काम करना पड़ता है। आपका सुख काम नहीं करने में है।

अब इसका दूसरा हिस्सा देखिये शरीर का अंग मेहनत माँगता है। जैसे बंद पड़ी मशीन में जंग लग जाती है। गाड़ी यदि खड़ी रहे तो खराब हो जाती है। चाकू यदि काम न आये तो जंग लग जाती और यदि ये चीजें चलती रहें, तो ठीक रहती है। ठीक ऐसे ही हमारा शरीर है। ये जितनी मेहनत करता है, उतना ही मजबूत होता है। ए.सी. में बैठने वालों का हीमोग्लाबिन कम रहता है और जून के महीने में धूप पत्थर तोड़ने वालों का हीमोग्लोबिन पर्याप्त आता है। कोई विटामिन की कमी नहीं रहती। इसका यही कारण है कि चलती हुई मशीन और बंद पड़ी मशीन। और बंद पड़ी मशीन खराब हो जाती है। मेहनत करता हुआ शरीर और अधिक शक्ति पैदा करता है। काम करने वालों को सर्दी में भी गर्मी लगती है। क्योंकि मशीन चल रही है।

आटा को जितना मसला जाता है, रोटी उतनी ही मुलायम होती है। शरीर से जितनी मेहनत की जायेगी, शरीर की नसें भी मुलायम होंगी। वर्तमान में मशीनों ने इंसान के शरीर की शक्ति कमजोर कर दी है। लगता है कि मशीनों से सुख मिला है, पर बीमारियों का कारण यही मशीन हैं। चक्की, कुआं, ओखली, मूसल

आदि शरीर का व्यायाम था और काम था। अब बटन दबाते हर चीज मिल जाती है। इसीलये शरीर रोगों का घर बन गया है।

काम से छुट्टी मिली, तो शरीर को दवाइयों का काम मिल गया। दर्द की तरफ ध्यान लगा रहता है। खेत में जो फसल उगती है, वह भी पूरी सर्दी, गर्मी, बरसात को झेलती है। हवायें फसलों को हिला-हिला के एक्सासाइज कराती हैं, तभी उनमें मजबूती आती है, तो इंसान का शरीर आराम से कैसे स्वस्थ रह सकता है?

दूसरा हिस्सा हमारा मन है। शरीर को सुख देने के लिये मशीन बन गई, पर मन को सुखी हमें स्वयं करना होगा। लोग कहते हैं, संसार की उलझनों के बीच हम खुद को सुखी कैसे रखें। एक दुःख जाता है, तो दूसरा आ जाता है। कभी कोई कुछ कह देता है, कभी कोई कुछ कह देता है, कितना भिड़ना पड़ता है संसार से।

जैसे शरीर की मजबूती मेहनत करने से आती है, वैसे है मन की मजबूती भी उलझनों को सुलझाने से आती है। जिन्दगी जीने का तरीका, इन्हीं सब लोगों के द्वारा सीखा जाता है। उलझन में जब कोई फंस जाता है, तो उससे निकलने के लिये मन रास्ता खोजता है। दिमाग खर्च करता है। ऐसे करते-करते बुद्धि तेज हो जाती है। बुद्धि तेज सीधे-सीधे रास्तों पर चलकर नहीं होती। उलझन को सुलझाने में होती है। जीवन में संघर्ष, दुःख, कठिनाईयाँ, परेशानी, दुर्घटना, अग्नि परीक्षा का काम करते हैं। जो पत्थर में पड़े सोने को संघर्ष की अग्नि में तपाकर निखार करके शुद्ध बना देते हैं।

मंदिर यदि दूर भी हो तो पैदल जाइये शास्त्र यदि कठिन भी हो, तो उसे उपयोग स्थिर करके पढ़िये। घर के काम अपने हाथों से स्वयं करिये। इससे अभिमान नहीं आता। धर्मात्माओं को भोजन कराने में आलस न करें। सर्दी, गर्मी को लेकर, भगवान की पूजा न छोड़ें। बच्चों को बाजार का सामान न खिलाकर अपने हाथ से बनाकर खिलायें। शारीरिक और मानसिक शक्ति का उपयोग करें, बचाकर न रखें। सुख शक्ति के प्रयोग में उत्पन्न होगा। शक्ति को बचाने में नहीं।

जैसे जमीन में छोटा बीज डाल कर सम्यक मेहनत करते हैं, तो एक बीज के बीस बीज हो जाते हैं। जैसे लोग थोड़ी सी पूंजी लगाकर व्यापार में मेहनत करते हैं, तो अधिक धन इकट्ठा होता है। ऐसे ही छोटे से मन से मेहनत की जाये, तो अनंत ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। छोटे से शरीर से बड़े काम की संभावना की जा सकती है। जैसे बीज को खेत में न डालकर तिजोरी में रखा जाये, तो नष्ट हो जायेगा। ऐसे इस शरीर से मेहनत न की जाये, इस मन से अच्छे कार्य न किये जायें तो यह तन और मन भी मिलना बेकार हो जायेगा। जैसे—ए.सी. पंखा,

कूलर आदि मशीन है, पर इनका उपयोग न करें तो लोग मूर्ख समझेंगे। ऐसे शरीर रूपी मशीन और मन रूपी चालक मिलने के बाद भी यदि इसको चलाया नहीं, तो मनुष्य भव बेकार हो जायेगा।

आलस और प्रमाद को छोड़कर किसी भी कार्य को करने में उत्साहित रहे। उत्साह जाग्रत इंसान की पहचान है। काम मिलते ही दौड़ पड़ता है। सारी ऊर्जा उस कार्य की सफलता में लगा देता है। आलसी व्यक्ति काम मिलने के बाद हिसाब किताब लगाता है। फायदा होगा कि नुकसान होगा। करूँ कि न करूँ। अच्छे काम करने में भी सोचता है कि कोई क्या कहेगा। ऐसे लोग योग्यता होते हुये भी आलस में अच्छे कार्य को नहीं कर पाते। बुद्धि, ज्ञान, शक्ति का उपयोग करने में आलस बाधक बन जाता है। जिस व्यक्ति को काम करने में आलस आता है, लक्ष्मी उसका साथ छोड़ देती है।

जैसे पैसे से पैसा बढ़ता है, वैसे शक्ति से शक्ति बढ़ती है। जितनी मिली है, उतनी खर्च करो तो और आयेगी। नहीं करोगे तो जो मिली है, वो भी आधी रह जायेगी। उसे फिर बीमारी और टेंशन में लगाओगे तो और कम रह जायेगी। अच्छे कार्यों में लगाओगे तो चौगुनी बढ़ती चली जायेगी। कितना भी पढ़ा लिखा आदमी हो, यदि अभ्यास छोड़ दे तो एक दिन वो भी मूर्ख हो जायेगा। जैसे बगीचे में फूल उगाने के लिये घास फूस अलग करनी पड़ती है, वैसे ही अच्छे कार्य को करने के लिये बुराईयों की घास फूस अलग करनी पड़ेगी। अतः तन और मन को स्वस्थ बनाने के लिये इनसे प्रतिदिन मेहनत करवाना आवश्यक है।

आ. ने कहा है कि मन रूपी बंदर को बांधने के लिये स्वाध्याय रूपी रस्सी से बांधना जरूरी है और यह जीवन का प्रेक्टीकल भी है, जब स्वाध्याय की गहराई में उतरते हैं, तो मन में विशुद्धि बढ़ती है, मन प्रसन्न रहता है। किसी कारणवश स्वाध्याय न हो, तो मन पुनः भागना प्रारंभ कर देता है। अतः ज्ञान की जंजीर ही मन को बांध कर पापों में जाने से बचा सकती है।

स्वस्थ तन में स्वस्थ मन निवास करता है। तन को स्वस्थ रखने के लिये तन से मेहनत के कार्य अवश्य कराये।

पक्षियों से हम क्या सीखें

कोयल–कोयल का रूप भले ही काला हो, पर सारा संसार उसकी मीठी बोली की प्रशंसा करता है। कहीं भी थोड़ी आवाज सुनाई पड़ जाये, तो झांक-झांक कर देखते हैं कोयल कहाँ से बोल रही है। मीठी वाणी, प्रिय वाणी, विनम्र वाणी, मधुर वाणी हर कोई सुनना चाहता है। यदि आप चाहते हैं कि आपकी बात हर कोई सुने, तो अपनी वाणी में विनम्रता, मधुरता लाइये तथा जैसे कोयल 24 घंटे नहीं बोलती, कभी-कभी कूकती है। वैसे ही आप कम बोलिये, काम का बोलिये। फिर लोग आपकी बोली सुनने कैसे तरसते हैं?

कोयल से दूसरा गुण सीखिये कि किसी को सुनाने के लिये नहीं बोलती। वह जब आनंदित होती है, तो मधुर कंठ से मीठी बोली निकलने लगती है। वह कभी भीड़ का इंतजार नहीं करती, वह तो स्वयं के भावों से बोलती है। ऐसे आप भगवान की भक्ति मन में उमड़े तो, भजन गाने शुरू कर दीजिये, ये मत देखिये कि कौन आपका भजन सुन रहा है, कौन नहीं? जीवन में सारे काम दिखाने को न करें, कुछ ऐसे भी करें, जिससे आपको अपनी आत्मा में आनंद की प्राप्ति हो। हर कार्य की प्रशंसा की अपेक्षा न करें। यदि आपने ऐसा किया, तो आपके जीवन में मान कषाय कम होगी, एकांत में जीवन जीने की कला आयेगी। एकांत को जिसने सुंदर बना लिया, उसकी आत्मा सुन्दर अपने आप हो जायेगी।

तोता–तोता पक्षी सबको अच्छा लगता है। शिक्षा देने पर शब्दों को भी बोलता है। मनुष्य को जो भी अच्छा लगता है, वह उसे पकड़ना चाहता है। इसलिये लोग अपने घर में तोता को पिंजरे में बंद करके रखते हैं। तोता को काजू, किसमिस, बादाम खिलाते हैं। पिंजरा साफ रखते हैं। उसका ध्यान पूरा रखते हैं।

इतना प्रेम मिलने के बाद भी तोता सतत् इस प्रयास में रहता है कि कब मौका, मिले और कब पिंजरा छोड़ के उड़ जाऊं? खुले आकाश का आनंद लूं। तोता घर वालों के मोह में फंसता नहीं है। उड़ने के बाद घर वाले रोते हैं और वह प्रसन्न रहता है। तो तोते से शिक्षा ली–संसार में रहो, घर में मोह के पिंजरे में रहो। कर्तव्य भी करो पर भाव हमेशा यही रखो कि वो समय कब आयेगा, जब मोह कर बंधन को तोड़कर निर्मोही बन कर, आत्म धर्म के स्वच्छ आकाश में विचरण

करूंगा। कब संसार के तन के पिंजरे को छोड़कर आत्मा सिद्धालय में जायेगी। ऐसा विचार आपके मोह के बंधन को ढीला करेगा। मोह के कम होते ही संसार की चिंतायें अपने आप कम हो जायेंगी और कुछ न करने पर भी आप सुख के धनी बन जाओगे। घर वाले कितना प्रेम करें, अच्छा खिलायें, अच्छा पिलायें पर आप भावों से आत्म स्वतंत्रता की भावना रखें। घर वालों का अपमान न करें बल्कि सम्मान देते हुये अपने भावों को बढ़ायें।

बगुला–बगुला एक निकृष्ट प्राणी माना जाता है। पर गुण तो सोने के समान होता है। सोना यदि कीचड़ में गिर जाये, तो भी सोना कीचड़ से निकाल कर धो कर तिजोरी में रख लिया जाता है। इसे गुण तो किसी के पास हो तो छोड़ना नहीं चाहिये, ग्रहण कर लेना चाहिये। अतः बगुला तालाब में एक टांग से खड़ा होकर, स्थिर होकर ऐसी मुद्रा बनाता है, जैसे वह ध्यान कर रहा हो। मछली निर्भर रूप से विचरण करने लगती है, बगुले का ध्यान तो मछली का चल रहा था। मछली के आते ही वह उसे पकड़ लेता है।

आप भी अपने कार्य में एकाग्रता जरूर रखें। मन को चंचल न करें। जब णमो अरिहंताणं बोलें, तो ध्यान अरिहंत भगवान का करें।

मोर–मोर एक सबसे सुंदर पंखों वाला पक्षी है। सबको मन लुभाता है, सबको प्यारा लगता है। मोर जब पंख फैला कर नाचता है, लोग उसकी फोटो खीचे बिना रह नहीं सकते हैं। खड़े होकर उसे नाचता हुआ देखकर प्रसन्न अवश्य होते हैं। पर मोर हमें देखकर नहीं नाच रहा। मोर मेघों को देखकर प्रसन्न होता है और नाचता है। मोर का नाचना ये बता रहा है कि वह प्रसन्न अवस्था में है।

पर इंसान प्रसन्न होता है, उस समय नाचे न नाचे, पर नाचकर प्रसन्न जरूर होता है। इंसान नाचता है, तो सबको दिखाने के लिये नाचता है कि लोग मेरी तारीफ करेंगे। मोर नाचता है, पर तारीफ की अपेक्षा नहीं होती। इंसान जितने भी काम करता है, उसकी अपेक्षा होती है कि लोग मेरी करें। भोजन बनाना, सजना, संवरना, घर को सजाना, कोठी, बंगला बनाना, अच्छे कपड़े पहनना, कुछ भी करे वह हमेशा प्रशंसा की अपेक्षा रखता है। यदि मोर से शिक्षा लें कि नृत्य केवल भगवान की भक्ति में निःस्वार्थ भाव से करेंगे, तो आपका नृत्य भी पाप कर्म की निर्जरा का कारण बन जायेगा।

कौआ–कौआ पक्षी को भी लोग शुभ नहीं मानते। पर गुण तो कौआ से भी लिया जा सकता है। कहीं रोटी का टुकड़ा डाला जाये, तो कौआ अकेले नहीं खाता, वह टुकड़ा देखकर जोर से कांव-कांव करके सारे कौओं को बुलाता है और फिर

सब मिलकर खाते हैं। कौए का यह गुण मनुष्य को अवश्य लेना चाहिये कि, ''मिलकर रहिये और बांटकर खाइये।'' इसमें जीवन का अलग ही आनंद है।

हंस–संसार में हंस पक्षी सबसे शुभ माना जाता है। क्योंकि वह दाना खाता है मोती चुगता है। उसका दूसरा गुण है कि यदि दूध में पानी मिलाकर दिया जाये तो वह दूध-दूध पी लेता है और पानी-पानी छोड़ देता है। इसी तरह संसार में सब तरह की वस्तु और सब तरह के लोग हैं। हंस की तरह संसार से गुण ग्रहण करना चाहिये और अवगुण छोड़ देना चाहिये।

चिड़िया–चिड़िया तो अक्सर देखने में आती है। जब वह बच्चे को जन्म देती है, तो बहुत प्यार से उसका पालन पोषण करती है। छोटी चिड़िया की चोंच में दाना अपनी चोंच से डालकर उसे खिलाती है। धीरे-धीरे बच्चा बड़ा हो जाता है। उड़ने लगता है, तब वह उसे खुले आकाश में उड़ते देखकर खुश होती है। किन्तु वह अपने बच्चे को अपने घोंसले में रहने को विवश नहीं करती।

ऐसे ही गृहस्थी में रहें पर जब बच्चे अपने पैर पर खड़े हो जायें और आपसे जाने की आज्ञा माँगें, तो विवश न करें, उन्हें जीवन जीने दें और मोह को कम करके अपना ध्यान धरम में लगायें ताकि आपका अगला भव सुंदर बन सके।

गिद्ध–इस पक्षी का नाम लेते ही मन खराब सा हो जाता है। गिद्ध पक्षी आकाश में उड़ता है, पर नजर धरती पर होती है। ऊपर रहकर भी जमीन से जुड़ा रहता है। आप कितने भी धनवान बन जाओ पर अपने पुराने समय को नहीं भूलना चाहिये। पुराने समय को भूलते ही अभिमान अपना प्रभाव जमा लेता है।

इसी तरह पक्षी को देखकर हमें चिंतन अवश्य करना चाहिये कि हमें इससे कौन से गुण ग्रहण करना है।

पशुओं से गुण ग्रहण करें

कछुआ–भगवान मुनिसुव्रतनाथ का चिह्न कछुआ हमें ऐसी शिक्षा देता है कि हम संसार की आफतों से बचते हुए मोक्ष में पहुँच सकें। कछुआ की पीठ ऐसी विशेष बनी होती है कि उस पर कुछ असर नहीं करता। कछुआ को यदि ये महसूस होता है कि बाहर कुछ खतरा है, तो वह अपना सिर चारों पांव अपनी खोल के अंदर छुपा लेता है और सुरक्षित हो जाता है। खतरा दूर होने पर फिर सफर करता है।

ऐसे ही संसार में अनेक तरह की समस्याएं आती हैं। परेशानियाँ आती है। ऐसे समय में इंसान अपनी इंद्रियों को अंदर की तरफ यानी इंद्रिय सुख छोड़ कर आत्मस्थ हो जाये, मौन ले ले, तो अनेक विपत्तियों से बच सकते हैं। इंद्रियों को

वश में रखना कछुआ हमें सिखाता है।

श्वान (Dog)–किसी में कोई गुण है, किसी में कोई और गुण है। संपूर्ण गुणों का धारी कोई हो सकता है, तो वह मनुष्य है। मनुष्य इतना गुणवान बन सकता है कि भगवान बन जाये और मनुष्य जब निकृष्टता में नीचे उतरता है, तो सातवें नरक चला जाये। एक-एक गुण इकट्ठे करके अधिक गुणवान बन सकता है। जैसे एक-एक फूल को इकट्ठा करें तो गुलदस्ता बन जाता है।

इसी गुण से हम श्वान से गुण ग्रहण कर सकते हैं। श्वान को दो रोटी का टुकड़ा डाल दें, तो वह चौकीदार बन के चौबीस घंटे रक्षा करता है। मालिक नींद में बेखबर सोता है और श्वान जागकर पहरा देता है। ठीक इसी तरह हमें भी शिक्षा लेना चाहिये कि कोई हमारा थोड़ा भी उपकार करे, तो हमें उस पर उससे ज्यादा उपकार करना चाहिये। नींद में सावधान होकर सोना चाहिये।

गाय–गाय बहुत सीधी होती है। लोग इसे अपने घर में पालते हैं। लोग गाय को घास खिलाते हैं और बदले में गाय पौष्टिक, स्वास्थ्यवर्द्धक दूध देती है। गाय भी यही शिक्षा देती है कि कोई हमें थोड़ा दे। हमें उसे उससे ज्यादा देना चाहिये। मगर इंसान स्वार्थी प्राणी है। जब तक गाय दूध देती है, तब तक घास खिलाता है। जब दूध देना बंद कर देती है तो बूचड़खाने भेज देता है। जिस गाय ने अपने दूध से पालकर बड़ा किया, बुढ़ापे में उसकी सेवा करना इंसान का फर्ज है। घास ही तो खिलानी है। तरह-तरह के पकवान तो नहीं माँग रही। अतः इंसान को गाय से शिक्षा लेकर गाय की ही सेवा करनी चाहिये। गाय घास खाकर दूध देती है और इंसान दूध पीकर...

चींटी–चींटी जब दाना लेकर दीवार पर चढ़ती है, तब कई बार नीचे गिरती है, पर वह निराश नहीं होती और बार-बार प्रयास करती है और अपनी मंजिल पर पहुँच जाती है। मनुष्य भी शिक्षा ले कि यदि एक बार काम करने में सफलता न मिले, तो निराश न हो। बार-बार पुरुषार्थ करे। चींटी चलती है, तो लाइन से चलती है। जब कभी आपको लाइन में चलने का इशारा किया जाये, तो चींटी को याद करके लाइन से अनुशासन में चलना चाहिये।

संसार की हर वस्तु हमें शिक्षा देती है। जहाँ नजर डालते हैं, वहीं से शिक्षायें शुरू हो जाती हैं।

बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया पर कोरोना ने डुबायी पैसे की नैया

लोग कहते हैं, पैसे का युग आ गया। अब बिना पैसे के कोई पूछता नहीं है। इंसान से ज्यादा कीमत पैसे की हो गई है। पैसे का बोलबाला इस कदर बढ़ गया था कि कोई किसी को कुछ मानने को तैयार नहीं था। पर वर्तमान समय में आई महामारी ने इस बात को सिद्ध करके दिखा दिया कि पैसे से ज्यादा कीमती अपनी जान है। अक्सर लोगों के मुख से सुना कि पैसा तो बाद में कमा लेंगे, जान है तो जहान है।

यदि हम सुरक्षित रहेंगे तो पैसा आ जायेगा, जब हम ही न रहेंगे, तो पैसा किस काम का। अर्थात् अब पैसा बड़ा नहीं, मैं बड़ा हो गया। यही सोच कर अरबों लोग अपने घर का दरवाजा बंद करके घर के अंदर शांति से बैठे रहे। बाहर तो केवल प्रशासन और चिकित्सक ही थे। बाकी तो सब घर में बंद थे। दुकान की याद तो कुछ दिनों बहुत आई होगी, पर धीरे-धीरे आदत पड़ गई होगी।

कुछ लोगों को वैराग्य भी बहुत आया कि जीवन कितना अशरण है, अनित्य है, कभी भी किसी तरह क्षय हो सकता है। पश्चिमी देशों में बीमारी का उग्र रूप रहा, जिसमें लाखों लोग मृत्यु को प्राप्त हुये हम लोग सुन-सुन कर ही घबरा रहे थे। जबकि विषय घबराने का नहीं चिंतन का है।

कब कैसी घड़ी आ जाये पता नहीं। किसने सोचा था कि सारी दुनिया एक साथ घर के अंदर कभी बैठेगी। अपने आपको होशियार समझने वाला मनुष्य असहाय हो जायेगा कि घर के अंदर बैठना पड़ेगा, किसे पता था। कोरोना के सूक्ष्म अणु इतना असरदार हो सकता है कि इंसान की शक्तियाँ छोटी पड़ जायें।

जिसके आगे अणुबम भी निष्फल हो जाये, उसका नाम है कोरोना। समय-समय पर प्रकृति के प्रकोप नजर आते रहते हैं। जो हमें सावधान करते रहे है कि पाप करने से बचो, वरना धरती पर तुम्हारे बनाये अणुबम भी काम नहीं आयेंगे। ये

परिस्थितियाँ इंसान को अंतर्मुखी बनाने में विशेष कारण है।

साधु संतों ने बहुतों को धर्मात्मा बताया, पर कोरोना ने भी करोड़ों को धर्मात्मा बना दिया। वैसे लोगों के पास धरम न करने का बहाना होता था, दुकान जाता हूँ, रात को दुकान से आने में भी लेट हो जाते हैं, वगैरह-वगैरह। किन्तु कोरोना ने इतना समय दिया कि भगवान की याद दोनों टाइम आ जाती थी। कभी न थमने वाली दुनिया कुछ महीने के लिये ठहर गई, ये भी उपलब्धि है। कोरोना के कारण क्या खोया, क्या पाया जरूर लिखें।

घर में भैया का
नदी में नैया का
इंसान के लिये रूपैया का
बड़ा ही महत्व है

नारी में सति का
सुधरने में मति का
धरती पर प्रकृति का
बड़ा ही महत्व है

दावत में दोना का
हार में सोना का
नहीं होने में कोरोना का
बड़ा ही महत्व है

कार्य के प्रावधान का
गाँव के प्रधान का
होने में सावधान का
बड़ा ही महत्व है

जीव के भाग्य का
धर्म के सौभाग्य का
जीवन में वैराग्य का
बड़ा ही महत्व है

सुबह-2 नहाने का
अच्छा-2 कहाने का
कोरोना में भगवान याद आने का
बड़ा ही महत्व है

स्वर्ग में अमर का
ढुराने में चमर का
कोरोना में भक्तामर का
बड़ा ही महत्व है

जंगल में सियार का
भारत में विहार का
मनुष्यों में होशियार का
बड़ा ही महत्व है

भगवान के माता पिता कैसे हों?

शेरनी का दूध स्वर्ण में ठहरता है, मोती, सीप के अंदर पैदा होता है, ऐसे ही सामान्य स्त्री के गर्भ से भगवान का जन्म नहीं हो सकता। अतुल्य बल, अपूर्व सौंदर्य, वज्र वृषभनाराच संहनन, समचतुरस्र संस्थान, परम वीतरागता को पाने की योग्यता रखने वाले, अनंत शक्ति, अनंत सुख, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन की प्राप्ति करने वाले, सारे संसार को सुखी करने वाले की भावना रखने वाले, पशु, पक्षी, पेड़, पौधे से भी प्रेम करने वाले, परम ध्यानी, परम ज्ञानी भगवान जैसे पुत्र को जो माता-पिता जन्म देंगे, वे सामान्य प्राणी नहीं हो सकते। वे सामान्य गर्भ में नहीं रहते हैं। VVIP की व्यवस्था भी VVIP होती है। यहाँ पर तो मनुष्य करते हैं, लेकिन प्रभु की सेवा देवता स्वयं आकर करते हैं।

भगवान जिस गर्भ में आयेंगे, उसकी शुद्धि करने अष्टकुमारी देवियां आती हैं। तन की शुद्धि, मन की शुद्धि करती है। उत्तम माता को और उत्तम बनाती है, तब पुरुषोत्तम गर्भ में आते हैं। सुंदर पुत्र को जन्म देने वाली माता भी सुंदर होती है। शक्तिशाली पुत्र को जन्म देने वाले माता-पिता भी शक्तिशाली होते हैं। ज्ञानवान पुत्र को जन्म देने वाले माता-पिता भी ज्ञानवान होते हैं। मोक्ष जाने वाले पुत्र को जन्म देने वाले माता-पिता भी निकट भव्य होते हैं। सारे संसार से प्रेम करने वाले पुत्र को जन्म देने वाले माता-पिता भी परम वात्सल्य के धारक होते हैं। क्षायिक सम्यक्‌दृष्टि जैसे पुत्र को जन्म देने वाले माता पिता भी सम्यक्‌दृष्टि होते हैं। इससे भी ज्यादा गुण चाहिये भगवान के माता-पिता बनने के लिये। परम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें माता पिता बनने का सौभाग्य मिलता है। कई जन्मों की तपस्या होती है, कई जन्मों का संयम होता है, कई जन्मों तक प्रभु पुत्र बनने की भावना निभानी पड़ती है। तब कहीं जाकर भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

एक बाल का अंतर मिटाने...

स्वर्गों में सोलह स्वर्ग से ऊपर 9 ग्रेवेयक हैं, फिर 9 अनुदिश के विमान हैं फिर 5 अनुत्तर के विमान हैं और सबसे ऊपर सर्वार्थसिद्धि का विमान है। सर्वार्थसिद्धि से ऊपर सिद्धशिला है। सिद्ध-शिला और सर्वार्थसिद्धि से मात्र एक बाल का अंतर है। इतना अंतर मिटाकर सर्वार्थसिद्धि के देव सिद्धशिला में नहीं जा सकते। स्वर्ग से सीधे मोक्ष जाने का रास्ता नहीं है। चाहे एक बाल का अंतर ही क्यों न हो। इस एक बाल का अंतर मिटाने के लिये, उस आत्मा को धरती पर आना पड़ता है। नव माह माता के गर्भ में रहना पड़ता है। जन्म लेकर बड़े होकर दीक्षा लेनी होगी, कर्म का नाश करना होगा। तभी मोक्ष की प्राप्ति होती है। सर्वार्थसिद्धि जैसे विमान में जाने के बाद भी मनुष्य बनकर ही पुरुषार्थ करना पड़ता है।

जिह्वा और जीवन का अंतर

मनुष्य को धार्मिक ज्ञान बहुत है, वह जानता है कि शरीर अलग है, आत्मा अलग है। जानना मात्र द्रव्य श्रुत ज्ञान है। अभी वह आत्मा में नहीं है। अभी वह ज्ञान जीवन में नहीं, ज्ञान जिह्वा पर तो है, पर आत्मा की गहराई में नहीं पहुँचा। बारह भावना की यह लाइन–

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार।

अर्थात् राजा राणा छत्रपति, हाथी पर बैठने पर बैठने वाला, घोड़े पर बैठने वाला सबकी मृत्यु अवश्य है। यह बच्चे-बच्चे को याद है। यह लाइन जिह्वा पर तो है, पर जीवन में नहीं होने के कारण अपनी या अपनों की मृत्यु का अत्यंत शोक मनाते हैं और कभी-कभी तो सारी जिन्दगी शोक में निकल जाती है। श्रुत के क्षयोपशम से हमने ज्ञान तो प्राप्त कर लिया, पर मोह ने उसे आत्मा में नहीं जाने दिया। मोह कहता है शरीर मेरा, परिवार धन मेरे हैं, मैं कैसे मर सकता हूँ और परिवार मरे

तो कैसे मरे, ये मेरे थे, ये साथ छोड़कर क्यों गये?

शरीर और आत्मा दूध पानी की तरह मिलकर रह रही है। आत्मा और शरीर में कोई दूरी नहीं है। इतने पास होने के बावजूद भी ज्ञान आत्मा में क्यों नहीं जा रहा है। जीभ पढ़ती है, कोई मेरा नहीं, शरीर मेरा नहीं, धन मेरा नहीं पर यह बात आत्मा में पहुँचाने के लिये साधना करनी पड़ेगी और इसी साधना का नाम है धर्म।

धर्म ही सच्चा साथी है, जैसे दीपक बाती है।
अब ले लो धर्म शरण, ओ आत्माँ

मोह से मोहित बुद्धि का भ्रम धर्म के द्वारा ही टूटता है। इस भ्रम को तोड़ने में पुरुषार्थ की आवश्यकता है। तभी हम धर्म की सीढ़ी चढ़ सकते हैं।

सतियो में सीता का
कृष्ण की गीता का
भगवान के माता पिता का
बड़ा ही महत्व है

दिये में बाती का
मनुष्यों में खाती का
जीवन में अच्छे साथी का
बड़ा ही महत्व है

समाचार में पत्र का
पूजा में अत्र-अत्र का
पाने में ज्ञानवान पुत्र का
बड़ा ही महत्व है

कर्मों के फूटने का
मॉलिस में सूटने का
भ्रम के टूटने का
बड़ा ही महत्व है

राजाओं में किला का
शहरों में जिला का
प्राप्त करने में सिद्धशिला का
बड़ा ही महत्व है

सब्जी में धना का
गर्मी में पना का
जीवन में साधना का
बड़ा ही महत्व है

जीवन में उपलब्धि का
प्राप्त करने पंचलब्धि का
जाने में सर्वार्थ सिद्धि का
बड़ा ही महत्व है

परिवार की सरकार

परिवार भी एक संस्था है। जिसमें पिता प्रधानमंत्री, दादा जी राष्ट्रपति, मम्मी गृहमंत्री और बच्चे सदस्य हैं। चाचा, ताऊ जिस कार्य में नियुक्त हैं, वे उसी पद पर नियुक्त किये जाते हैं। समय के साथ बिना चुनाव के पद खाली करा लिये जाते हैं और पद पर आसीन हो जाती है। सभी अपने-अपने पद के अनुसार कार्य करते रहते हैं।

परिवार में समय-समय पर सदस्यों की संख्या घटती और बढ़ती रहती है। नये बच्चे का जन्म होने पर बड़ी खुशी के साथ उसका स्वागत करते हैं और जाने वाले की विदाई भीगी पलकों से करते हैं। जब तक सदस्य घर में रहते हैं, अपनी बौद्धिक क्षमता और कर्म के अनुसार सुख-दुःख का वेदन करते हैं।

जीवन सुरक्षा परिवार में रहती है। परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे के उत्थान के लिये, उन्नति के लिये चिन्ता करते हैं और उन्हें आगे बढ़ाकर प्रसन्न होते हैं। आगे बढ़ने वाले सदस्य पर वे गर्व भी करते हैं। दूर रहकर उन्हें याद करके प्रसन्न होते हैं। उनके नाम को लेकर अपने आपको बड़ा मानते हैं। परिवार में रहने वाला सदस्यों की आत्मीयता और मोह इतना जुड़ा होता है कि बिना सोचे अपनों के लिये बड़े से बड़ा त्याग कर देते हैं।

माता पिता इस परिवार के मूल जड़ और स्तंभ होते हैं, जिसके आधार पर पूरा वृक्ष फल, फूल, डाली और वृक्ष का हरा-भरा पन टिका रहता है। पूरे परिवार की सुरक्षा और पालन-पोषण बिना वेतन पूर्ण जिम्मेदारी के साथ करते हैं। माँ अपना धरम, करम, अपनी हर वस्तु का स्वाद छोड़कर बच्चे में सारी ममता उड़ेल देती है कि बच्चे को कोई कष्ट न हो। पिता सर्दी, गर्मी, बरसात की चिन्ता किये बिना अपने बच्चों के सुख के लिये जी तोड़ मेहनत करते हैं। चाचा-ताऊ, मामा, मौसी, नाना-नानी आदि और उनके बच्चे जब इकट्ठे होते हैं, तो त्यौहार सा हो जाता है। इस तरह परिवार संस्था सुखी जीवन का बहुत बड़ा माध्यम है, आधार है।

परिवार में दिये गये प्रेम और प्यार के बदले में यदि प्रेम दिया जाने लगे, तो

आज परिवार में होने वाली लड़ाईयाँ, मन-मुटाव, क्लेश खत्म हो जाये। एक-दूसरे के प्रेम की कीमत न समझ कर, एक दूसरे पर हावी होने का प्रयास करते हैं, समर्पण और कर्तव्य की जगह केवल अधिकार की बात करते हैं। प्रेम संबंध टूट कर बिखर जाते हैं। संबंध दोनों का टूटता है और टेंशन में दोनों परिवार वाले और अन्य सैकड़ों लोग आ जाते हैं।

जो धार्मिक होते हैं, धर्म के लिये समर्पित होते हैं, वे विनयशील होते हैं। उनके संस्कारों में झुकना और समर्पण होता है। ऐसे लोग परिवार के प्रति भी विनयशील होकर रहते हैं। सहनशील होते हैं।

मुख में लार का
नहीं होने में बीमार का
मनुष्यों में परिवार का
बड़ा ही महत्व है

शहरों में पानीपत का
दही में मथ का
प्रेम की कीमत का
बड़ा ही महत्व है

तार खींचने में जंत्री का
राजा के संतरी का
देश में प्रधानमंत्री का
बड़ा महत्व है

दीवार में कील का
कपड़ों में नील का
होने में विनयशील का
बड़ा ही महत्व है

तीर्थंकरों में सन्मति का
होने में अच्छी गति का
दादा राष्ट्रपति का
बड़ा ही महत्व है

पहाड़ों में झील का
चलने में मील का
होने में सहनशील का
बड़ा ही महत्व है

महावीर जन्म कल्याणक विशेषांक

ऐसी शोभा यात्रा आज तक कहीं और कभी नहीं निकली

चैत का महीना/शुक्ल पक्ष/तेरस तिथि/ दिन मंगलवार/महावीर जंयती के दिन/मुनिसुव्रत नाथ भगवान भूगर्भ से निकले। जहाजपुर के मंदिर में जुलूस की तैयारियाँ हो रही हैं। प्रभु की शोभा यात्रा निकालने के लिये पालकी तैयार की जा रही थी। बैंड बाजे मंदिर के द्वार पर आकर खड़े हो गये। किन्तु किसी को क्या पता था कि आज शोभा यात्रा पालकी में निकलेगी या जे.सी.बी. में निकलेगी।

तैयारी करते हुये युवाओं में से एक की जेब में मोबाइल की घंटी बजी। सामान्यतया जैसे बातचीत करते हैं, वैसे ही करना प्रारंभ की। अचानक बात सुनते ही उस युवा के चेहरे पर अत्यधिक मुस्कान आ गई। सभी युवा उसके आसपास आ गये और प्रश्न करने लगे, क्या हुआ-क्या हुआ। उसने जो बताया कि पीछे मुहल्ले में जमीन में नींव की खुदाई में भगवान निकले हैं।

उस दिन किसको पता था कि अब जहाजपुर किन ऊँचाइयों पर जाने वाला है। उसकी यशकीर्ति में चार चांद लगने वाले हैं। युवाओं ने पालकी जहाँ की तहाँ छोड़ी और सभी बाइक उठाकर उस स्थान पर पहुँच गये, जहाँ भगवान निकल रहे थे। थोड़ी देर में चार फिट के गड्ढे में एक विशालकाय नीले रंग की प्रतिमा चमक रही थी। भक्त उसे निकाल नहीं पा रहे थे। तब जे.सी.बी. मंगवाई। रस्से में प्रभु को लपेटा और जे.सी.बी. ने प्रभु को उठाने का प्रयास किया। किन्तु जे.सी.बी. का पिछला हिस्सा ऊपर की ओर उठ गया। भगवान नहीं उठे। भगवान का वजन इतना हो गया कि मशीन सहन नहीं कर पाई। तब कुछ लोगों को जे.सी.बी. पर चढ़ाया तब भगवान गड्ढे से ऊपर आये।

प्रशासन ड्राइवर से कह रहा था कि जे.सी.बी. तहसील की तरफ आगे बढ़ाओ। ड्राइवर ने जे.सी.बी. को उस तरफ मोड़ना चाहा, तो जे.सी.बी. बंद हो गई। आगे भक्तों का मेला लग चुका था, भीड़ बढ़ती जा रही थी। भक्त कहें कि जे.सी.बी.

को मंदिर की ओर ले चलो। जे.सी.बी. चालू हो गई और आगे बढ़ने लगी। आगे-आगे बाजे बज रहे थे और पीछे-पीछे भक्तों का रेला चल रहा था। भगवान जे.सी.बी. में झूलते हुये जा रहे थे। ऐसी निकली महावीर जयंती पर भगवान की शोभा यात्रा। ऐसी प्रभु की शोभा यात्रा पहले कहीं नहीं निकली थी और कभी नहीं निकली थी। जय-जयकार से गगन गुंजायमान हो रहा था और सभी के चेहरे पर प्रसन्नता थी। ऐसी प्रसन्नता तो शायद करोड़ों खर्च करने पर भी नहीं मिलती है।

बढ़े चले प्रभु मंदिर की ओर। लाख प्रयास करने पर भी प्रशासन जहाँ ले जाना चाहता था, नहीं ले जा पाया और भगवान भक्तों के साथ मुस्कुराते हुये चले जा रहे थे। उस समय के दृश्य की कल्पना करके ही मन मुस्कुराने लगता है कि ऐसी शोभा यात्रा न कभी देखी थी, न सुनी थी और भविष्य में शायद ऐसा हो या ना हो।

भूगर्भ से निकलने के बाद तो प्रभु ने इतने अतिशय दिखाये कि सारे भक्त दौड़े चले आये। कभी प्रभु के नाभि से रोशनी निकली, कभी नाभि के नीचे स्पंदन हुआ। कभी भगवान हल्के हो जाते हैं, कभी भारी हो जाते। कभी भगवान का अभिषेक स्वतः होने लगता है और कभी भगवान की आँख से रोशनी निकली। ये अतिशय तो भगवान की प्रतिमा में हो रहा है, लेकिन भक्तों के साथ जो अतिशय हो रहे हैं, उनको बताना तो मुश्किल है। ऐसे प्रभु के लिये जहाजपुर में जहाज मंदिर का निर्माण हो गया है। जो कि हम भक्तों को संसार सागर से पार होने में सहायक है।

दिन मंगलवार पर अर्थात् अभी जो महावीर जयंती है, वो भी मंगलवार को है और जब भगवान निकले थे तब भी महावीर जयंती मंगलवार को थी। मनीष जी एवं सम्पूर्ण राजस्थान जैन सभा को मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद है कि ऐसी महावीर जयंती हमेशा मनाते रहें।

जहाजपुर वाले मुनिसुव्रतनाथ भगवान की जय!

देशों में अवंति का
माताओं में कुंती का
भगवान महावीर की जयंती का
बड़ा ही महत्व है

पंखा में झलने का
पूड़ी के तलने का
भगवान के भूगर्भ से निकलने का
बड़ा ही महत्व है

नाटक में अभिनय का
मनुष्यों में परिणय का
भगवान के अतिशय का
बड़ा ही महत्व है

गांव में राशन का
सुरक्षा में प्रशासन का
भगवान के दर्शन का
बड़ा ही महत्व है

पानी में समंदर का
मनुष्यों में धुरंधर का
भगवान के जहाज मंदिर का
बड़ा ही महत्व है

हिन्दी में मात्रा का
स्कूल में छात्रा का
जहाजपुर की यात्रा का
बड़ा ही महत्व है

जीवन में राज का
संगीत में साज का
मंदिरों में जहाज का
बड़ा ही महत्व है

परिवार का सुख, गृहस्थ के जीवन में

पहला सुख निरोगी काया
दूजा सुख घर में हो माया
तीजा सुख कुलवन्ती नारी
चौथा सुख पुत्र आज्ञाकारी
पांचवां सुख सदन हो घर का
छठा सुख न कर्जा हो पर का
सातवां सुख चले व्यापार
आठवां सुख सब का हो प्यार
नौवां सुख निराकुलता हो मन में
दसवां सुख न बैर विरोध स्वजन में
ग्यारहवां सुख मन लागे धरम में
बारहवां सुख न फंसे कुकर्म में
तेरहवां सुख हो साधु समागम
चौदहवां सुख मर्मज्ञ जिनागम
पंद्रहवां सुख जैन शीलव्रत धारी
सोलहवां सुख अरिहंत के पुजारी

ये सब पाय बने गृह त्यागी, धन्य नर व सब नारी। इस भाव को साधु संत कहवे, पर भव स्वर्ग मुक्ति पद पावे, नरभव सुंदर सुकुल जिनवाणी, बार-बार नहि पाये प्राणी।

अतिशयकारी भक्तामर

आटा, दाल, चावल, घी, तेल, मीठा, नमक, मसाला हर घर में होता है पर अच्छा भोजन कोई-कोई महिला बना पाती है। बाग में हर तरह के फूल होते हैं, पर अच्छा गुलदस्ता हर माली नहीं बना पाता। धागा सबके पास होता है पर धागों का सुंदर फूल कोई-कोई बना पाता है। शब्द तो सबके पास होते हैं पर भक्तामर जैसा स्तोत्र आचार्य मानतुंग स्वामी ही बना सकते हैं। स्तोत्रों का राजा है। जिसका हर शब्द 1000 साल बाद भी आज इतनी भक्ति से सारी दुनिया पढ़ रही है। जैन शब्द का पर्यायवाची बन गया है भक्तामर। श्वेतांबर दिगंबर दोनों आम्नाय में श्रद्धा से इसका पाठ किया जाता है।

यंत्र मंत्र तंत्र

बंदूक की गोली को सामने से फेंक कर मारोगे तो असर नहीं होगा। किन्तु उसे बंदूक में रखकर मारोगे तो प्राण पखेरु उड़ जायेंगे। अर्थात् असर सौ गुना हो जायेगा। ठीक इसी तरह दिन भर की बोलचाल में शब्दों का प्रयोग किया जाता है। पर वे शब्द हमारी एनर्जी नष्ट ही करते हैं, उससे ऊर्जा नहीं मिलती। लेकिन उन्हीं शब्दों से मंत्र बना दिया जाये तो उसका प्रभाव तन मन और धन पर पड़ने लगता है। तन को स्वस्थ करने लगता है, मन को शांत करने लगता है, धन सुख समृद्धि में वृद्धि करने लगता है। अक्षर वही है, शब्द वही हैं, पर शब्दों का संयोजन, भक्ति का प्रभाव, और देवता का आना, ये सब अंक रूप परिवर्तन किया जाये तो वह तंत्र बन जाता है और उसको यंत्र रूप में आचार्यों ने बना कर उसे और ज्यादा प्रभावशाली बना दिया हे। ऐसा करने से भक्तामर अब एक सुख देने वाली प्रयोगशाला बन गई। इसकी साधना और शक्ति को जानने वाला इससे अमृत निचोड़ सकता है।

भक्तामर का नामकरण

आचार्य मानतुंग स्वामी ने जिन परिस्थितियों में प्रभु की भक्ति की थी वह भक्तामर बन गया। आचार्य मानतुंग स्वामी भक्ति करते समय तल्लीन थे, वे केवल आदिनाथ की भक्ति कर रहे थे। उस समय शायद यह उन्होंने भी नहीं सोचा होगा कि इस भक्तामर को लोग इतना पढ़ेंगे। ऐसा लगता है कि स्तोत्र का नामकरण उन्होंने नहीं किया, स्तोत्र का पहला शब्द है भक्तामर, अतः लोग इसी शब्द को लेकर इसे पुकारने लगे और स्तोत्र का नामकरण हो गया। आचार्य मानतुंग स्वामी परम ज्ञानी थे, संस्कृत के व्याकरण के, छंद अलंकार के, आगम, सिद्धांत अध्यात्म के और जैन दर्शन के। ऐसे परमज्ञानी मुख से जो भी निकलता है वो या तो स्तोत्र बनता है या शास्त्र बन जाता है।

भक्तामर रचना स्थली

किसी अच्छे कार्य करने का अंतर में जुनून हो तो स्थान प्रभाव नहीं डाल सकता अर्थात् आचार्य मानतुंग स्वामी भक्तामर स्तोत्र कारागार में रचा था। जितने प्राचीन आचार्य हुये हैं उन्होंने भी ग्रंथों की रचना जंगल में की थी। जहां हर तरह के साधनों का अभाव था। सुविधा में रहने वाले दुविधा में रहते हैं। साधन सुविधा इंसान के मन को भटकाने वाले होते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण आचार्य मानतुंग स्वामी हैं।

भक्तामर की विषय वस्तु

स्तोत्र का प्रथम शब्द ही इस स्तोत्र का रहस्य खोल रहा है। 'भक्तामर' इसका संधि kfoPNsn d j sa ksHkDr +अमर = भक्तामर बनता है। इसका अर्थ भक्त देवता। आचार्य मानतुंग स्वामी ने देवों को भगवान का भक्त कहा है। भक्त नर नहीं कहा, भक्त अमर कहा है। अर्थात् देवता जितनी भगवान की भक्ति कर सकते हैं उतनी भक्ति मनुष्य नहीं कर सकता। देवता गर्भ कन्याणक मनाते हैं और रत्न वृष्टि करते हैं, देवता जन्म कल्याणक मनाते हैं। तप कल्याणक और ज्ञान कल्याणक, में समवशरण की रचना करते हैं, मोक्ष कल्याणक के बाद के संस्कार भी देवता करते हैं। अर्थात् तीर्थंकर भगवान के पंच कल्याणक देवता मनाते हैं। क्षीर सागर के जल से अभिषेक देव ही कर सकते हैं समवशरण की रचना करना मनुष्य की शक्ति से बाहर है। मनुष्य संयम तप और त्याग कर सकता हे मोक्ष जाने की सामर्थ्य रखता है, पर भक्ति की चरम सीमा नहीं। इसीलिए आचार्य मानतुंग स्वामी ने भक्तामर कहा भक्त नर नहीं।

भक्तामर स्तोत्र के प्रथम श्लोक में देवों के मुकुटों की किरणों के द्वारा नमस्कार की कल्पना की है। कुछ श्लोकों में अपनी अज्ञता एवं शक्ति को कम बताकर प्रभु को रिझाने की कोशिश की है। कहीं संसार में मगरमच्छों से भरा समुद्र स्वयं को असहाय बताकर आदि प्रभु का अवलंबन लिया है। कहीं भगवान को चांद सूरज से श्रेष्ठ बताया है। तो कहीं सूर्य कमल से उपमा देकर भक्ति की है। कहीं सुमेरु के समान अडिग आपको बताया है। कहीं आदि प्रभु की माता की स्तुति की है तो कहीं विशेष नमस्कार किया है। भक्ति करते-करते समवशरण में स्थित अष्ट प्रातिहार्य के संग प्रभु की स्तुति का है। और स्तोत्र के अंतिम चरण में सिंह हाथी, सर्प, युद्ध, समुद्र, बीमारी आदि अनिष्ट जो भी मनुष्य को कष्ट देते हैं, प्रभु भक्ति से उन्हें भी दूर होने की कामना की है। और अंत में भक्तामर स्तोत्र पढ़ने का फल मुक्ति जताया है। इस तरह 48 श्लोकों में आचार्य मानतुंग स्वामी ने गागर में सागर भर दिया है पढ़ते-पढ़ते आनंद की अनुभूति होती। बार-बार पढ़ने का मन करता है। स्तोत्र पढ़ते-पढ़ते आदिनाथ भगवान का स्मरण हर श्लोक में होता है।

भक्तामर के चमत्कार

वर्तमान के बुद्धिमान लोगों ने भक्तामर स्तोत्र पर खूब खोज की है। सैकड़ों पी-एच. डी. हो गई। हजारों रहस्यों का उद्घाटन हो चुका है आज भक्तामर का। उसके साथ उसका प्रेक्टीकल भी किया जा रहा है और उसके साथ ही उनके सफल रिजल्ट भी आ रहे हैं। एक-एक श्लोक एक-एक कार्य के लिये किया है। पूरा भक्तामर तो ऊर्जा से भरा पड़ा है।

सोनीपत के 500 साल पुराने मंदिर में हमारा प्रवास चल रहा था। सर्दी का मौसम था, सर्दी अत्यधिक थी। अतः श्रावकों ने एक लकड़ी की छोटी सी कुटिया बना दी। रात्रि जब सोते, तो खट-खट करने की आवाज आती। तब बड़े गांव में गुरु जी को समाचार भेजे तो, गुरु जी ने कहा वहां 1-2 घंटे भक्तामर का पाठ करो ठीक हो जायेगा। मैंने 3 दिन एक-एक घंटे का भक्तामर पाठ किया समस्या गायब हो गई।

एक और अनुभव जयपुर में श्रीमती आशा जज ने बताया कि पेट की किसी परेशानी का वे ऑपरेशन करा रही थी। वे आचार्य पुष्पदंत सागर जी के पास आशीर्वाद लेने पहुंचीं। आचार्य श्री ने कहा भक्तामर के 46वां श्लोक की माला करके पानी को फूंक मार के मंत्रित करें, उस पानी को पिये भक्तामर पाठ रोज पढ़ें। उन्होंने किया, बीमारी ठीक हो गई ऑपरेशन नहीं कराना पड़ा।

ऐसे ही एक नहीं हजारों चमत्कार हैं भक्तामर पाठ के, भक्तामर की महिमा अगम्य है, अपरम्पार है। भक्तामर स्तोत्र से अनेक प्रकार की शक्तियां जाग्रत होती हैं। वे शक्तियां हमारे तन और मन दोनों को ताकत देती है। बाहर की बाधायें भगाती हैं, अंदर की बीमारी ठीक करती है और स्वस्थ तन, स्वस्थ मन करती है। ये तो सांसारिक कार्य होते हैं। और जब आदि प्रभु को स्मरण करते हुये भक्ति से भक्तामर पढ़ा जाये तो, असंख्यात पापों का नाश होता है। पुण्य का प्रकाश होता है। जीवन सुखमय होता है। इसलिये भक्तामर का पाठ सच्ची श्रद्धा से, शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर पढ़ना चाहिए।

ऋद्धि मंत्र

भक्तामर स्तोत्र की प्रभावना वर्तमान समय चरम शिखर पर है। और उसका कारण है कि हर श्लोक के साथ 48 ऋद्धि मंत्रों को जोड़ दिया गया है। इससे सोने में सुहागा हो गया है। सामान्यतः भक्तामर के व्रत श्रावक पहले से ही करते थे। भक्तामर विधान भी है, भक्तामर के प्रति श्रद्धा तो पहले से है, पर अब रात्रि में दीप अर्चना से होने वाला भक्तामर ने लोगों के अंदर एक उत्साह पैदा कर दिया है, गीत संगीत के साथ लोग झूम उठते हैं, तथा बीच में होने वाले भजन उसमें और रंग जमा देते हैं।

स्वर्ग में अमर का
ढुराने में चमर का
पाठों में भक्तामर का
बड़ा ही महत्व है

शरीर में अंग का
नहीं करने में व्यंग का
भक्तामर रचने में मानतुंग का
बड़ा ही महत्व है

प्रभु चरणों में नमस्कार का
नहीं करने में तिरस्कार का
भक्तामर के चमत्कार का
बड़ा ही महत्व है

लिखने में तख्ती का
आत्मा में अनुरक्ति का
भक्तामर में प्रभु भक्ति का
बड़ा ही महत्व है।

णमोकार मंत्र में शक्ति क्यों होती है?

मंत्र के प्रति हर व्यक्ति की श्रद्धा होती है। कोई इच्छा पूर्ति के लिये मंत्र जाप करता है तो कोई संतान प्राप्ति का मंत्र जाप करता है। कोई संकट हरण का जाप करता है, तो कोई धन प्राप्ति के लिये मंत्र जाप करता है। कोई खेल में विजय प्राप्ति का जाप करता है तो कोई युद्ध में विजय के लिये करता हे। मंत्र पर श्रद्धा और उसकी ऊर्जा से परिचित जन उसके फल को प्राप्त कर लेते हैं। क्योंकि मंत्र का प्रभाव प्राप्त करने के लिये उसके नियमों का पालन आवश्यक है। संसार में अधिकांश लोग मंत्र को पढ़ते हैं पर मंत्र को जानते नहीं हैं।

अनेक तरह के मंत्रों का राजा एक मंत्र महामंत्र णमोकार भी है। इसे मंत्रों का राजा कहा जाता है। इस मंत्र से 84 लाख मंत्रों का निर्माण हुआ है। इस मंत्र के प्रभाव से सभी परिचित हें। इसे निःस्वार्थ निष्काम भाव से भावपूर्वक जपा जाये तो वह ऊर्जा से भर देता हे। बिना मांगे फल को देने वाला है। इच्छा किये बिना इच्छा की पूर्ति करने वाला है। बिना प्रयास किये संकट दूर करने वाला। शक्तिमान है, ऊर्जावान है, सुख और आत्मा को जाग्रत करने वाला है। अतः इस मंत्र का अध यन गहराई के साथ करना आवश्यक है।

मंत्र में शक्ति, मंत्र में होने वाले देवता के कारण होती है। देवता जितना शक्तिमान होता है मंत्र उतना शक्तिशाली होता है। उस मंत्र की आराधना, उपासना जितनी श्रद्धा से किया जाये, उसकी शक्तियां जपने वाले में आती हैं। मंत्र देवता ही मंत्र का प्राण होता है। अतिशय चमत्कार उसी की शक्ति के द्वारा होता है। महामंत्र णमोकार को अतिशयकारी, चमत्कारी कहा जाता है। उसका कारण भी मंत्र देवता है।

णमोकार मंत्र में पांच पद 35 अक्षर 58 मात्रायें हैं। प्रथम पद में अरिहंत भगवान ने कर्मों का नाश करके, चार अनंत चतुष्टय को प्राप्त कर लिया है। अनंत दर्शन,

अनंत ज्ञान, अनंत सुख और अनंत शक्ति को प्राप्त करके दर्शन ज्ञान दर्शन सुख के भंडार बन गये। दुख, कष्ट, बीमारी, संकट, परेशानी देने वाले कर्मों को जड़ से नष्ट कर दिया है। अब उनकी शक्ति, ज्ञान, सुख में कोई बाधा नहीं डाल सकता। हम जब णमो अरिहंताणं बोलकर उनका ध्यान करते हैं तो हमारे पाप कर्म भी नष्ट होते हैं। पाप के नष्ट होने पर बाधायें, दुख, पीड़ायें, सब नष्ट होने लगती हैं। लेकिन णमो अरिहंताणं बोलने में अरिहंत भगवान की शक्ति और गुणों का अध्ययन करना, ज्ञान होना आवश्यक है।

घर में फ्रीज, कूलर, ए.सी., पंखा, कम्प्यूटर, बल्व, ट्यूबलाइट लगा है, पर उसमें बिजली का कनेक्शन ना जोड़ा जाये तो, कमरे का अंधेरा दूर होने वाला नहीं है। घर की वस्तुयें सुख देने वाली नहीं हैं। व्यर्थ में कबाड़ ही बन जायेगी। इन वस्तुओं का प्रयोग, लाइट के करेंट के बिना नहीं होने वाला। हां इतनी वस्तुएं इकट्ठी करके रखीं कभी पर करेंट बिना वस्तुओं की उपयोगिता नहीं। भाव के बिना धर्म कार्य का पूर्ण फल नहीं है। अंदर के भावों से धर्म का आराधना करना चाहिये। बाहर की वस्तुयें अंदर के भावों को स्थिर करने में सहायक। ज्ञानपूर्वक की गई क्रिया, कर्म निर्जरा में कारण है।

णमोकार मंत्र से सीता का अग्नि का नीर से सुदर्शन के शूली सिंहासन, सोमा का नाग का हार बन गया। णमोकार मंत्र के प्रभाव से देवता खिंचकर आते है। क्योंकि मंत्र में शक्तिशाली, प्रकाशपुंज आत्माओं का ध्यान किया जाता है जब मन का तार अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय और साधु जैसी आत्माओं से जुड़ता है तो, उनकी शक्तियाँ हमारे अंदर आ जाती है। णमोकार मंत्र की शक्ति से अनंत पापों का नाश होता है।

भावों का तार ही उस शक्ति से हमारा कनेक्शन कराता है, कनेक्शन से हमारी आत्मा में उजाला होता है। पपित्र पावन उर्जावान आत्मा हमारे अंदर पवित्रता पावनता और ऊर्जा भर देती है। णमोकार मंत्र के शक्तिवान होने का कारण उनके अंदर शक्तिमान आत्माओं का होना है।

अध्यात्म की आवश्यकता

संसारी प्राणी संसार के कार्यों में खूब मेहनत करता है। और मेहनत करके समझता है मैंने सही किया। सुबह से रात तक स्वयं मेहनत करवाता भी है और करता भी है, मेहनत नहीं करने वालों को निकम्मा शब्द से संबोधित करता है। संसार में उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। जीवन भर केवल एक ही बात याद रहती है, करना है, करना है—काम करना है। कुछ नहीं करने वाले भगवान के दर्शन करके भी उनसे शिक्षा नहीं ले पाते।

क्रियात्मक होने पर कर्म बंध और निष्क्रिय होने पर कर्म मुक्त है। क्रिया दो तरह की पुण्य क्रिया और पाप क्रिया। इन दोनों से ऊपर उठकर क्रिया रहित होकर ध्यानस्थ होना अकर्म अवस्था है। इस अकर्म ध्यान की अवस्था को अध्यात्म कहा गया है। भगवान महावीर ने कहा इस अध्यात्म को जीवन में धारण करके कर्मो से रहित होकर भगवान बने। अध्यात्म की शक्ति से उन्होंने आत्मा को परमात्मा बना लिया।

जब मन इंद्रिय और बाहर के कार्यों से जुड़ता है तो संसार की वृद्धि होती है और जब मन चिंतन की गहराई में, आत्मा के ध्यान की गहराई में उतरता है तो संसार का नाश करता है। वर्तमान में लोगों ने व्यवहार धर्म को ही, क्रियात्मक धर्म को ही, पूर्ण धर्म मान लिया है, निश्चय धर्म को न तो जानने का प्रयास करता है, न जीवन में उतारने का प्रयास करता है। व्यवहार धर्म का आचरण निश्चय धर्म की प्राप्ति के लिये होता है। उसे भी धारण करना अत्यंत जरूरी है।

अध्यात्म का ज्ञान यानी स्वयं का ज्ञान, स्वयं का परिचय, स्वयं की जानकारी, स्वयं का ध्यान। जैसे घर से बाहर निकलने पर इंसान परेशान रहता है लेकिन घर में आकर चिंता रहित शांत हो जाता है। ठीक ऐसे ही संसार के सभी प्राणियों के दुख पीड़ा परेशानी का कारण, आत्मा से दूर होकर बाहर भ्रमण करना है। यदि जीव

वास्तव में सुख चाहता है तो भगवान महावीर के बताये अध्यात्मिकता के रास्ते पर चले तो सुखी हो जाएगा। जैसे अनंत सुखी भगवान महावीर हुये हैं, आप भी हो जायेंगे। अध्यात्मिक ग्रंथ को पढ़ना, प्रवचन सुनना और उस पर अमल करना और उसे अपने जीवन का अंग बनाना, यह भगवान महावीर की आज्ञा का पालन करना है। प्रभु आज्ञा का पालन करने वाला सम्यक् दृष्टि होता है।

अक्सर लोग कहते है हम गरीब है इसलिये धर्म नहीं कर पाते पर अध्यात्मिक धर्म में बाहर की किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। वर्तमान समय में लोगों ने दान को ही धर्म माना है त्याग को नहीं। यदि दान ही वास्तविक धर्म होता, दान से मोक्ष मिलता तो, धर्म करना सरल हो जाता। तीर्थंकरों ने दान नहीं त्याग किया था, थोड़ा नहीं सर्वस्व त्याग किया था। बाहर की समस्त वस्तुयें व्यवहार धर्म में सहायक है। अध्यात्म धर्म में नही।

आत्मा के ध्यान के लिये, आत्म आराधना के लिये न नये कपड़े चाहिये, न कोठी, बंगला चाहिये, न परिवार चाहिये, न हार मुकुट चाहिये। वहां तो केवल इन सबसे दूर भावों की विशुद्धि चाहिये। कषाय, पाप, राग द्वेष के भाव से रहित होकर आत्म गुणों का चिंतन चाहिये, आत्म भावना चाहिये। संसार की वस्तुयें तो राग द्वेष पैदा कर चित्र को चंचल करती है, किन्तु आत्मध्यान चित्त को शांत कर सुखी करता है। सुखी होने के लिये जीवन अध्यात्म आवश्यक है।

अध्यात्मिक जीवन ही सत्य पथ का राही बनायेगा, संसार का जीवन तो भ्रम का जीवन है, बिना अध्यात्म के ही भ्रम कभी नहीं टूटता, इसीलिये अध्यात्मिक बने और इस मनुष्य जीवन को सार्थक करें।

घड़ी में टिक-टिक का
गाड़ी में किक का
होने में अध्यात्मिक का
बड़ा ही महत्व है

धर्मों में क्षमा का
सतियों में मनोरमा का
हमारी अपनी आत्मा का
बड़ा ही महत्व है

जन्म दिन, जन्म जयंति, जन्म कल्याणक में अंतर

सामान्य से सभी जीवों का जन्म होता है चाहे वह पशु हो या नारकी देव हो या मनुष्य। पर जन्म विशेष नहीं हो पाता, इसलिये उसे केवल जन्मदिन ही कहा जाता है। करोड़ों अरबों जीव ऐसे हैं, जो जन्म लेते है, मर जाते हैं पर किसी को पता भी नहीं लग पाता। इसलिये जन्म दिन मनाना यह सार्थक प्रक्रिया नहीं है, क्योंकि उनका जन्म, मरण का कारण है। पुनः जन्म का।

जिन जीवों ने जन्म लेकर जन्म पर विजय पाने के लिये, सार्थक प्रयास प्रारंभ कर दिये हैं। सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र प्राप्त कर लिया है। जो साधना संयम के रास्ते पर चल कर मुक्ति पथ पर गमन करते हैं उन जीवों की जन्म जयंती मनाई जाती है।

किन्तु कुछ ऐसी महान आत्मा होती हैं जिन्होंने कई जन्मों से तपस्या करके जन्म पर विजय पाने चले थे। और जब उनका अंतिम जन्म होता है, वे इस धरती पर निर्वाण पाने आये हैं। लेकिन वे जीव स्वयं के साथ-साथ अन्य जीवों के सुख कल्याण की भावना को लेकर आगे बढ़ता है। ऐसे जीव जब इस धरती पर जन्म लेते हैं तो उनका जन्म कल्याणक मनाया जाता है। उनका जन्म स्वयं के और दूसरों के कल्याण के लिये होता है। उनका जन्म कल्याणक मनुष्य ही नहीं देवता भी मनाते हैं। तीनों लोकों में उनके जन्म की खुशियां मनाई जाती हैं। भगवान महावीर उन्हीं महान आत्माओं में से थे। जिन्होंने जन्म लेकर अपनी आत्मा को परमात्मा बनाया एवं अन्य अनेक आत्माओं को मार्ग दिखाया और आज तक हम उनका नाम लेकर, अपने पापों का नाश कर रहे हैं। इसे ही जन्म कल्याणक कहते हैं।

प्रवचन दवाई है

सीखने के लिये सुनता है इसका नाम है शिक्षा। पेट भरनी, भव तरनी शिक्षा, लौकिक और अलौकिक शिक्षा। बोलने की शिक्षा, आजकल कपड़े सिलने की शिक्षा, अब तो अनगिनत तरह के कोर्स चल पड़े हैं। M.B.A., B.A., M.A. स्नातक, स्नातकोत्तर भी होते है।

शिक्षा देने को तो सारा संसार ही शिक्षा दे रहा है। पशु पक्षी शिक्षा दे रहे हैं। पेड़ से टूटा एक पत्ता भी शिक्षा दे रहा है। आज मकर सक्रांति है। सूर्य दक्षियायन से उत्तरायण में आ रहा है।

15 दिन का एक पक्ष, दो पक्षों का एक माह, दो माह की एक ऋतु, तीन ऋतु का एक अयन, दो अयन का एक वर्ष 05 वर्ष का एक युग। जीवन में कितने युग बीत गये, इसमें क्या सीखा। क्या सिखाया। सांसारिक वस्तुएं भी अध्यात्म का ज्ञान देने में समर्थ। लेने वाला चाहिए। लेने वाले में भावना हो, तीव्रता हो, तो तभी काम होता है। गुनगुने में काम नहीं होता। जुनून चाहिये, लगन चाहिये, पत्थर तोड़ने वाला धीरे से चोट मारे तो नहीं टूटता। पूरी शक्ति लगा के उतनी चोट मारते हैं कि पत्थर को टूटना पड़ता। देखा होगा दोनों हाथ से हथौड़ा ऊपर उठा के शक्ति से नीचे पटकते हैं। ये कर्म तो पत्थर से भी ज्यादा मजबूत है।

उपदेश देने वाले से ज्यादा भावना लेने वाले में चाहिये। तीर्थंकर आदिनाथ ने कितना उपदेश दिया लेकिन पोता मरीचि निकल गया समवशरण से। साक्षात् तीर्थंकर जैसे महापुरुष उपदेश दे रहे हों और कर्म का क्षयोपयम न हो उपदेश नहीं सुन सकता।

रुड़की 2004 में दो महीने का प्रवास रहा। वहां प्रतिदिन प्रवचन होते थे। माइक का स्पीकर बाहर की तरफ लगे थे। आसपास में कुछ मुस्लिम परिवार रहते थे। एक दिन मुस्लिम व्यक्ति अलग दूरबीन जैसे घड़ी ले के आया, ये आपके लिये। और उसने बताया मैं आपके प्रवचन रोज सुनता हूं। सारा परिवार काम छोड़ के

बैठ जाता है। मेरी लड़की को गुस्सा बहुत आता है। मैंने उसे समझाया कि देखो माता जी प्रवचन में कितनी अच्छी बातें बता रही हैं, गुस्सा नहीं करना चाहिये। अर्थात् सुनने वाला उपदेशक के सामने नहीं है, जैन भी नहीं है, पर ग्रहण करने की क्षमता है तो अप्रत्यक्ष रहकर भी उपदेश का प्रभाव पड़ रहा है। कैराना में भी आते थे। जेल में कैदियों को जब प्रवचन दिये तो उनकी आंखों से आंसू बहते थे। सोनीपत की जेल में प्रवचन हुये, वहां के जेलर ने कहा कि कोई कुछ कहना चाहता हो तो बोलिये। उनमें से एक कैदी ने कहा कि ऐसे प्रवचन मुझे रोज सुनना है, एक बोला यदि मैं ऐसे प्रवचन रोज सुन रहा होता तो, मैं जेल में नहीं होता। वहां के कैदियों ने मांग की कि यहां पर एक मंदिर बनवा दो।

सुनने की क्षमता

अक्सर इंसान बात का जवाब तुरंत देते हैं। बात का जवाब सही है या नहीं इससे मतलब नहीं। जो जवाब दिया है उसका सामने वाले पर क्या प्रभाव पड़ेगा, उसकी कोई कल्पना नहीं। जो प्रश्न पूछा है, प्रश्न भी पूरा समझ आया या नहीं, इस बात से भी मतलब नहीं है। बस उत्तर देना है। प्रश्न कान से दिमाग में गया है तो उसे जरा सोचने दो, सोच कर उत्तर दोगे तो शायद, बिगड़ती हुई बात बन जाये। इसीलिये किसी की बात, धैर्यपूर्वक सुननी चाहिये। आजकल मोबाइल चलाते रहते हैं और सामने वाले से करते हैं, बोला क्या, बात सुनना, जवाब देना, और मोबाइल चलाना, तीनों काम साथ हो जाते हैं। ऐसे करने से तीनों में से एक काम में भी क्वालिटी नहीं आती। एकाग्रता से करोगे तो क्वालिटी आयेगी। काम में निखार आयेगा। क्षमता बढ़ेगी। वर्तमान में तो लोगों की, मोबाइल चलाने की क्षमता बढ़ रही है।

सुनने के साथ पचाने की क्षमता

जैसे भोजन करते हैं, पेट उसे पचाता है, जिससे उसका रस बनता है, शक्ति आती है। जिसकी पाचन शक्ति कमजोर हो उसे या तो दस्त लग जाते हैं या उल्टी हो जाती है। जिससे वह शक्ति नहीं बन पाती। इसी तरह इंसान कान से सुनता है, दिमाग में पचाता है। यदि पाचन शक्ति ठीक हो तो वह उससे शक्ति प्राप्त कर लेता है। वरना मुंह के माध्यम से उल्टी कर देता है। एक कान से सुन के दूसरे कान से निकाल देता है।

अर्थात् किसी ने कुछ कहा और चला दूसरे से कहने के लिए। जब तक एक की बात दूसरे को बता नहीं देगा, उसका मन नहीं लगता। चार जनों से कहने के

बाद वो अपूर्व शांति का अनुभव करता है। लेकिन जिसने बात कही थी, उसे पता चल जाने पर जब वह झगड़ा होता है परम अशांति का अनुभव भी करता है। बाद में पछताता भी है। किसी ने कहा भी है—

पत्नी कितनी प्यारी हो, उसे भेद बताना न चाहिये।
भाई कितना दुश्मन हो, उससे भेद छुपाना न चाहिये।
लड़की कितनी प्यारी हो, उसे घर-घर घुमाना न चाहिये।
बेटा कितना प्यारा हो, उसे सर पे चढ़ाना न चाहिये।

और भी किसी ने कहा है—

कहो उसी से, जो ना कहे किसी से।
मांगो उसी से, जो दे दे खुशी से॥

इंसान जब भावुक होता है तब वह जो बात नहीं कहने की होती है, उसे भी कह देता है। और बाद में पछताता है। जो बात यहां की वहां नहीं करता, सब उससे बात कर लेते हैं पर जो सुन कर यहां की वहां करता है सब उससे बोलने में डरते हैं। और बातें कर रहे होंगे तो, उसके आने पर चर्चा बंद कर देते हैं। किसी की बात सुनकर पचाने की शक्ति भी चाहिये। गंभीर व्यक्ति ही ऐसा कर सकता है।

उपदेश कौन सुनता है

जिसकी रुचि जहां होती है वह उससे संबंधित विषय को रुचिपूर्वक सुनता है। जो डॉक्टर बनना चाहता है, वह उससे संबंधित लेक्चर सुनता है। जो वकील, सी.ए. आदि-आदि कोई भी। ऐसे ही जिसे परमात्मा से प्रेम है, जिसे आत्मकल्याण की भावना है, इंद्रिय सुख से रहित, आत्मिक सुख की भावना है, अथवा जो सांसारिक सुख नहीं चाहते हैं उन्हें उपदेश, प्रवचन, प्रभु वाणी, गुरु वाणी सुनना अच्छा लगता है। वे ध्यानपूर्वक प्रवचन सुनते हैं। अथवा कोई-कोई जिज्ञासा वश भी सुन लेते हैं जैसे—देखो ये क्या कहते हैं सुने तो सही। लेकिन 100 काम छोड़ कर तो वही उपदेश सुनेगा जो जिन से या निज से प्रेम करता है।

शेर ने उपदेश सुना तो वह भगवान महावीर बन गया। हाथी ने उपदेश सुना तो वह भगवान पार्श्वनाथ गन गये। मैना ने उपदेश का पालन किया तो पति का कुष्ठ रोग दूर कर दिया। अर्थात् सिद्ध चक्र विधान किया ऐसे करोड़ो लोग आज भी होंगे, उपदेश सुनने से जिनके जीवन में सुधार आया हो। जैन नहीं अजैन भी होंगे। जिनने उपदेश के द्वारा जीवन परिवर्तन किया हो। एक चातुर्मास में, समाज ने एक वीडियोग्राफी कराने वीडियो ग्राफर बुलाया जो प्रतिदिन प्रवचन के

समय आता था। प्रवचन सुन-सुन कर उसने कई अपनी बुराइयां छोड़ दीं। भक्त बन गया, वहां से जितना पैसा कमाया था। उस पैसे से फोटो बनाकर बंटवा दीं, और प्रसन्न था ये उपदेश सुनने के कारण हुआ।

सेंट्रल जेल अंबाला में 1999 में प्रवचन हुये। प्रवचन सुनकर वहां जेलर बोला मैं समझता था कि अपराधी को केवल डंडे से ही सुधारा जा सकता है। पर आज प्रवचन सुनकर ऐसा लगा कि, ऐसे प्रवचन जीवन में निश्चित सुधार लाते हैं, जिसमें डंडे की जरूरत नहीं है।

उपदेश दवाई है

वर्तमान समय में बीमारियों के शिकंजे में अधिकांश लोग फंसे हैं। उसके मुख्य दो कारण गलत सोच, गलत खान-पान। इंसान के जीवन में सोचने और बोलने संयम नहीं है। इसलिये व्यर्थ अनर्गल बोलकर लड़ाई-झगड़े मोल लेता है और चिंता करता है। या किसी भी वस्तु के न मिलने पर चिंता में फंस जाता है। या जिसे नहीं चाहते उसके रहने के कारण चिंता करता है। अथवा दूसरों से अपेक्षा रखते हैं पूरी न होने के कारण चिंता करता है। जिससे बी.पी, शुगर, डिप्रेशन, हार्ट आदि की बीमारियां शुरू हो जाती हैं और जीवन जीने का उत्साह खत्म हो जाता है। निराशायें घेर लेती हैं। डिप्रेशन अधिक हो जाये तो आत्महत्या के भी विचार आने लगते हैं। इनका इलाज डॉक्टर नींद की दवाई देकर करता है।

लेकिन बीमारियों से ग्रसित व्यक्ति यदि प्रवचन सुनना प्रारंभ कर दे तो 75% बीमारी प्रवचन से ठीक हो जायेगी, क्योंकि प्रवचन में मिलने वाले संयम के, धर्म के, वैराग्य के विचार संसार से मोह कम करते हैं, जिससे टेंशन दूर होती है और मन प्रसन्न रहता है, बीमारियां भाग जाती हैं। प्रवचन में खान-पान की शुद्धि एवं खाने में संयम भी सिखाया जाता है। जिससे अनेक बीमारियां भी ठीक हो जाती हैं। अतः प्रवचन भी एक उत्तम औषधि है। जो शरीर के रोगों को तो ठीक करती है पर आत्मा में लगे क्रोध मान, माया, लोभ की बीमारी को भी ठीक करती है।

बोलने में वचन का
नाटक में मंचन का
सुनने में प्रवचन का
बड़ा ही महत्व है

भारत में प्रदेश का
बनने में विशेष का
भगवान के उपदेश का
बड़ा ही महत्व है

दीपक की लौ से शिक्षा

जब भी मंदिर जाते हैं चर्चा होती धर्म की, तो हर व्यक्ति अपने आपको अज्ञानी सिद्ध करने में लग जाता है। आज अज्ञानी शब्द पर ही चर्चा करते हैं कि अज्ञानी की परिभाषा क्या है। ज्ञानावरण कर्म ने हमारे ज्ञान को ढक रखा है, हम चाहते हुये भी संसार की वस्तुओं को नहीं जान पाते, नहीं जानना ये अज्ञान है। एकेन्द्रिय जीव का अज्ञान अधिक है, द्विइन्द्रिय ने इससे ज्यादा जान लिया, तीन इन्द्रिय की नाक आ गई तो संसार के सूंघने वाले पदार्थ जानने लगे। चार इंद्रिय की आंख आ गई तो संसार को देखने लगा, इतना अर्थात् देखने का ज्ञान हो गया। पांच इंद्रिय के कान आ गये तो संसार की आवाजें सुनने लगा। संज्ञी जीव को मन मिल गया तो, देखने सूंघने वाली वस्तुओं को समझने लगा। और यदि मनुष्य बन गया तो, इन सब वस्तुओं का स्पेशलिस्ट बन गया। कुछ सृजन करने लगा। संसार की वस्तुओं का उपयोग करना आ गया। सीधे घास-फूस नहीं खाता सब्जी बनाता है। अन्न उगाता है, फल उगाता है, मकान बनाता है, कपड़े बनाता है। आराम से सुख के साधन बना लेता है। ज्ञान का क्षयोपयम बढ़ते चला गया।

ज्ञान को बढ़ाने के लिये स्कूल कॉलेज में जाकर बढ़ा लिया। फिर भी लोग कहते हैं हम तो अज्ञानी हैं। ऐसा क्यों कहते हैं लोग, इस बात को किसी ने समझा नहीं। पूछा नहीं बताया नहीं। ज्ञानवरण कर्म से बाहर की वस्तुओं का ज्ञान हो गया। बाहर की वस्तु का ही क्यों, ज्ञानावरण के क्षयोपशम में शास्त्र भी जल्दी याद हो जाते हैं। स्तोत्र भी जल्दी याद हो जाते हैं, किसी भी बात की व्याख्या भी बड़ी ओजस्वी वाणी में की जा सकती है। पर अभी भी अज्ञानी की लाइन की लाइन में खड़ा है। इतना ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम होने के बाद भी गुणस्थान अभी पहला ही है। अभी मिथ्यात्व गुणस्थान में है। एकेन्द्रिय, दो इंद्रिय, तीन इंद्रिय, चार इंद्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, नियम से मिथ्या दृष्टि है। देव नारकी में कुछ सम्यक् दृष्टि भी मिल जायेंगे। मनुष्य में भी दोनों तरह के ज्ञान तो बहुत हैं पर बाहर की वस्तुओं

का ज्ञान है, शास्त्र ज्ञान भी है तो जानकारी रूप ज्ञान है श्रद्धा रूप ज्ञान नहीं है। जानकारी रूप ज्ञान, श्रद्धा रूप ज्ञान में जमीन आसमान का अंतर है।

ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जानकारी रूप ज्ञान आता है, मोहनीय के क्षयोपशम से आचरण रूप ज्ञान आता है। बाहर का ज्ञान कितना भी हो जाये वह हमारे अंतरंग की परिणति को नहीं बदलता, पर मोह के क्षयोपशम से हुआ ज्ञान हमारे भावों में विचारों में आमूलचूल परिवर्तन ला देता है। बाहर की वस्तु को कितनी भी गहराई से जान लेना उसका महत्व नहीं, अपनी आत्मा का भेद रूप ज्ञान थोड़ा सा भी हो जाये, आत्मा में दीपक जल जाता है, उजाला होता है। मुझे मेरा स्वरूप दिख गया, मुझे मेरा दर्शन हो गया।

बस यहीं से सच्चे ज्ञान की संज्ञा प्राप्त हो जाती है। यही से ज्ञानी शब्द का प्रयोग करने लगते हैं। यह सच्चा ज्ञान ही सच्चे सुख का कारण बनता है। ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के मिथ्यात्व मोह के क्षयोपशम की भी जरूरत है, वरना कोरा ज्ञान हमें मोक्ष नहीं दे सकता। बाहर कार्य में होशियार होने पर अपने आपको ज्ञानी मत मान लेना। वरना खतरा बढ़ जायेगा।

दीपक की लौ को हवा हिलाती है। जब तक हवा है तब तक लौ स्थिर नहीं हो सकती और उसका प्रकाश भी वस्तु का ठीक-ठीक ज्ञान नहीं करा सकता। लेकिन जैसे ही हवा मंद होगी या बंद होगी वैसे ही दीपक की लौ स्थिर हो जायेगी, और उसके प्रकाश में, सब वस्तुयें ठीक-ठीक स्पष्ट नजर आयेगी। ठीक ऐसे ही हमारे ज्ञान की लौ कितनी तेज हो, जब तक मोह की हवा इसे हिलाती रहेगी हमारे अंदर स्थिरता नहीं आयेगी, जब स्थिरता नहीं आयेगी तब तक हमारे अंदर आत्मा की तस्वीर नजर नहीं आयेगी। बाहर की वस्तुएं भी उतनी स्पष्ट नहीं दिखेंगी। अतः यदि मोह का प्रभाव कम करें तभी हम सच्चे ज्ञान को प्राप्त करके अज्ञान को कम कर सकते हैं।

गिनती में सौ का
बस स्टेंड में बसों का
दीपक के लौ का
बड़ा ही महत्व है

खोज करने में विज्ञान का
आत्मा को जानने में सुज्ञान का
दूर करने में अज्ञान का
बड़ा ही महत्व है

भारत में राजस्थान का
बागों में गुलस्तान का
जीव के गुणस्थान का
बड़ा ही महत्व है

खाने की दवाई, लगाने की दवाई

हम वस्तु से मोह करें, तब भी वह हमारी नहीं होगी, नहीं करेंगे, तब भी हमारी नहीं होगी। वस्तु वस्तु है, वस्तु केवल हमारे उपयोग के लिये है। दवाई बीमारी ठीक करने, भोजन पेट भरने, कपड़े पहनने के लिए हैं, मकान रहने के लिये है, मकान से मोह करोगे, मेरा मानोगे, तब भी रहने को मिलेगा, अपना नहीं मानोगे, तब भी मकान तुम्हें भगायेगा नहीं। दवाई खाने की, लगाने की, दो तरह की है, लगाने की दवाई का प्रयोग ऊपर से किया जाता है, और खाने वाली, मुख से अंदर डाली जाती है। धन और धरम दो चीज हैं। धन ऊपर से लगाने वाली दवाई है। इसे खायेंगे तो बीमार हो जायेंगे, अर्थात् इससे अंदर आत्मा में उतार कर मोह करेंगे तो इंसान परेशान रहेगा इसका उपयोग करो, भोग करो और भूल जाओ, याद मत रखो।

कल आपने क्या खाया था। किसी की शादी में गये थे तो क्या खाया। किसी से खाने के ऊपर लड़ाई हुई थी तो उसे दिमाग में रख लिया। भोजन केवल पेट में रखते हें दिमाग में नहीं रखते। यदि दिमाग में रखोगे तो पापबंध का कारण है। कपड़े, धन, गाड़ी, मोटर ये उपयोग करने को हैं, मोह करने को नहीं हैं।

धरम खाने की दवाई है। अर्थात् विचारों में, चिंतन में, मनन में, भावों में धरम होना चाहिये। मोह रहित परिणाम हो, विचारों में आत्मा और परमात्मा हो। विचारों में छह द्रव्य, सात तत्व हों, चिंतन में प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग हो। धर्म की क्रिया पहले हो, षट् आवश्यक का पालन हो। चाह राह धरम की हो, जब खाने की दवाई खायेंगे, कष्ट दुख परेशानी बीमारी भी तभी ठीक होगी।

आज संसार में बीमार ज्यादा इसलिये हैं कि खाने की दवाई लगाई जा रही है अर्थात् धरम को ऊपर-ऊपर से करते हैं, जानते हैं कि संसार में न कुछ साथ आया है, न साथ जायेगा, इस बात को ऊपर-ऊपर से जानते हैं, अंदर से नहीं। ध्यान में मन नहीं लगने का कारण भी यही है कि लगाने वाली दवाई खाई है, अंदर

के विचारों में चारों तरफ वही बिखरी पड़ी है। कहीं हाथ डालो वही निकल के आती है। धरम की दवाई ऊपर से लगाई है, जरा में झड़ जाती है। सूख कर गिर जाती है। जब भी एकांत में बैठकर देखते हैं तो वही अंदर वाली याद आती है, अर्थात् परिग्रह याद आता है। चेतन अचेतन परिग्रह ही हमारे चारों तरफ घूम रहा है।

वर्तमान में भौतिक वस्तुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। जो है उसका तो उपयोग कर ही रहे हैं। और जो नहीं है उनकी चाह में, परेशान होते रहते हैं, ये सारे काम करवाने वाला डायरेक्टर है, मोह, संसारी प्राणी इसके वश में, अपनी आत्म शक्ति को भूल गया है, और मोह के कहने पर अपना जीवन संचालित कर रहा है। जैसे मोहित जीव जी अपना भला बुरा नहीं जानता, ऐसे ही मोही प्राणी आत्मा का भला बुरा नहीं जानता। उसे तो मोह ही अपने अनुसार चलाता है। इसीलिये जीवन में आत्म जाग्रति आवश्यक है तभी मोह की मूर्च्छा टूटेगी। अर्थात् लगाने वाली दवाई को ऊपर से उपयोग करें, खाने वाली दवाई धरम को अंदर आत्मा से उपयोग करें।

बैठने में चटाई का
भोजन में खटाई का
आत्मा की दवाई का
बड़ा ही महत्व है

लोगों में जोड़ने का
कपड़ों को मोड़ने का
राग द्वेष छोड़ने का
बड़ा ही महत्व है

जीवन में संयोग का
बुराई के वियोग का
वस्तुओं के उपयोग का
बड़ा ही महत्व है

दर्पण जैसे बनना है

दर्पण एक वस्तु को झलकाने वाला पदार्थ है। जो भी दर्पण के सामने जाता है, निःस्वार्थ भाव से जैसा है वैसा वस्तु को झलका देता है। वस्तु या व्यक्ति प्रतिबिम्ब दर्पण में है वस्तु उसके अंदर नहीं गई। सामने से वस्तु के हटते ही प्रतिबिम्ब भी हट जाता है। यदि वस्तु दर्पण में प्रवेश करने लगे तो उसका गुण ही खत्म हो जायेगा। अन्य वस्तु के प्रतिबिम्ब को भी प्रवेश नहीं मिलेगा। अर्थात् दर्पण किसी वस्तु को प्रवेश नहीं देता, केवल उसके प्रतिबिम्ब को झलकाता है।

ठीक ऐसे ही हमारी आत्मा में दर्शन गुण दर्पण के जैसे हैं, संसार की वस्तु आंख के माध्यम से आत्मा में झलकती है। वस्तु का चित्र झलकता है वस्तु का प्रवेश हमारे अंदर नहीं है। जैसे ही सामने से वस्तु हट जाती है वैसे ही प्रतिबिम्ब भी हट जाता है। जैसे दर्पण कभी कुरुप व्यक्ति से द्वेष नहीं करता कि तुम सुंदर नहीं हो, सुंदर व्यक्ति से राग नहीं करता कि हाय तुम बहुत सुंदर हो। दर्पण का काम केवल झलकाने का है। ऐसे ही आंख का काम केवल झलकाने का। राग द्वेष मोह का मेमोरी कार्ड अंदर में है जो वस्तु को अच्छी बुरी और मेरी तेरी करता है। और यही राग द्वेष मोह सुख दुख का कारण है। दर्पण के सामने से वस्तु को हटा दें तो दर्पण निर्मल है कुछ नहीं है, पर राग द्वेषी के सामने से वस्तु हटने के बाद उसके चित्र उसके दिमाग में घूमते रहते हैं और सुख दुख का अनुभव करता रहता है।

यदि वस्तु का राग द्वेष न हो तो दर्पण जैसे स्वच्छ साफ बने रहेंगे। विचार करो यदि दर्पण में हर चित्र छप जाये तो क्या वह हमारे काम का रहेगा, कितना गंदा हो जायेगा, ठीक ऐसे राग द्वेष के कारण संसारी वस्तुयें हमारे अंदर इतनी इकट्ठी हो गई हैं कि इंसान उसी चक्र में घूमता रहता है और अच्छा बुरा करके सुखी दुखी होता रहता है। यदि वस्तु को पकड़ना छोड़ दे तो सारे दुख खत्म हो जायें। सुखी होने का मार्ग यही है।

भगवान का ज्ञान और दर्शन इतना ही स्वच्छ साफ हो गया है। सारा संसार उनके ज्ञान में झलकता तो है पर, दर्पण जैसे ही, वे किसी वस्तु से राग द्वेष नहीं करते। वस्तु देखना दुख का कारण नहीं, पर उसमें राग द्वेष दुख का कारण है। उनका आत्मा रूपी दर्पण इतना साफ हो गया कि उसमें तीनों लोक एक साथ झलकता, पर वे दुखी नहीं होते। हमारी आंखें जितना देखती हैं, हम उतने में ही कष्ट और दुख प्राप्त कर रहे हैं। यदि वास्तव में हम सुखी होना चाहते हैं तो, सर्वप्रथम उन चित्रों को ना देखें, जिन्हें देखने के बाद आपका मन कंट्रोल में न रहे, आपका मन परेशान हो जाये। दूसरा, जो चित्र या जो भी चीज आपके मन को पवित्र शुद्ध और शांत करे, उसे देखने में उसके चिन्तन मनन में ज्यादा से ज्यादा समय दें। धीरे-धीरे अभ्यास करें कि किसी वस्तु को देखें, पर वो वस्तु या व्यक्ति आपको प्रभावित न करे। न अच्छी लगे न बुरी लगे, आपके मन में उथल-पुथल न मचे। धीरे-धीरे यह साधना आपको दर्पण जैसे स्वच्छ साफ कर देगी। और हम अनंत सुखी हो जायेंगे।

चौपड़ में पासे का
मंदिर में दासे का
बनने में दर्पण जैसे का
बड़ा ही महत्व है।

मेवे में दाख का
अंगारों में राख का
दर्पण जैसी आंख का
बड़ा ही महत्व है।

मोहल्ले में वार्ड का
जनता में आधार कार्ड का
दिमाग में मेमोरी कार्ड का
बड़ा ही महत्व है।

मंदिर में स्तंभ का
फूलों में सुगंध का
बनने में प्रतिबिम्ब का
बड़ा ही महत्व है।

प्रभु समक्ष अर्पण का
गुरु समक्ष समर्पण का
देखन में दर्पण का
बड़ा ही महत्व है।

चांवल में चुनने का
बुनाई में बुनने का
दर्पण जैसे बनने का
बड़ा ही महत्व है।

सुख दुख पैदा कौन करता है

जिस संसार में हम रहते हैं उसी संसार में चार परमेष्ठी, अरिहंत आचार्य उपाध्याय साधु भी रहते हैं। यही संसार हमारे लिये दुख का कारण बन जाता है, यही संसार उनके लिये दुख का कारण नहीं है। जिस शरीर में हम रहते हैं उसी जैसे शरीर में परमेष्ठी रहते हैं। वही शरीर उनके लिये कर्म निर्जरा का कारण है। जैसा मन हमारे पास है वैसा ही मन साधुओं के पास भी है। हम मन से राग द्वेष, कषाय पाप करके अपने जीवन को दुखी कर लेते हैं। और परमेष्ठी इसी मन से वैराग्य भावना से, आत्मिक ध्यान और ज्ञान से अपने जीवन को सुखी कर लेते हैं। एक ही वस्तु किसी के लिये सुख का कारण है, किसी के लिये दुख का कारण है, अर्थात् वस्तु का सुख नहीं। हमारी सोच ही सुख दुख का कारण है।

जैसे शराब पिये व्यक्ति का खुद पर कंट्रोल नहीं होता, उसकी चाल वैसी होती है जिसमें शराब का नशा झलकता है। उसकी बोली उसके विचार अपने नहीं होते, ठीक ऐसे ही मोह से सहित मोही व्यक्ति की हर क्रिया हर सोच, उसकी चाल, उसके विचार मोह पर आधारित होते हैं। जिसने मोह छोड़ दिया है उसके विचार अपने आत्मा के निजी विचार हैं, वह स्वयं के कंट्रोल में है, और वह मोह रहित होकर बाहर की वस्तु से व्यक्ति प्रभावित न होकर वह, आत्मिक पुरुषार्थ को जाग्रत कर अपना जीवन आत्मा के स्तर पर जीता है। जिसका मोह उसके वश में नहीं है वह हर वस्तु में व्यक्ति में राग द्वेष करके सुख और दुख के माध्यम से पराधीन रहता है। जिसमें वास्तविक सुख लेश मात्र भी नहीं रहता है।

साता कर्म असाता कर्म संसार की सामग्री इकट्ठी कराता है, पर उसमें सुख दुख पैदा मोह कर्म करता है। जैसे असाता वेदनीय कर्म के उदय में भूख लगती है। उदाहरण तीन व्यक्ति हैं—एक व्यक्ति को भूख पेट में लग रही हे, पर आज उसका उपवास है। वह मंदिर में रहकर पूजा पाठ ध्यान में तल्लीन है। उसके भूख संबंधी दुख नहीं है, वरन भक्ति संबंधी सुख महसूस कर रहा है। भूख है, भोजन है, पर भोजन करने के भाव नहीं हैं।

दूसरा व्यक्ति जिसके पास भूख भी है भोजन भी है। भोजन उसके मन पसंद का मिल गया तो, मोह ने उसमें राग कराया, कहता है, वाह क्या भोजन है, मजा आ गया। आज तो खूब खाऊंगा। साता के उदय में सुख सामग्री मिली पर मोह ने पाप का बंध करा दिया। यदि भोजन मनपसंद नहीं मिला तो क्रोध आ गया, चिल्लाने लगा, तुम्हें पता नहीं कि मुझे ये पसंद नहीं, फिर भी ये बना के रख देती हो, नहीं खाना मुझे। असाता वेदनीय ने भूख लगाई, साता के उदय के भोजन सामग्री मिली, पर मोह ने, द्वेष कराके, पाप का बंध करा दिया। भोजन खराब बना है, तो ये नहीं कहेंगे कि मुझसे अच्छा भोजन नहीं बनता, मायाचारी करेंगे, वो आज गरम मसाला नहीं था या तेल कम था या कुछ भी कह के मायाचारी करके, पाप कमा लेते हैं।

यदि मोह रहित होकर भोजन करें तो असाता के उदय में शांत भाव से कर्म निर्जरा हो जायेगी, पूर्व बंध से छूट जायेंगे। भोजन से संबंधित सुख और दुख तभी होगा जब मोह होगा। बिना मोह के सुख और दुख हो ही नहीं सकता है। मोह रहित होकर तो शांति का सुख प्राप्त होता है।

संसार में अधिकांश लोग शादी करते हैं। शादी को सुख का कारण मानते हैं, इसलिये शादी करते हैं। शादी होती है तो बाद में पता चलता है ये सुख का कारण कम और दुख का कारण ज्यादा है। जब शादी होती है तब दुख के कारण को नजरअंदाज करते हैं। पर नजरअंदाज करने से वो चीज दूर नहीं हो जाती, उसे सहजता में स्वीकार कर लें तो दुख नहीं, वरना दुख का कारण बन जाती है। शादी के बाद सासु जी बहू के लिये सुख का कारण है या दुख का कारण है, ये हमारे विचारों पर निर्भर है, सास बहू पर नहीं। जब सकारात्मक सोच के साथ रहेंगे तो वही सास अच्छी लगेगी। जिन्हें अनुशासन में रहना पसंद है, जिन्हें अनुशासन के अच्छे फल का ज्ञान है, जो मर्यादा कर्तव्य और फर्ज को निभाना चाहते हैं और इसके फल को मानते हैं उन्हें सासु जी अच्छी लगेगी। उन्हें सासु की डांट भी मीठी लगेगी। सासु का रोकना-टोकना अच्छा लगेगा, और जो न अपने जीवन की कीमत जानते हैं न दूसरे के जीवन की कीमत जानते हैं, उन्हें तो सासु के साथ रहना जेल में रहने के समान लगेगा। इसमें करना कुछ नहीं है, केवल अपनी सोच ही बदलनी है। सोच के बदलने के साथ ही घर स्वर्ग और नरक बन जाता है।

स्वार्थी लोग केवल अपने सुख के विषय में सोचते हैं, पर धर्मात्मा, सेवा भावी, कर्तव्यनिष्ठ अपने सुख के विषय में कम और दूसरों के सुख के विषय में ज्यादा सोचता है। वह सोचने के साथ करने का प्रयास भी करता है। जिससे उसका और दूसरों का जीवन सुखी हो जाता है। सोच ही तो बदलनी है।

नजर को बदलिये, नजारे बदल जायेंगे।
सोच को बदलिये सितारे बदल जायेंगे॥
नाव बदलने की जरूरत नहीं है।
धारा को बदलिये किनारे बदल जायेंगे॥

साता के उदय में परिवार में रिश्ते और रिश्तेदार प्राप्त हुये हैं। जो कि सुख का कारण बन सकते हैं, पर अपनी गलत सोच की वजह से, छोटी-छोटी बातों की गांठ लगाकर, क्रोध कषाय ईर्ष्या आदि करके हम उन्हीं रिश्तों को दुख का कारण बना लेते हैं। चाहे पति-पत्नी का रिश्ता क्यों न हो। यदि निभाना नहीं आता है तो दुख का कारण ही है।

धर्म हमें विनयवान बनाता है। धर्म हमें मृदुभाषी बनाता है, धर्म हमें भाषा समिति सिखाता है, धर्म हमें आत्मा के भावों की कीमत सिखाता है, धर्म हमें सेवा करने की शिक्षा देता है, धर्म त्याग के माध्यम से मोह कम कराता है, धर्म हमारे अंदर इतने गुण भर देता है कि हमारा गृहस्थ जीवन सर्वश्रेष्ठ सुखी हो जाता है, क्रम से मोक्ष सुख भी प्राप्त करा देता है। जो धर्म से दूर होकर जिन्दगी जीते हैं उनका न ये जनम सुखी होता है, और न अगला जनम सुखी होता है। अतः कर्मों के प्रभाव को कम करने का उपाय धर्म ही है, अपने जीवन में धर्म ज्ञान प्राप्त करने का कार्य जरूर करें।

मनुष्यों में उदार का
हिन्दुओं में केदार का
मनुष्यों में रिश्तेदार का
बड़ा ही महत्व है

साधुओं में केशलोंच का
नेता में पहुँच का
जीवन में सकारात्मक सोच का
बड़ा ही महत्व है

धर्म के अभिलाषी का
स्वामी के विश्वासी का
होने में मृदुभाषी का
बड़ा ही महत्व है

वसु के पिता वासु का
खुशी के आंसु का
घर में सासु का
बड़ा ही महत्व है

ग्रहों में राहुका
सेठों में साहु का
घर में बहू का
बड़ा ही महत्व है

जिसका पेट खराब, उसका दिमाग खराब

e'khu dks e'khu ugha] esgur pkfg;s

शरीर ही एक मशीन है यहां किसी मशीन की आवश्यकता नहीं। मशीन को मशीन की जरूरत नहीं है। शरीर रूपी मशीन अपना स्वयं का काम करने में परफेक्ट है। उसे किसी दूसरी मशीन की आवश्यकता है ही नहीं। हर मशीन का उपयोग जितना करोगे, उतनी वह स्वस्थ और मजबूत होगी। संसार के पशु पक्षी किसी मशीन का उपयोग नहीं करते इसलिये उन्हें बीमारी भी अधिक नहीं होती। गरीबों के यहां भी मशीनें नहीं होती, और झोंपड़ी में रहते हैं वे भी स्वस्थ रहते हैं।

आज मनुष्य ने शरीर को आराम देने को अनेक तरह की मशीनें तैयार कर दी हैं। और लोग शौक से उन मशीनों का प्रयोग कर रहे हैं। गाड़ी, बाइक, द्विपहिया, चतु पहिया वाहन बनाये। ताकि पैरों को आराम मिल सके। इसका परिणाम ये हुआ कि लोगों के पैर कमजोर हो गये, घुटने खराब हो गये। पहले के समय में घुटने बदलने का कभी सुना भी नहीं था। अब जिसे देखो वो घुटने चेंज करवा रहा है। गाड़ी मिली तो पैर खराब हो गये। पहले लोग 5-10 किमी. भी पैदल ही जाते थे। मेला देखने जाना है तो दूर-दूर तक पैदल चल लेते थे।

चूल्हा खत्म हो गया, क्योंकि घर-घर में गैस आ गई। चूल्हा जलाने में लकड़ी जलाना पड़ती है धुआं होता है, बड़ी मेहनत का काम है। गैस में तो एक लाइटर से चटक किया अग्नि प्रगट हो गई। पर आपने चूल्हे के भोजन और गैस के भोजन में अंतर नहीं जाना होगा। चूल्हे की रोटी और गैस की रोटी के स्वाद में, बहुत अंतर है। आप खाकर स्वयं देखना फिर बताना। चूल्हे के भोजन से इतनी गैस नहीं बनती थी। अब जिसे देखो वो गैस से परेशान है। पेट पर ही ध्यान रहता है। जिसका पेट खराब उसका दिमाग खराब। प्राकृतिक चीज का प्रभाव ही अलग होता है। अग्नि देखने में सब एक सी होती है पर सबका असर अलग-अलग होता

है। घी के दीपक की अग्नि। मीठे तेल के दीपक की अग्नि। मिट्टी के तेल के दीपक की अग्नि। गैस की अग्नि, लकड़ी की अग्नि। इन सब के प्रभाव में अंतर है। भोजन गैस पर बनने से लोगों के स्वास्थ्य में भी अंतर पड़ा है। इसके धुएं में भी अंतर है।

मिक्सी आ गई मसाला, चटनी, दाल आदि पीसने को। लोग बड़े खुश हैं फटाफट काम हो जाता है। काम तो जल्दी हो गया उससे बचाया समय का सुदपयोग क्या किया? यदि नहीं तो फिर वो हाथ वाला सिस्टम ही सही था। खल-बट्टा (मामजस्ता) से मसाला कूटते थे। जिससे हाथ कंधा आदि की सारी नसों की एक्सरसाइज हो जाती थी। कंधे जाम नहीं होते थे। आज जिसे देखो उसका हाथ ऊपर नहीं उठता। दर्द इतना है कि रात को नींद भी नहीं आती है। मेहनत के काम दुख नहीं देते स्वस्थ रखते हैं। मिक्सी से पिसी चटनी और हाथ से पत्थर पर पिसी चटनी में भी अंतर होता है। मिक्सी ने काम करना सरल कर दिया है पर हाथों को कमजोर कर दिया है। अब जमाना इससे भी आगे है। लोग बाजार के मसाले प्रयोग करते हैं, जिसमें कई तरह की मिलावट होती है। कई नुकसानदायक पदार्थ डाले जाते हैं, जो स्वाद को तो बढ़ाते हैं, पर स्वास्थ्य को गिरा देते हैं।

गर्मी आते ही घर में मम्मी दादी कभी खींचला बनाती थी, कभी 'बड़ी' बनाती थी, कभी पापड़ बनाती थी, कभी गेहूं धोकर डालती थी, कभी अन्य, अन्य सामग्री तैयार करती थी। यानी गर्मी उनके लिये काम करने आती है, घर में एसी, कूलर भी नहीं थे। काम करते-करते गर्मी कब निकल जाती थी पता ही नहीं चलता था। चूल्हे पर बड़े-बड़े भगोने में खींच बनाना, उन्हें उतारना, चढ़ाना, छत पर ले जाना, डालना, सुखाना, बच्चों को साथ लेकर उनसे काम कराना। फिर धूप में बार-बार देखने जाना। 5-6 महीने के लिये पापड़ बनते थे, मोहल्ला इकट्ठा हो जाता था। हंसी खुशी पापड़ बेलते थे, रात में एक दूसरे के हाथ देखते थे, आज पापड़ बनाये हैं। पापड़ बनाने में हाथों की पूरी एक्युप्रेशर हो जाती थी। शरीर के सारे तत्व शुद्ध हो जाते थे। 2-5 बोरी गेहूं धोना उन्हें छत पर चढ़ाना। बार-बार हाथ फेरने जाना, उतार कर लाना। छानना, बीनना रखना। ये सब मेहनत का काम था। जिससे शरीर में बाहर की धूप लगने से विटामिन डी भी पूरा होता था। कई तरह के दर्द गायब हो जाते थे। दिमाग काम में लगे रहने से, व्यर्थ भटकता नहीं था। घर वालों को शुद्ध चीज खाने को मिल जाती थी। बारिश के चार महीने आराम से खाते थे।

आज गर्मी आते ही एसी और कूलर में छिप जाते हैं। कोई काम कह के, तो दिखाये, ऐसा जवाब मिलता है कि दोबारा कहना भूल जाओगे। और देवी जी कोई बात नहीं, मैं बड़ी, पापड़, अचार सब बाजार से ले आऊंगा तू आराम कर। इतना आराम करने वाली दुल्हन, दिन भर दवाई खाती है, कभी कुछ हो रहा है, कभी कुछ हो रहा है।

सर्दी-गर्मी होने पर शरीर उसकी सेटिंग वो स्वयं करता है शरीर में जो रोम छिद्र दिख रहे हैं ये रोम छिद्र देखने को नहीं बनाये। ये शरीर को स्वस्थ रखने को बनाये हैं। आपने देखा होगा कि जब सर्दी आती है तो शरीर मे मैल जमने लगता है, इसमें कारण है कि सर्दी में मैल के द्वारा रोम छिद्र बंद हो जाते हैं ताकि, बाहर की सर्दी अंदर न जा सके, आपको वो मैल लग रहा है, पर मिट्टी पर मिट्टी की परत जमना ये प्रकृति की व्यवस्था है, सर्दी से शरीर को बचाने के लिये। गर्मी आते ही वो जमी मिट्टी पसीने से धुलकर बह जाती है। अर्थात् जब बाहर की गर्मी शरीर को लगती है तो शरीर को ठंडा करने तुरंत पसीना आ जाता है, वो पसीना बाहर के टैम्प्रेचर को सहन करने की ताकत देता है, और शरीर को ठंडा रखता है। शरीर में, प्रकृति ने, एसी, कूलर, हीटर सब कुछ फिट करके भेजा है।

वर्तमान एसी, कूलर में रहने वालों का शरीर उनका आदी हो जाता है। उसके न मिलने पर वे परेशान हो जाते हैं। तीर्थ यात्रा में जाकर भी उनके भाव खराब हो जाते हैं। रिश्तेदार के यहां न एसी मिले, तो उनके यहां जाना छोड़ देते हैं। शरीर भी थोड़े दिन सहन करता है, उसके बाद उसमें कई तरह की अन्य बीमारी लग जाती हैं। महाराष्ट्र वाले कहते हैं कि पसीना निकलना चाहिये, पसीना निकलने के साथ कई बीमारियां निकल जाती हैं। इसीलिये शरीर से जितनी मेहनत हो, करना चाहिये। सर्दी और गर्मी से बचना नहीं है उसके साथ रहकर कार्य करना है।

एक मशीन ऐसी आई है कि आपको सीढ़ी न चढ़ना पड़े। अर्थात् उसका नाम है लिफ्ट। पहले तो केवल हॉस्पिटल में होती थी, पर अब घर-घर में लिफ्ट लग गई है। इंसान दूसरा वजन न उठाये तो कोई बात नहीं, पर, अपने शरीर का वजन उठाने को लिफ्ट आ गई तो, उसका शरीर तो कमजोर होगा ही। सेना में भर्ती होने के लिये जवान पहाड़ों पर दौड़ कर चढ़ते हैं, और थोड़ा नहीं, बहुत ऊंचे तक चढ़ते हैं। जिससे उनका हार्ट, फेफड़े, पैर, हाथ एवं शरीर के कई अवयव विशेष कार्य करते हें, और मजबूत होते हैं। कम से कम आप पहाड़ नहीं चढ़ रहे तो कोई बात नहीं, अपने घर की सीढ़ी तो चढ़ो, इससे भी शरीर की एक्सरसाइज होगी।

हमारे सारे तीर्थंकर पहाड़ों से मोक्ष गये हैं। उनके चरणों की वंदना करने जाना है तो उसकी आदत होना भी जरूरी है। जो घर की सीढ़ी नहीं चढ़ता वो पहाड़ की वंदना में तो जरा में टें बोल जायेगा। शिखर जी का पहाड़ तो 27 किमी. का आप दर्शन कैसे कर पाओगे। अपने आपको इतना मजबूत बनाओ कि आप कहीं भी जायें तो हारकर वापस न आना पड़े और बच्चों को भी यही शिक्षा दो।

इन सब चीजों को धरम के हिसाब से देखें तो भी भगवान महावीर ने यही उपदेश दिया है कम से कम गाड़ी का प्रयोग करें पैदल चलें, तो जीवों की रक्षा होगी। घर का भोजन, मसाला, बड़ी, पापड़, अचार हो तो, घर की शुद्ध वस्तु खाने में मिलेगी, और अशुद्ध वस्तु मिलावटी नकली वस्तु खाने से बचेंगे। जैसा खाओ अन्न वैसा होगा मन।

स्वस्थ तन में, स्वस्थ मन निवास करता है जो सुख का कारण है। जय महावीर।

धनुष में तीर का
सागर में क्षीर का
मनुष्य के शरीर का
बड़ा ही महत्व है।

बजाने में बीन का
कार्य में प्रवीन का
शरीर में लगी मशीन का
बड़ा ही महत्व है।

मनुष्य की सेहत का
करने में रहमत का
करने में मेहनत का
बड़ा ही महत्व है।

जयपुर में चौपड़ का
मध्य प्रदेश में गांकड़ का
घर में बनाने में बड़ी पापड़ का
बड़ा ही महत्व है।

अनाज के दाने का
सुबह-सुबह नहाने का
शुद्ध भोजन खाने का
बड़ा ही महत्व है।

स्कूल में कक्षा का
लेने में शिक्षा का
जीवों की रक्षा का
बड़ा ही महत्व है।

परम विदुषी लेखिका आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी द्वारा रचित कृतियां

श्री जिनपद पूजांजलि (विशेष कृति)

विधान संग्रह

1. श्री कल्पद्रुम विधान 2. श्री इन्द्रध्वज विधान 3. श्री सिद्धचक्र विधान 4. श्री सम्यक् विधान संग्रह 5. श्री मनुष्य लोक विधान 6. श्री श्रुत स्कन्ध विधान 7. श्री चौबीसी विधान 8. श्री नवग्रह शांति विधान 9. श्री कल्याण मंदिर विधान 10. श्री दश लक्षण विधान 11. श्री पंचमेरू विधान 12. श्री ऋषि मंडल विधान 13. श्री कर्म दहन विधान 14. श्री समवशरण विधान 15. श्री चौंसठ ऋद्धि विधान 16. श्री यॉग मंडल विधान 17. श्री पंच परमेष्ठी विधान 18. श्री पंच कल्याणक विधान 19. श्री वास्तु शुद्धि विधान 20. तीर्थंकर विधान संग्रह 21. श्री पंच बालयति विधान 22. श्री सम्मेद शिखर विधान 23. श्री सोनागिर विधान 24. श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार विधान 25. श्री आदिनाथ विधान 26. श्री पद्मप्रभु विधान 27. श्री चन्द्रप्रभ विधान 28. श्री वासुपूज्य विधान 29. श्री विमलनाथ विधान 30. श्री शान्तिनाथ विधान 31. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान 32. श्री नेमिनाथ विधान 33. श्री पार्श्वनाथ विधान 34. श्री महावीर विधान 35. श्री जम्बू स्वामी विधान 36. श्री भक्तामर स्तोत्र विधान, 37. श्री नन्दीशवरद्वीप लघु विधान, 38. श्री रत्नत्रय विधान, 39. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग -1, 40. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग-2, 41. श्री चरित्र शुद्धि विधान 42. श्री संभवनाथ विधान, 43. श्री सोलहकारण विधान, 44. श्री सुमतिनाथ विधान, 45. श्री अभिनंदन नाथ विधान, 46. श्री कुन्थुनाथ विधान, 47. श्री अजितनाथ विधान

काव्य संग्रह

1. मेरी कलम से 2. भजन संग्रह 3. भजन सरिता 4. अमृत की बूंदे 5. श्री सम्मेद शिखर चालीसा 6. बड़ा ही महत्व है 7. आरती ही सारथी 8. जिन ज्ञान किरण 9. भक्ति संग्रह 10. काव्य वाटिका (भाग-1, 2) 11. श्री भक्तामर जी पाठ (हिन्दी) 12. प्रभु भक्ति की पोटली (चालीसा संग्रह) 13. भक्ति पुंज 14. आत्मा की आवाज 15. विनयांजलि 16. श्री सहस नाथ स्तोत्र (हिन्दी रुपान्तरण) 17. पुण्य वर्धिनी 18. आचार्यो की प्रभु भक्ति (हिन्दी पद्यानुवाद) 19. भक्ति की संम्पदा (स्तोत्र संग्रह)

पूजन संग्रह

1. श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन 2. दीपावली पूजन 3. श्री आदिनाथ पूजन एवं चालीसा (रानीला) 4. श्री आदिनाथ पूजन अतिशय क्षेत्र (चाँदखेड़ी) 5. पद्म प्रभु पूजन (शाहपुर) 6. श्री चंन्द्रप्रभ जिन पूजन संग्रह (सोनागिर जी) 7. श्री चन्द्र प्रभु पूजा (अतिशय क्षेत्र, तिजारा जी) 8. श्री चंद्रप्रभ चौबीसी जिनालय पूजन (कैराना) 9. श्री वासुपूज्य जिन पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र चंपापुरजी) 10. शांतिनाथ पूजन (सूर्य नगर) 11. श्री नेमीनाथ पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र गिरनार जी) 12. श्री पार्श्वनाथ पूजन एवं चालीसा 13. पार्श्वनाथ पूजन (जलालाबाद) 14. श्री पार्श्वनाथ, हांसी अतिशय क्षेत्र 15. अतिशय क्षेत्र बड़ागांव पूजा 16. श्री महावीर जिन पूजन संग्रह 17. स्वस्ति जिन अर्चना (सिद्ध क्षेत्र पावापुरजी) 18. श्री गोम्टेश्वर बाहुबली स्वामी विनयांजलि 19. कुंदकुंद स्वामी पूजा संग्रह, बारा (राजस्थान) 20. गुरू अर्चना (आ. 108 सन्मतिसागर जी) 21. श्री शांतिनाथ पूजा संग्रह (झालरापाटन) 22. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन, भजन, चालीसा (जहाजपुर) 23. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन एवं चालीसा (किरठल)

गद्य संग्रह

1. दीक्षा कठिन परीक्षा 2. जैन त्यौहार कैसे मनायें ? 3. प्रतिक्रमण (किये अपराध जो हमने) 4. स्वस्ति आत्म बोध 5. राग से वैराग्य की ओर 6. मुक्ति सोपान (धार्मिक सांप सीढ़ी) 7. श्री ऋषभदेव अनुशीलन 8. नानी की कहानी (भाग-1,2,3) 9. प्रभावना प्रवाह (भाग-1, 2) 10. आओ दीपावली पूजन करें 11. दीपावली कैसे मनायें। 12. टर्निंग पॉइण्ट (प्रवचन संग्रह) 13. वीतरागी का आकर्षण 14. ऊँ नम: सबको क्षमा 15. आहार को समझे औषधि 16. स्मार्ट कौन? 17. आप V.I.P. है